

श्री श्रुतज्ञानअमीधारा सीरीभू । न ० ।
विश्वहित प्रोभिणायक श्री अर्माविनय गुम्भ्या नम ।



पडित उद्योतसागरजी म्त्
समाकित्तमूल
बारह व्रत की टीप.

म्पाठक

पन्यासजी माहाराज श्री श्री १००८ श्री
क्षमा विजयजीगणी



प्रकाशक

शा स्तनचद वरदीचदजी ने अपने
धी जैन स्तन प्रिन्टिंग प्रेम में छापके प्रसिद्ध किया है ।

सीर स २४६१

विक्रम म १६६०

मुल्य १।) सना रुपैया

संपादक का निवेदन

लगभग दश वर्ष पूर्व श्री उद्योत मागरजी ऋत ममन्तित मूल चारह व्रत की टीप का गुजराती भाषांतर शा भीमसी माणेरु का छपवाया हुआ वाचन मे आया, उसी दिन मे अगर मूल ग्रथ हिन्दी भाषा मे मिल सके तो मारवाडी श्रावकादिकके उप कार्ग्य प्रकाशित करवाने की इच्छा थी, इतने मे गए माल सन्त १९६१ के पोष महीने मे कोटके श्री राघु जी विनयी मे उहा के उपाश्रय मे उतरने का मयोग बना, वहा जो लिखित पुस्तकोका भंडार है उममे मे दो ग्रथ रत्नो की अकस्मात् प्राप्ति हुई, एक महा महोपन्याय श्री विनय विनयनी कृत श्री शातसुधारसकी शुद्ध प्रति की कि जो ग्रथ श्री श्रुत ज्ञान अमीधारा रूप मग्रह के प्रारभ मे छपवाया गया है । और दूसरा यही ग्रथ रत्न कि जो जैन रत्न प्रिंटींग प्रेम की तरफ मे प्रकाशित होता है, आशा है कि भव्य आत्मा इस ग्रथ का पठन मनन करके अपने आत्मा को कृतार्थ करने के लिए ममन्तितमूल चारह व्रत के धारक बनेगे । ग्रथ बनाने का कारण और ग्रथ कर्ता का परिचय ग्रथ के अंत मे दी हुई प्रशस्ति पढने मे ही मालूम हो जायगा ।

गुरु महाराज श्री अमी विजयजी महाराज का

चरण मकर

पन्यास क्षमाविजय गणी

मागाशिर शुदि १५

सन्त १९६२

भायखला

जैन उपाश्रय

चम्बई

यह पुस्तक मिलने का पता —

श्री जैन रत्न प्रिन्टिंग प्रेस

नल धजार गोल देवल के नजदिक, दुभारवाडा २ गल्ली मुनई न ४

मुद्रक के दो शब्द

एक समय था कि, चानि पुरप अपनी वाणी (वचनो) द्वारा शुद्ध धर्मका प्रचार कर जन कल्याण कर रहे थे। फिर अपना शुद्ध धर्मक हेतु ग्रथो कि लिखापट की जरूरत देख कर अपन कमळोस जनकल्याणार्थ अनेकलिख दीये, हजारों ग्रथ आन भी ताडपत्रोंपर और अच्छे कागजोंपर लिखे हुये जैन भडारों में मौजूदा है,

इनमेंसे केर्याक अमुल्य ग्रथ अपने धर्मप्रमि महात्मायां की प्रेणामे छप चुके है, और प्रेसोंमें छाप रहे है, क्यों कि पुराने ग्रथ हाथोंसे लिखे हुये अब केर्याक जगह तो मपूर्ण जीर्ण शीर्ण अस्थायों मीलते है, ऐमे अमुल्य ग्रथोंको छपवाने कि हाल पूर्ण जरूरत भी है, क्योंकि जानी आँन रचे हुये महान उपकारी उत्तम ग्रथोंको ऐमीही हालतमें रवेगे, तो अपने उपयोगी ग्रथके अक्षर मिलना भी भारी हो जायगा,

य अमुल्य ग्रथ भी अपने परमपुज्य विश्वहित बोधिदायक श्री अभीविजयजी महाराजके पंडित शिष्यरत्न व्याख्यानशिशारद पूज्य पन्याम प्रवर श्रीमद् चमारविजयनी गणितर्य को श्री उम्बईके रोटके उपाश्रयमें ' श्रीमत्पण्डित उद्योत भागरजी कृत समकितमूल बारह वन की टीप, नामक उत्तम ग्रथ हाथसे लिखा हुवा अचानक मिल गया तो महाराज श्रीको भी इस ग्रथरत्नको छपवाकर प्रसिद्ध करनेकी जरूरत मालुम हुई क्यों कि निन्ही भाषाम यह अमुल्य ग्रथ हाल तक रूदा भी छपा हुवा नहीं है, इसी हेतु महागज थी इनको अपने हाथोंसे शुद्ध अक्षरोंमें गिय अपने गुरु श्रीमद् अभीविजयजी महाराज के शुद्ध भक्ति भावसे इस ग्रथको भी " श्री श्रुतज्ञान अमधारा गीरीभ नगर २ की श्रेणिमें रख, हमारे प्रेममें छापनेको कहा ? साथमें इस ग्रथरत्न की हिन्दीमें आवश्यकता भी मालुम बगई ता हमने महाराज श्रीके उप देशमें यह ग्रथ छापना प्रारम कर दीया, इनका श्रूफ मुधारना भी महाराज श्री अपने हाथोंसे कर जनकल्याणार्थ यह ग्रथ, मूल हिन्दी भाषामें था चेमाही प्रसिद्ध कीया सो यह महाराज श्रीका हमारेपर कीया

दुःख उपहार का जाभारी हु महाराज श्री की प्रशंसा करना मेरे जैमै
अनाग पालककी मक्ति के नास्ति है । —

आर इन ग्रथक उपत २ श्री नरल २५० ता शा० र्पुंगचदजी
भीमाभा वडावाला ने अपने तर्फमे गगित कर जो रम्बई श्री भायसलामे
मन्गान श्री (पुज्य पन्यामजी माहागज श्री चमा विजयजी गणी) के
मन्उपदेशमे शा० पुनमचद गोमानी वडावाला त्तिरफमे कराया हुआ म
हा मगलकारी उपधान तपकी आगपना की पूर्णा हुती तथा मालारापण
र शुभ मन्त म १६६२ गुजराती मीती मार्ग वद २ के अमालिक प्र-
मगपर भट देने को लीया है ये धर्मप्रेमि भाई भी बन्यवाद केपात्र है,
बिपकी प्रणामापात्र क्या नहो ? एक करीने कहा है कि—

अन्न तान पर दान विद्यादानमत परम् ।

अन्न क्षणिका तप्ति र्यापञ्जीवतु विद्यया ॥

अन्न का दान भी उत्तम दान है परन्तु ? विद्यादान उनमे भी
ज्यादा उत्तम है, कारण अन्नमे क्षणिक तप्ति होती है, तो विद्यामे जीवन
पयन्त मनुषि होती है, इसी लीये ज्ञानकी जीतनी प्रशसा करें इतनी
ही वाडी है, इस वास्ते हरेक भाईको चाहिये कि यह उत्तम प्रयको
गरीत कर अपन पाम रग, शुद्ध ज्ञानकी प्राप्ति करें ।—

जमा याचना ग्रथ माल के अजर शीघ्र तैयार करने के कारण
आर अज्ञान या त्पि तेष के कारण जा अशुद्धिया रह गयी हों उनकी
चापकों मे क्षमा प्रार्थना करता हू अगर वाचक महानुभाव मेरे को रही
हुद अशुद्धियों की सचना देंगे तो दमरी आत्रति म उनका सुधार कि-
या चाणगा ।

ली० श्री मघ का आजाति

शा० रत्नचद वृद्धिचदजी (वेडावाला)

मचालन—

धी जैन रत्न प्रिन्टिंग प्रेस

ठि० वभागवाडा २ गली मृम्बई न ४

धी जैन रतन प्रिन्टींग प्रेम की बढिया छपाई.

आप का यह जानकर बड़ी खुशी होगी कि हमने अपने
नैन व पोरवाल ओमवाल आदि हमारे मारवाटी भाईया की
सुविधा के लिये एक ठापागाना हाल ही में कृभागवाडा २
री गलीके नाके पर खोला है निम्न में मशीन मिलकर नई
है नया छोटा मझला बटा मय प्रकारका अंग्रेजी, हिन्दी, गु-
जराती, मराठी टाईप व मुद्रक बॉटलर मौजूद है। हमारे यहा
काम जगन पर और सुन्दरता से छापकर लिया जाता है
आपको कुछ भी छपाना हो हम प्रेम में पधारकर अर्डर दीजिये।

छपाई पुस्तकका शृंगार है।

जैन रतन प्रि प्रेम-

भगवा और भव इन्होंने ही सुन्दर
करी १ हों यदि पुस्तककी छपाई अ-
मझा न हो तो मारा अम कर हा
जाता है-मझा से इन मझा बनें हा-
धमें अर देवना भा मझा रहे।
करता।

रादपने मौल्य छादना ट मझा
और सुदारवासी अटनाक शिवे सु-
प्रसिद्ध है। बर्गिक मझा मझा
और मुद्रता वसकर सुम्य हा मझा
पता है। इतकर तो-

ख्यानि हमे प्राप्त है—

यह सिंगी दूसर प्रेमका प्राप्त होना जमभव है। हिन्दी,
अंग्रेजी गुजराती और मराठी भाषाकी मय प्रसारकी छपाई
का काम हम प्रेममें हाता है। पर, पुस्तक, पैम्फलेट, जॉर,
माटा मशीन और पहुरम राचित मय प्रसारकी छपाईके लिये,
यदि काम अज्ञ, मझा और मनपपर चाहते है ता नीचर
पतपर पधार कर अर्डर दीजिये।

धी जैन रतन प्रिन्टींग प्रेस,

नळरवार, कुभागवाडा २ री, गल्ली मुर्ड न ४

न्यायाम्मानय धनं
 भ्रमणीप्रविश्य विद्वान्
 महाराज विद्याय पान्
 धामन् क्षमाविजयते, भाग्य



गणीपद वि म १९९५
 पयासपद वि म १९९५
 जम वि म १९५०
 [जयु] पजाय
 १९५३
 विद्याय [भाग्य

क
 न,
 र
 र

श्रीश्रुतब्रानधमीधारा सीरीज़ । नमर २ ।

विरहित मोधिदायक श्री अमीविजय गुरुभ्यो नम ॥

पंडित उद्योतसागरजी कृत

समकितमूल बारह व्रत की टीप.

श्रीमदहोदेभ्यो नम ।

मदा मिद्वभगवान के चरण नम्रु चिर लाय
श्रुतेवी पुनि ममगिए पूजू ताके पाय ॥ १ ॥
बहु मुगम भाषासही बारह व्रत विन्तार
भिन भिन भद जू करी भव्य जीव उपगार ॥ २ ॥
५१ श्रणुव्रत चिन मते तीन गुण व्रत जाण
विचारत न्यारूमिली बारह व्रत जू बसाण ॥ ३ ॥
गाव सुगुरु उपदेश मुनि धारे व्रत शुभ चाल
ज्या धरि सुख जस सपदा होने भगलमाल ॥ ४ ॥
बुध उद्यात सागर गणी अपनी मति अनुसार
विधि श्रावक के व्रत तर्गी, टीप लिखु निरधार ॥ ५ ॥



प्रथम अत्र सम्यक्त्व स्वरूप कहे हैं तिहा प्रथम समकितके दोष भेद हैं एक व्यग्रहार समकित, वृजा निश्चय समकित, तिहा प्रथम सम्यक्त्व शब्दका अर्थ लिखै है “तत्त्वार्थ श्रद्धान सम्यक्त्वम्” तत्र जो यथार्थ स्वरूप विज्ञान पूर्वक श्रद्धा सो सम्यक्त्व कहियै, वे तत्र तीन प्रकार के ह—एक देवतत्र, दूसरा गुण तत्र, तीना धर्म तत्र, ए तीनु तत्र की सदहणा जो माची प्रतीति, उम सदहणा न भी दोष भेद जाणणे, एक व्यग्रहार, दूसरे निश्चय भेती । तिहा प्रथम व्यग्रहारे तीनु तत्रकी सदहणा लिखै हैं । उन में देव तो श्री अग्निदेवी, तीनु न अद्याह दोष क्षय गयै थकै ति कुन कुन दोष सो कहै । प्रथम आतनदोष, द्वितीय मोघ दोष, तीजा मान दोष, चौथा माया दोष, पाचमा लाभ दोष छठा अतिरति दोष, सातमा हास्य दोष, आठमा रति

त जीव मुक्ति पाये । तीमरा द्रव्य निक्षेप मो जिन्हे चिनपद निरूचित
 क्रिया, ने पीया नहि है, पिण्य आगे जिनेश्वर होयगा, ऐमा जो जीव है तिन
 कृ द्रव्य अरिहत कहै है, उन के भावि गुण कृ भूत उपचार करि के बढ-
 न नमन स्मरण पूजन स्तवन करने मे भी अनेक जीव मुक्ति पाये । चौ
 था भाव निक्षेप मो आप जगत उद्धरण ममर्थ, न्ययन जन्मादिक मल्या-
 णक महोत्सव पूर्य, उत्तम कुल अतार पाय के भोगकर्म मीम उदय
 अव्यापक गीते ते भोगविषय भिटाडये, लोकातिक देव कृत मकेत अ
 रमरे चरमी दान, सवा प्रहर लगि सदा र्द करिके, मयमग्रहिके मय्यग
 ज्ञानाक्रिया मेती न्यागे घनघातीकर्म क्षय करिके केवल ज्ञान पाये, उमि बखत
 चलितामन चौमठ इद्र मपरिवार युत आय करिके अष्ट महाप्रातिहार्य युक्त
 ममप्रसंग बनाये, उहा रत्नमय सिंहासन ऊपर बैठ करि, निरवद्य देश-
 ना मेती भव्य जीव कृ प्रतिबोध करि, चतुर्विध मध की थापना कर तीर्थ-
 प्रवर्त्तये, सकलजीव कु देशना मेती अनुग्रह करे, ऐमे जो ममोमरण मे
 विराजमान श्री मीमघरादि विहरमान परमेश्वर सो भाव अरिहत, उनके च-
 ण्णारविड की सेवा भेती अनत जीव मुक्ति पाये, ऐमे जो अरिहत देवाधिदेव
 महागोप महामाहण महानिर्यामक महामार्थनाह महावेद्य इत्यादि विन्द
 धारी, सकल ममकृती जीवके प्राणाधार, सकल मुनि मन मोहन, ऐमे जो
 जिनेश्वर परमेश्वर अग्रिहतदेव ताकु देव करी मरदहु, उनकी सेवा कर, उ
 नकी आता गिर पर धरु इति व्यवहार शुद्ध देव तत्त्व ॥ १ ॥ दुमस नि-
 श्वय शुद्ध देव तत्त्व मो शुद्धात्मा स्वल्प उस्तु गत वस्तु रूप प्रतीति तत्त्व
 श्रद्धा प्रगट, मो निश्वय देव तत्त्व है, णटले वरण गंध रम स्पर्श शब्द रूप
 क्रियादि रहित, शरीर सु भिन, योग सु भिन्न अतीन्द्रिय अपिनाशी अनु-
 पाधी अरधी अज्ञेगी, अमूर्ति शुद्ध चैतन्य ज्ञान दर्शन चरित्रादि अनत-
 गुण भाजन मच्चिदानन्द स्वरूप ऐमा मेरा आत्मतत्त्व है इति देव तत्त्व ।
 *अथ गुरुतत्त्व दूमरा कहे है, जो पच सुमते सुमता, तनि गुप्ते ररी गुप्ता,
 ममतात्परमणे रमता पचेन्द्रिय दमता, अनेक दुष्पर परिमह उपमर्ग मर्
 क्षमा मेती रमता, अनेक स्तुति निंदा शरणे न त्यजे ममता,
 मेती कर्म रूपा * अनादि परचित विभाव ५ ५

दाय, न्यमा अरति दाय, दशमो भय दोष, इग्यारमो सोक दोष, चार
 मा श्रमज्ञ न्य तथा रिदाय, चौदमा काम दोष, पनरमा अतराय दोष
 मा ग्या गा उप, मनसरो मि यात्व दोष, अदारमो निद्रा दोष, ए अण
 ह निद्रागती रिद, अ अदार गुण प्रगट, जिनमो रत्नप्रयी ज्ञान दर्शन
 नरिद, चादि . भावे गड निसको अनत चतुष्टयी मपूर्ण प्रगटी, जिनम
 नरिद . अचार विघटी, जो चिन च्याक निकायके देवताको ओर जो
 नरिद अत्र नरिद न पृथनीक है अरु वै चोत्राश अतिशय करी युक्त है
 सो परीश नगी गुण युक्त देशना दे है, जिणके अष्ट महा प्रातीहार्य
 माभा ग्या ग्या मिगजे है, जिणकी जमी सत्र जगत्रयातिशय रूप, बल
 ए अय, रिदि, बुद्धि, मिद्धि, जाति कुलादि भाव उल्लुष्ट है, वै मद्र दोष फर
 म नहि, न्यु भगिलाण पणे यथार्थ निर्दोष सकल जगत जीमो उपगारी
 ेशना अ, चिठा श्री अरिहतजी निचरे तिहा मयासो योजनमें इति उ
 पद्रन निरत । इति भिमको कहते है ? अति वृष्टि वर्षा की होय ? अथवा
 मयासी वृष्टि न होये, तीमरी उदर प्रमुख जीगादिक की बहुत उत्पत्ति
 हाय, और चौथी पतग, पम्बी, तोता, तीडी, प्रमुख बहुत होय । तथा प
 चमी इति मरी मी जिम सेती चमनादिक विकारे करि बहुत मनुष्यादिक
 मरण पाये । आर छठी इति अपणे देश सबधी चक्र फोजा प्रमुख विग्रह
 र, मातमा परचक्र कहीये—और देशका आया कटक, युद्ध हेतु परस्पर
 विग्रह उपद्रन र, मो मातोई इति कहीये । यह भगवतनीका अतिशय है ।
 जो कृत कृत्य भए । कोई साधन की न्यूनता न रही । जाकी निर्विकारी
 शात मुद्रा देखत काम क्रोध लोभ मोहादिक अनादि की मिथ्या अम भू-
 लि मिट । जो च्याक निचेप सकलजीव कुं हितकारी है सो चार निचेपा
 मान सो रहे है, तिहा प्रथम नाम निचेपा श्री अरिहतजी का नाम जाण-
 णा, नमो अरिहताय इतना नाम मात्र अराधनमें अन्तर्जीव मुक्ति पाए,
 दूसरा स्थापना निचेप सो जो अरिहतजी सबल दोषचिह्न रहित, निरुप-
 म महज सुभग समचतुरस्र मस्थानायि पदमामन वा काउसग्ग मुद्राये शो-
 भित चिन विच है, सो अरिहतजी का स्थापना निचेपा कहाये, वै नि
 कामी लोकोत्तर स्थापना रूप चिनमुद्रा देख के सेवा अर्चा करि के अन्

त त्री मुक्ति पाये । तीमरा द्रव्य निक्षेपामो निन्दे निनपट निरुचित
 क्रिया, वे पाया नहि है, पिण आगे निनेधर होयगा, ऐमा जो जीव है तिन
 दृ द्रव्य अग्रिहत कहे है उन के भावि गुण कृ भूत उपचार करि क उद-
 न नमन स्मरण पुनन स्तपन करन मे भी अनेर त्री मुक्ति पाये । चा-
 था भाव निक्षेप मो आप जगत उद्धारण ममर्थ, न्यवन जन्मादिक कल्या-
 गर महात्म्य पूरे, उचम कूल अतार पाय के भागर्म मीम उदय
 अत्यापक गति ते भोगविचन भिटाडरे, लोकातिक देव कत मकेत अ-
 यमर चरमी गान, गवा प्रहर लगि गटा है करिके, मयमग्रहिरे मय्यग
 ज्ञानाक्रिया मेती न्यागे घनघातीकर्म क्षय करिके केवल जान पाये, उमि बखत
 पलितामन चांमठ इट मपरिहार पुत आय करिके अष्ट महाप्रातिहार्य युक्त
 ममरत्नग यनार, उठा खमय भिहामन उपर बैठ करि, निरवध देश
 गा मेती मय्य जीव कृ प्रतिबोध करि, चतुर्विध मय की थापना कर तीर्थ-
 प्रवर्षारि, मरुलनीय कृ श्रेयना मेती अनुग्रह करे, ऐमे जो ममोमरण मे
 रिरानमान थी मीमघगादि विहरमान परमेधर मो भाव अरिहत, उनके च-
 ग्गागर्भिः की मेरा भेती अनत जीव मुक्ति पाये, ऐमे जो अरिहत देवाधिदेव
 महागाप महामाहण महानिर्घामक महामार्यराह महार्य इत्यादि विरुद
 धारी मरुल ममस्तिनी जीवरे प्राणाधार, सरल मुनि मन माहन ऐमे जो
 निनधर परमधर अग्रिहत देव तांके देव करी मग्नु, उनकी मवा करु, उ-
 नकी आत्रा गिर पर धरु इति व्यवहार शुद्ध देव तत्त्व ॥ १ ॥ इमरा नि-
 धय शुद्ध देव तत्र मो शुद्धामा स्वरूप वस्तु गर्त वस्तु रूप प्रतीति तत्र
 धरा प्रारि मो निधय देव तत्त्व है ष्टल वरु गघ रन स्पर्ग ग- रूप
 क्रियादि रहित, गगेर गु भिन्न, याग गु भिन अर्तान्द्रिय अविनाशी अनु-
 पायी अवधी अत्रेयी अमृति शुद्ध चेतन्य वात दर्शन चरित्रादि अनत-
 गुण भावन मधिगान स्वरूप ऐमा मग आत्मतत्त्व है इति देव तत्त्व ।
 * अथ गुहनत्र मग कृ है, जो पच मुमन सुमता, तनि गुप्ते रगी गुप्ता,
 ममतामगमय मता पनेदिय दमता, अनक दुष्कर परिमह उपसर्ग सर्व
 धमा मती मता अनक सुमि तिग श्रवण न न्यजे ममता, शुभ ध्यानाभि
 मेती र्म र्म काय न बानता अनादि पचित विभाय पागिगति वमता

पैठि कर चारह पर्यंटा के बीच, श्री गणपतरपन्धारी वु त्रिपदी दान पूर्वक, द्वा-
दशांगी की रचना कीनी, तिहा जथाथ जर्थ के कर्ता श्री अरिहत छे,
अर्थानुयायी सत्र के करता श्री गणधर, तिन कु आगम कहीयै, ते आगम
में गफाग्या, मकल जीव वु हितकारी, दुर्गति पडता जीवने रागै, सो
धर्म, तिहा धर्म स्वरूप के टोय भेन है, एक गुद्ध व्यवहार धर्म, दूजा
निश्चय धर्म, तिहा प्रथम *व्यवहारधर्म सो चिनागमोक्त शुद्ध दयास्वरूप वि-
ज्ञान पूर्वक, धर्मप्रवृत्ति करण, तिहा दयास्वरूप लिखे है-१ द्रव्यदया, २ भा-
वदया, ३ स्वदया, ४ परदया, ५ स्वरूपदया, ६ अनुबधदया, ७ व्यवहार
दया, ८ निश्चयदया । तिहा द्रव्यदया सो जयणापूर्वक प्रवृत्ति जीवरक्षा करणी,
सो जेनमार्ग ना जुलधर्म ? दूजा भवदया सो और जीव कु गुणप्रापण बुद्धि
तथा दुर्गति नो पतनोद्धारण अतर अनुरुपा बुद्धि महितोपदेशादिक मा
भाजदया २ तथा स्वदया सो अपना आत्मा अनादि काल मिथ्या अशुद्ध
उपदेश भेती, अशुद्ध श्रद्धानपूर्वक, अशुद्ध प्रवृत्ति करि कै, कपायादिक भाज-
शत्रु मे प्रति समये, नानादिक गुणवात रूप भाज प्राण हणाड है, ऐसा
श्री जिनरचन उपगार मे वृत्ती करि, स्वमत्ता जो परसत्ता परिहार रूप,
शुद्धापयोगधारी, निषय कपाय मे दूर रहै, शुभाशुभ उदये अव्यापक
रहे, चेतना स्वरूप सन्मुख है, ना कसुम दुख की प्राप्ति सो रुमादयरु है,
मन म हय विषाद न बहै, प्रतिलिन कर्मग्रथ की चिता रहे मा स्वदया.
इहा स्वदया रचि जीव अपनी चेतना ममारणे वु चिनपूजा तीर्थयात्रा
रथयात्रा प्रभुरग शुभाश्रम प्रवृत्ति करि कै, जिन गुण ज्ञान बहुमान
पूवन, अपनी चेतना तच्चारलगी करे, पुद्गलाचलगी मिटान, इहा शुभा-
श्रम देखन में हिंसा है, पिण इण निमित्त सेती अनादि चाल मिटै, गुणी
बहुमान म जात्मा गुणग्राही हुने, जरु जेन गुणग्राही भया, सो ज्ञानी
होने, त वाग्ण मय माधक वु ए स्वरूपदया परम माधन है, माधु मि
नरन्धी निहार करे उपदेश देवे, चर्चा करे, पूजनप्रमार्जन करे, सो स्व-
दया की पुष्टि क वास्तै, इहा योग चपलता करते आश्रम हुण, पिण च-
तना स्वरूपानुयायी रहै, जिनावा पलै, कपायस्थान मर पडै, उन्नुकृत
मिटै, अहाली पणा मिटै, धर्मप्रवृत्ति बधे, उन के स्वदया क

चार नहि माया ना मगता प्रतिक्षरा गुन्ड चरणाविडे नमता, प्रति
 नर नर नर नर नर नर नर चरता, प्रतिक्षरो चानर्गनादि गुणपयाये
 रचना, प्रपणी प्रपणी शक्ति प्रमाण नर नर तप त्रिया करता, प्रतिदिन
 आनर्गनादिप्रमाण तानत्रियाभ्याम मेती लधिप्रमुख गुण वरता,
 एचताप्रमाण शुद्धम्यादाद मती अनुसरता, नर नर आमगा दोष त्याग,
 एच मक्तिवद ना य मन धरता, त्रिरग्गगुद्ध एच विध श्री जिनागारे
 प्रतिपालन द्विविध धमर प्रमाणक, त्रिविध स्तनार्थाके धारक, चतुर्विध
 उपाय ३ जाणत पंचविध शुभभावनायुक्त, पंच महाप्रतर धुग्धर धोग,
 उद्गु क्यर परम शुक, मत्तविध भयटाराम गहित, अष्टविध मत्स्थान व
 तीपर नरविध प्रतागुप्तिर धारक, दशविध यतिधर्म प्रतिपालन साधन,
 एचताप्रमाण अथ विन्नार पाठ रमिक इत्यादिक उत्तरोत्तर अगणित गुण
 मगालरुत गात्र परम पात्र परम उपगारी अष्टादशमहस्र शीलागरेय धोगी
 नर माटी विशुद्ध प्रताभ्यान धारा नियत नर कल्प विहारी, मेता-
 लिश दाप राहत शुद्ध जाहार जाहरी, जा परीना कमाटी कम्पा, जात्यवत
 म्यण सी पर अधिक त्रिक गुणग गरी, गत्रमित्र ममचित्त, वृद्धिपरक
 मरल मती नहि अधिद रिक्त, परमगुर्णा, परम दयाल, जगरंधर जगाहित-
 रारी, मारटपति सी परे जप्रमत्त चारी, पृथ्वी की पर मर्न महे, मधुकरा
 वृत्ति म मुवानीरी, जाणाग सी परे निर्धारि, गत प्रतिवर्धी, तथा अतर
 में अर राध में, तगा मते में और जागते म, तथा दिवस में वा रात्रि
 म, तथा एकारी में जथना उडी परपटा म, जिम तृ एक प्रवृत्ति है, ऐसे
 मुनिगन भरिज जीव कु ममार समुद्र तरण कु जाके चरण उडमफरी
 जहान, स्वपरोपगाी, जान के काल में भी पनरह कर्मभूमि में सब मिलि
 रर दाय हजार नाडि माध परते है, ना कु गुरुतत्व रगी मरदहु, उमरी
 जाना मानू, उमरु परम पात्र बुद्धि सु पाडिलागु, उसकी क्रिया की अनु,
 मानन रर, ऐम शुद्ध मातु हमारे गुरु तत्त्व है—इति व्यनहार शुद्ध गुरु
 तत्त्व जाणय, निश्चय गुरु तत्त्व मो शुद्धत्मा त्रिजात पृथक हेयोपादेय उप-
 याग युक्त, परिहार प्रवृत्तिवान मा निश्चय गुरु तत्त्व कहीये, तीमरो । धम-
 तत्त्व मा कहीये अरीहत देवाधित्य तीर्थर परमेश्वर समनसरण में

तिहा का बारह पर्वण के पीच, श्री गणप्रयदधारीं कु त्रिपदी दान पूर्वक, डा-
 ग्गागी की स्वता कीर्ती, तिहा जथार्थ अर्थ के फती श्री अरिहत छे,
 अर्थानुषासी मृत्र क करता श्री गणधर, तिन कु आगम कहीयै, ने आगम
 में प्रमाण्या, मरुल जीव तु हितकारी, दुर्गति पडता जीवने राग, मो
 घम, तिहा धर्म स्वरूप के टाय भेद है, एक शुद्ध व्यवहार धर्म, दूजा
 निश्चय धर्म, तिहा प्रथम *व्यवहारधर्म सो निनागमोक्त शुद्ध दयास्वरूप त्रि-
 नान पूर्वक धर्मप्रवृत्ति करण, तिहा दयास्वरूप लिंगे है-१ द्रव्यदया, २ भा-
 वदया, ३ स्वदया, ४ परदया, ५ स्वरूपदया, ६ अनुभवदया, ७ व्यवहार
 दया, ८ निश्चयदया। तिहा द्रव्यदया सो जयणापूर्वक प्रवृत्ति जीवरक्षा करणी,
 मो जैनमार्ग मा कुलधर्म ? दूजी भावदया मो जाँ जीव कु गुणप्रापण बुद्धि
 तथा दुर्गति नो पतनोद्वारण अतर अनुकपा बुद्धि मोहितोपदेशादिक मो
 भावदया २ तथा स्वदया मो अपना आत्मा अनादि काल मिथ्या अशुद्ध
 उपदेश मती, अशुद्ध श्रद्धानपूर्वक, अशुद्ध प्रवृत्ति करि क, कपायादिक भाव-
 शय मे प्रति ममये, ज्ञानादिक गुणवात रूप भाव प्राण हणाइ है, ऐना
 श्री चिनचन उपगार मे बूमी करि, स्वमत्ता जो परमत्ता परिहार रूप,
 शुद्धोपयोग्यारी, विषय कपाय मे दूर रहै, शुभाशुभ उदये अव्यापक
 रहे, चेतना स्वरूप मसुख है, वा के सुख दुख की प्राप्ति मो कर्मोदयक है,
 मन मे हर्ष विनाद न बहै, प्रतिदिन कर्मभय की चिंता रह मो स्वदया,
 इहा स्वदया रुचि जीव अपनी चेतना समारणे तु चिनपूजा तीर्थयात्रा
 रथयात्रा प्रमुख शुभाश्रम प्रवृत्ति करि है, चिन गुण ज्ञान अहु
 प्रथम, अपनी चेतना तत्त्वानुलनी करे, पुद्गलानुलनी मिताये, इहा
 अथ देयन में हिंसा है, पिण इय निमित्त मती अनानि चाल मिटे,
 नुमान म जामा गुणग्राही हुवे, जरु जन गुणग्राही भया, मो
 होव, त कारण मर माधक तु ए स्वरूपदया परम माधन है, मातु
 नमकल्पी विहार नै उपदेश टय, चर्चा कर, पूजनप्रमार्जन करे, मा
 दया की पुष्टि क वास्तै, इहा योग चपलता करते आश्रय हुए, पिण च
 तना स्वप्नानुयायी रहै, निनाजा परल, कपायस्थान मद पटै, अहु ३१
 मिटे, अहाउरी पणा मिटे, धर्मप्रवृत्ति बध, उन के स्वदया क निमित्त शु

भा १३ सावनी अपनी दशा माफर जादरे ३। तथा परदया मो छद्दु
 फाय क नीरानी रचा करणी, जे कारणे मन जीव जीव्या चाहे है, उमके
 शरीर मन जे अपना जीव दुख मो डरे खु सर्व जीव दुख मो भय करे,
 मम, तागी करी वा जीव ही दया करे, मो पर दया कहिये, इहा विहा
 मर्या है तिहा परत्या नियमा है, जर जिहा परदया तिहा स्वस्या
 ही भवना है ४। तथा स्वरूपदया मो इहलोकर परलोक के पुद्गल के सुख
 ही जागा म, तथा देखादेखी करि न जीव्या करे, मो स्वरूपदया
 कहिये, इण दया मेती तुगत पुद्गलीकर फल पावै, पिण पीछे मंडक चूर्ण परे
 समान करे, एहे इहा देखने में दया है, पिण भाव मा हिमा है ५। तथा अनु-
 ग्रह दया मो प्रायः उद्भूत जाडपर करि कै, मुनिरदन वु जावै, तथा
 उपकार बुद्धि सेती जो जीव वु आश्रय ताडनाडिक करके शिवा देवे
 मार्ग में ल्याव, इहा देखने में हिमा है। पिण जागे म पर जीव कु लाभ
 हाय, तिन मेती अनुग्रह जो फल, दया वु पावै, आचार्य प्रमुख माधु भी
 अपने शिष्यशिष्यणी क मागणा नारणा चोयणा पडिचोयणाडिक करे,
 शासन के प्रत्यनीक वु अपनी ली म सु शिवा देवे, पचेन्द्र जीवकी भि
 पिनाश कर, शासन थिर कर, मो अनुग्रह दया कहिये ६ ॥ तथा व्यव-
 हारदया मा विधिमागनुयायी चयणा पाले, कमवेश न करे, भूले नहीं,
 मो व्यवहार दया ७। निश्चयत्या मो शुद्धमाभ्य उपयोग में एकीक भाव,
 अभेदयोग मा यभाज म एरुता ज्ञान मो निश्चयदया, ए दया गुण
 ठाण चहायड, तिण्ड उट्टुपि है ८। इत्यादिज अनक प्रकार त्यास्वरूप
 विनानपरिक, मत्र १ नियुक्ति २ भाष्य ३ चूखि ४ वृत्ति ५, ए पचागी
 मम्मत, प्रत्यक्षादि प्रमाण पूर्वक, नैगमाडिक नय शैली पूर्वक, नामादि नि-
 चेष रचना पूर्वक, स्यादस्ति, नास्ति प्रमुख सप्तभगी स्वरूप यथार्थ विनान
 पूर्वक, ज्ञान क्रिया, तथा निश्चय व्यवहार तथा द्रव्याधिक पर्यायाधिक
 इत्यादि उभय भावमें यथा अरमरे अपितानरित नय निपुणता मेति मु-
 न्य गौण भावे, उभय नय मम्मत एमी शुद्ध स्यादाइ शैली विनान पूर्व-
 क श्रीमिद्वान्तावन ज्ञान १ शैल २ तप ३ भावना ४, रूप शुभ प्रवृत्ति
 प्रवचन पो शुद्ध व्यवहार धर्म कहिये, द्मग निश्चय धर्म मो आमा

की आत्मता लखें, वस्तुस्वभाव पहिचानीय, जो आत्मा द्रव्य है, सो शु-
 द्ध चैतन्यतारूप, अमन्यातप्रदेशी, अमूर्त्त, लोकप्रमाण, मन पुद्गल मे
 भिन्न, अखंड अलिप्त अनत दर्शन चरित्र मुख वीर्य अच्युताघादि अनत-
 गुणमयी स्वगुणभोगी अविनाशी अनुपाधि अत्रिकारी, ऐमा मेरा आत्म
 द्रव्य स्वभाव सो उपादेय है, इन से जो मिलक्षण परपुद्गलादिक, सो मे
 ग नहि मे उमका नहि। पुद्गलस्वरूप यथा पुद्गल जो वर्ण गंध रस फल
 रूप, तिन के पाच प्रकार शब्द १ रूप २ रस ३ गंध ४ स्पर्श ५ । ए पाच
 के उत्तरभेद अनेक है, ए शब्दादि एक एक भेद वर्णादि चार भेदे रह
 है, इन लोकाकाश में जो उजाला है, तथा अधेरा है, तथा शब्द जो उ-
 ठे है, तथा मरुत्पी वस्तु की पडछाँहि है, धूप पडे है, तथा रत्नादिक की
 काति पडे है, शीत पडे है, धूप पडे है, नाना प्रकार के रूप रंग सस्था-
 न घाट नमूनो देखे जाय है । नाना प्रकार के रूप रंग सस्थान की, क-
 सनाई तथा पदनाई आय है, नाना प्रकार के रसकी मजा है, तथा
 मर्व समारी जीव की देह भाषा मनकी कल्पना, तथा प्राण भेद दश जो है,
 तथा पर्याप्ति छह भेद है, तथा हास्य रति अरति भय शोक दुःख, सुसनखती
 तथा उदामी कटाग्रह हठ लडाई कपाय मोधादिक चार, तथा शाता अशाता,
 ऊच नीचपणो, तथा निद्रा विकथा, तथा सब पुण्य प्रकृति, सब पापप्रकृति,
 रींभ मोन गीज खेद तथा लेदपाछहु तथा लाभ अलाभ यश अपजश,
 मरखपणो चतुरता स्त्री पुन्प नपुसक बढ काम चेशा गति जाति इत्यादिक
 आठो कर्म के विपाक है, मर्व जीव क अनुभव मिद्व है, और भी मृन्म
 पुद्गल इन्द्रिय मे अगोचर परमाणु आति वै के अनेक भेद अग्रहीत छटे
 पुद्गल है, ए पुद्गल के मयोग सेता च्यारु गति में भटके है, इन पुद्गल
 को मग मोड मसार है, इन के मयोग मे जीव के अनत चानदर्शन चा-
 रित्राति अनत गुण निगई, ऐमी जो पुद्गल द्रव्य की रचना है, सो मेग
 स्वभाव नहीं पुद्गल मगे जाति नहीं, पुद्गल मे मेरो सबध नहीं, पुद्ग-
 ल मेरे हेय है, ये उपादेय नहिं, तथा धर्मास्ति काय द्रव्य भी जीव क
 तथा पुद्गल क गति महाई है, तथा अधर्मास्तिकाय जीव क पुद्गल क
 स्थिति महाई है, तथा द्रव्य सब का भावन अवगाहनाटा

काठ नर पुगत काग वतना उच्छ्रन है ए च्यार द्रव्य वेयरूप
 इन में भि भग स्वरूप न्यारा है, तथा और भी ममारी जीव द्रव्य
 मो भा रणी अपनी स्वभावमत्ता यणी है, ए भी मेरे ज्ञेय है, ए
 मता में न्यागे ए मेर नहीं, मैं उन को मगी नहीं, मेरी स्वभावमत्ता
 धनी म , मरा स्वभाव सम्यक् तान दर्शन चारित्रादि रूप, ए अम
 प्रमाण प्रथम अक्षय, चेषण गुणे, अनत, अव्याघाध, अनत दान ल
 भाग उपनाम, अनतवीयादिक अनतगुणस्वभाव है, तिन की श्रद्धा
 मा पुत्र, गुणास्वात्क रूप, निदानदघन मेरा स्वभाव है, गेमा मेरा
 पान्दस्वभाव प्रगट करण व व्यवहार नये सब शुद्ध, ए व्यवहारनिधि
 मात्र है, भय नो मेरे स्वभाव में रमणा मोटे शुद्ध स्वभाव है। क्यो
 निह श्रीउत्तरायन सूत्र के सिधे, ' वरतुमहारो धम्मो ' इत्यादि विवा
 पुत्र उतनाप्रवृत्ति ' सो निधय धर्म कहिए इति धर्म तत्त्वम् ।* ए ती
 नन्वका श्रद्धान सो निधय परिणति रूप प्रतीति मो सम्यक्त्व कहि
 युदुक्त भिद्वान्ते-' निम्मक पाथयण ज जिणेहि पवेइय । त तहोमेव म
 एममटे मेमे अण्णहे' इत्यादि, ते कारणे तत्त्वार्थ सरदहण मेती मय्य
 कहिये, उन मेती विपरित वामना, एतल तत्त्वार्थ श्रद्धान, अप्रतीति,
 तत्त्वार्थ श्रद्धान, मो मिथ्यात करिये, उम* मिथ्यातका मूल भेट च्यार
 तिहा प्रथम प्ररूपणा मिथ्यात्व, मो जिनराणी से विपरित प्ररूपे १। दू
 प्ररत्तन मिथ्यात्व सो मिथ्यात्व की करणी करे २, तीजा परिणाम मि
 थ्यात्व मो मनमा से परिणाम म विपरीत उदाग्रह रहे, श्रद्धार्य सरदह
 ही ३। चौथा प्रदेशमिथ्यात्व मो सत्तागत मिथ्यात्वमोहिनी के जो क
 दल है, उनकु प्रशमिमिथ्यात्व कहिये, ४। ये टल विपाक में आवे, त
 परिणाम मिथ्यात्व हुय, अर जपताइ मत्ता में पडे रहे, तय ममकित
 होये, इहा ए च्यार मिथ्यात्व से उत्तरभेद इर्यात है, मो लिखे है-ति
 प्रथम धर्म जा श्री जिणप्रणीति शुद्ध निरवध उनको अधर्म कहै, १
 अर जो हिमा प्रवृत्ति प्रमुख आ त्रमयी, अशुद्ध, अधर्म कु धर्म कहै
 तीजा माम सो सरर मार्गरूप उनकु उन्मार्ग कहै ३। चौथा उन्मार्ग
 विषयादि मेरन कु मार्ग रहे, ४। साधु जा मत्तारणि गुणे विगजमान

तरण तारण ममर्थ, काष्ठनाम समान, उनकु अमाधु कहे, मो पाचमा मिथ्यात्व । छठा जो अमाधु आरम परिग्रह विषय कपाय भरे, लोम मगन कुनामनादायी, लोह अथवा पाषाण नाव ममान, ऐमे जो अन्यलिङ्गी तथा कुलिङ्गी उन क सुमाधु कहे, पै य न निचारै, जो आप दोष भरे है, मो और कु निर्दोष करेगे कैसे, जैसे आप टालिद्रि और कु धनपति काहासु करेगे, ए छठा मिथ्यात्व । तथा जीव कु एकेन्द्रियादिक कु अजीव स्त्री माने मो मातमा मिथ्यात्व, । आठमा अजीव कु जो काष्ठ मुखादि उन कु जीव करि के माने मो आठमा मिथ्यात्व । तथा नवमा मूर्त्त जो रूपी पदार्थ उन कु अरूपी कहे, जेमे अरूपी स्पर्शान वायु कहे, जो अरूपी है तत्र फलम क्यु है, ऐमा विचारे नही मो नवमा मिथ्यात्व, । दशमा अरूपी पदार्थ कु रूपी कहे, जैसे मुक्ति में तेज का गाला माने, वै य विचारे, जो अरूपी चिज तो तेन क्यु निजरमें आया, यह विचार न करे, मो दशमा मिथ्यात्व । एव दश भेद है, तथा* पाच मूल भेद है, मो लिङ्गे है, तिहा प्रथम आभिग्रहिक मिथ्यात्व, मो अपनी मति में जाया मो माचा, और झुठा । पै परीक्षाकरण की चाह न धरे । शुद्ध अशुद्ध का खोजी नहीं ॥ १ ॥ दूसरा अनभिग्रहिक मिथ्यात्व मो मत्र ही धर्म अर्द्ध है मत्र दर्शन भल है । मत्रही कु उदीय किमि कू निदीय नहीं । इन्ह अमृत अर पिष एक ममान गिण्या ॥ २ ॥ तीजा अभिनिवेश मिथ्यात्व मो जाण करि जूठा बोलै, पहिले आपके अज्ञान मेती पीछ भूल पडी, विपरीत प्ररूपणा करी । तत्र मार्गी जीव कहे । ए तुम मिद्वान्त विरुद्ध धापो हो । तुम भूलो हो । तत्र उमक हठ आवे । उन मेती कुमति कटाग्रह कुयुक्ति कर अपना उचन रखणे की अपेक्षा करे । जूठा पटै ता भी न माने । ए जीव विराधक बहु भत्र भत्र ॥ ३ ॥ तथा चाथा मशयिक मिथ्यात्व, सो जिनवाणि में ममय राखे । इन कू अपने अज्ञानदोष में मिद्वान्त के गहनार्थ में खरन पडे । तत्र डगमगीता र्हे ए मू होयगा ॥ ४ ॥ पाचमा अनाभोग मिथ्यात्व, मो अजाणपणे कळ ममानि नही, अथवा एकेन्द्रियादीक जीवा कू अनादि काल ग्या है मो अनाभागिक । ॥ १५ ॥ एव पनरे भेटे । अर और

५. मन्त्र लिखत । तस्मिन्, लाङ्कित, तेषु गुरु परं च त्रीन् प्रत्येकं तेषु
 तत्र भद्रम् ॥ १ ॥ तथा लाङ्कितवेगगत मा ज देव शगद्वेषसु भद्रं है ।
 एतन्मन्त्रं शक्तिदानं हाय, एतन्मन्त्रं विनाम् । तथा त्रियादिकं त्रिलामर्मे मगन
 है । प्रत्येकं ताताह हायियाह हाय मे पर है । अपनी प्रभुतामे रमी नाही
 है । हाय म माळा ती है, मान्यभाग पचद्वियववाटिक चाह है । एमे
 तत्र मां प्त, उनका कथा मार्ग यम्ययाग अनेकत्रत हिसामयी कां
 मा लाङ्कित त्रगत मिथ्यात् । इनक अनेक भद्र है । मो मिथ्यात् म
 त्ति प्रभव प्रमे दरणा ॥ १ ॥ तथा लाङ्कितगुप्तगत मिथ्यात्, मो
 भा प्रठाम्हा पापन्यातन म भर है । नत्राधि पग्निग्रहधारी ग्रहस्थाश्रमी,
 त्रन् गुन्नाम वगै । मो योरे त्रिणी नत्र नत्र भेत् के भेव ननायके
 ध्याटवर राह पग्निग्रहत्याग करे । पे अभ्यतर त्रि त्रोडी नाही है । अ
 तादि भक्ति मिती नहीं । शुद्धमाधु की पहिचान नहीं । उनक गुरुत्वं
 माने । उहुमान करे । उनक अशुद्ध जान दीय । उन म परमपात्र बुद्धि
 करे । मो गुप्तगत मिथ्यात् ॥ २ ॥ तथा लाङ्कित पत्रगतमिथ्यात्, मा
 तीना मो इह लाङ्किक पुद्गलिक मुग्धी चाह मेती अनेक मिथ्यातान
 रल्पित लाङ्कित पत्रदिन, जो तीरामो, रत्नात्रयन, गणेशचौध, नागप
 चमी, मोमप्रदाय, मामप्रती, तुधाष्टमी, होली, दशरहा प्रमुग्ध अतप
 लामटायी श्रद्धा मेती आरात्रे । द्रव्यव्यय करे । कुपात्रदान दीये । मो
 लाङ्कित परगत मिथ्यात् ॥ ३ ॥ तथा लोकोत्तर त्रगत मिथ्यात् । मा
 त्रै श्री अग्रिहत धर्म ना आगर त्रिखोपगाग्मागर परमेश्वर परमपूज्य म
 ल त्रैपगहित, शुद्धनिगजन ता ती म्यापनामूर्ति माधिष्टायक प्रतिमा तिनक
 इह लाङ्किक पुद्गलीक मुग्धी चाह धर माने । मेरा काम होयगा तो उहां
 पूजा करुगा, छत्रादिक चत्रावुगा, दीना करुगा राति जगावेगा । य
 त्रगतगत क मान । मो लाङ्कित त्रगत मिथ्यात्, इहा चितामणी के उ
 तामे त्र पाचम्वड मागणा मा अयुक्त, निमक कमात्य की प्रतीति नहीं ।
 मो भूला भद्र है, पुण्योदय विना मोहवात्स्य है नहीं, फोक्त्त नि
 जन त्रै क पुद्गल ताम धर माने मा लोकोत्तर त्रगत मिथ्यात् ॥ ४ ॥
 तथा लोकोत्तर गुप्तगत मिथ्यात्, मो जो माधुक त्रैपघारी निर्गुणी चिन

उचन उथापर, अपनी मतिरूपना करिके अर्थदेशना प्ररूपे । मूत्रार्थ
 द्विपाके ऐम लिंगी उत्स्र भाग्वी । तिन कू गुरुबुद्धि करिके बहुमान करे,
 तथा जो सुमाधक गुणी तपस्वी आचारी क्रियात्रत वहुत तिनकू इहलोक
 की चाह धरी बहुमान करे । ऐसै गुणीकी गहुत मेरा करैगे । तो इन-
 की महिरानी मेती धन रिद्धि पावैगे । ऐमे इद्रियसुखकी इच्छा धरि माने
 ओ लोकोत्तरगुणगत मिथ्यात्व ॥ ५ ॥ तथा लोकोत्तरपरगत मिथ्यात्व ।
 मो कल्याणकादि परदिन पुत्रात्तिकी कामना करिके आराधै । सो लो-
 कोत्तर परगत मिथ्यात्व कहियै । एव सर्व मिथ्यात्व भेद इस्वीश परि
 हरू । *उनमे एतला आगार । जो कुलमी परपरा चली आई हूँ, गोत्र-
 कुलदेवतादिक की पूजा अरु दीपपूजाप्रमुख विवाहादिककरणीविषे जो कर-
 णा पडे उनकी जयणा । पं उनकु शुभकरणी न जाणु । तथा गुरुतत्त्व मे
 कुगुरु अथलिंगी ब्राह्मणादिन को लौकिक व्यवहारके वास्तै जो विवाहा
 दिक जोडाये परणायै उनके अधिकारी है । परपराकी अपनी वृत्ति लगी
 है । यू जायकर आशीर्वाद देये । तत्र प्रणाम करणा पडे । क्यू उचित
 देणा पडे । तथा स्त्रीक मिथ्यात्वी गजवर्गीया घर गये । उनके गुरु
 आवै तत्र वह उनका बहुमान प्रणाम करे तत्र उमके मूलायजे सु मुजरा
 प्रमुख बहुमान करणा पडे । तथा जिणे नामालेखादि अकविद्याप्रमुख
 आचारिका ह्वर सिखाया हूँ । वे उस्ताद ब्राह्मणादिक हूँ । उनकु
 बहुमान करणा पडे । भगति करणी पडे । अन्नस्त्रादि देणा पडे । उ
 नका आगार है । उचित व्यवहार जाणी ए सर्व करू पै धर्मबुद्धि न करू ।
 तथा मिथ्यात्वी का कोई लौकिक वार तिहिनार आवै, तत्र उमके उच्छ्राट्टि-
 कारणे कष्ट द्रव्यादि मांगणै आवै । मिथ्यात्वी कूप मरौरादिक लौकिक
 धर्मबुद्धि माने है । मो मागणै कू आवै, तत्र शामनकी निदा मिटाने की
 बुद्धि धरी आपु, पं सुकृतकी बुद्धि न धरू । ओर भी कष्ट कुलिंगी कू कोट
 लज्जा दाक्षिण्य भय प्रमुख कारणे गहुमान अथवा दात करणा पडे, मो
 केवल लोकव्यवहार । तथा शामनहीलणा के खातर, तथा डेप मिटाने
 की खातर लोकचाल करू । उनमे धर्मबुद्धि न धरू । वे सर्व मसार खातै ।
 लिंगु । तथा म्वलिंगी हीनाचारी केवल बेपधारी उनका शामननिदा।

तथा उनहूँ स्व मिटावण प्रणामाणि प्रहृमान करू । हूलपरपगगतशुचि
 तपिहै अस्वप्रगादिक त्वु । जैनमार्ग के लिंगी आँदर्शन में याचना न करे
 कभी त्वु गुण ह । ३ आग गुणकर दणा । तथा हीनाचार में भी जो शु
 प्रत्यक्ष है निगने थापत्र पडणा गुणगारा उपगार है ! जिनमें आप
 नहूँ सुप्रद्वि आउ, भूलि मिटाई, उनहूँ उपगारवुद्धि धरिक्के उदण नमख
 मन्मान नन तर्पधरि के करू । अपनी शक्तिप्रमाणे सेवा करू । घडे उपग
 १ । त्वाय रगी मानू । पै सुमारक शुद्धगुरतत्त्व करी मरदहूँ नहीं, उप
 गारी मरद । इमी तरे मिथ्यात्व परिहरे ममकित शुद्ध घरू, इति व्यव-
 २०० मम्यवत्त्वम् अत्र निधिय ममकित लिखे है, मा जो पूर्वे निधे देव गुरु
 वम तत्त्व म लिखे है, वे तबकी विचारणा करत नि प्यन्न स्वरूप मग्रह
 मत्ताग्राही नय रोमवता निधयदव ए अपना आत्मा जो है । तथा निधय
 गुरु भा अपना आत्मा है । जे साँगे म्ब रूपापयागी आत्मा बु ममागी
 करे । भात्र आश्रयता जाये । इम वास्ते आत्माज गुन्तत्त्व है । तथा
 निधय धमतत्त्व भी अपना आत्मान है । जे कारणे धर्म जो वस्तुस्वभाव
 में उनहुँ चोया । पै धर्मा एतले धर्म जो तत्त्वमणता अपणे स्वरूपमे
 लीनता । नयमाग जो जती चरवत निनमें अभेदोपयोगी उनकु एती
 चरवत, जेमे पुष्प क सीका आमके लीनता उपयोगी स्त्रीका हूँ उनहुँ
 शुद्धनय स्त्री ज बहूँ । वास्ते स्वधर्म अभेदोपयोगी आत्मान धर्मरूप कहायै ।
 अरु वस्तु वस्तुगत शुद्धस्वरूप रमणता ते स्वगुण है, अरु स्वगुण
 मो धर्म है ते भणी धर्म भी आत्माज है एतले शुद्ध मम्यत्त्व श्रद्धा तें
 दव दर्शन निधय मती, तथा मम्यगुशुद्धात्मविज्ञान जो निधयगुरु तथा
 तत्त्वमणता आत्मास्वरूप मप्रता ते निधय धर्म है । जे कारणे देवदर्शन
 मेती अशुभ मिटे । भगलिक हूँ । ग्रहपीडामिटै । मनोकामना मिद्ध हूँ ।
 त्वु ममकित पाँवे मिथ्यात्व अरु अनतालुबधीरूप परम अशुभ मिटे ।
 अपुनप्रवचरूप प्रदानप्राप्तिरूप भगलिक हूँ । वृमति कदाग्रहरूप ग्रहपीडा
 टले । अरु ममाम निजरा रूप मनकामना मिद्ध हूँ । वा के दर्शनप्राप्ति मो
 देव है । तथा गुरु मिलखेँ भूलि मिटे । हित बताने, रहस्य पाँवे, त्वु
 आत्माविज्ञान मे विविध परभाव भ्रमण भूलि मिटे । तत्त्वमणरूप परमहित

पावै । ममता महज उदामीनता रहस्य जाणवा वास्तु ज्ञानी गुरु है । तथा धर्मके मगमेती दुरगति में पडे नहि । दिन दिन अधिक अधिक मोमाग्यबुद्धि हुवे । त्वृ तत्परमण धर्म मती परभावधमणरूप दुरगति में पडै नहीं । दिन दिन अमन्यगुणी निर्जरा हुवे । ते अनेकगुण प्रगटरूप सोभाग्य पावै । इमराम्ने स्वरूपोपयोग मा धर्म इति निश्चय मम्यत्त्व मपूर्णम् । हिवे मम-
 कीतकी करणी है जा मो लिखै है । नित्यप्रत्ये छती योगजाई अरु छती शक्त गाटघाट पिना श्रीनिनप्रतिमा जुहार । न मिले तो पूर्वादिमि मन्मुख श्री विहरमान प्रभुके ममुख उपयाग राखै चैत्यरदन करू । रोगादिकारण न धाय उमका आगार है । दहराकी दश आशातना बडी है । मो न करू । तनाल पान फल प्रमुख नहीं ग्याउ ॥ १ ॥ पाणी नहीं पीतू ॥ २ ॥ भोजन न करू ॥ ३ ॥ जती प्रमुख चैत्य अदर न लचारू ॥ ४ ॥ मधून नहीं मेतू ॥ ५ ॥ चैत्यमें मातू नहीं ॥ ६ ॥ धूँ नहीं ॥ ७ ॥ लघुनीती न करू ॥ ८ ॥ प्रडी नीति न करू ॥ ९ ॥ जूरा गेलू नहीं ॥ १० ॥ ॥ दश आशातना श्री निनमदीरमें न करू । आरभी चाराशी ८४ आशातना जो है । उमके टालनकी जीत में चाह राख । मो मेती चैत्यकी आशान्ता न लागै । माम प्रत्ये मेरप्रमुख फूल चढातू । माम प्रत्ये फलादिक रिननाक चढातू । मास प्रत्ये घृतादिक मेरप्रमुख चढातू । वर्षप्रत्ये जगलूहणा पाच अथवा दश च्यातू । वर्षमध्यें केशर चन्दन बरास भीममनी प्रमुख पूजानिमित्त प्रभूर्नि द्रव्यलागै जेतो खरचू । देहरै निमित्त वर्षप्रत्ये धूप जगरनी कपूर चढातू । वर्षप्रत्ये जष्टप्रकारी मत्तर प्रकारी पूजा करू करावू । वर्षप्रत्ये माघारणद्रव्य खरचू । इतनो, वर्षप्रत्ये ज्ञानहेतु द्रव्य इतनो खरचू । जानमामग्रामें खरचू । दिनप्रत्ये नरकार वाली आत्मारै हेतु बाधो गुणवी, नगुणाय तो आगे पीछे करि गुणके पहुचातू । रोगादिकारण न गुणाय तो तेहनी जयणा, दिणप्रत्ये छती ममर्थाडये प्रभातें नवकारमी, मायाकाले दुप्रिहारपचखाण करू । घाटघाट रोगादिक कारणै न धाय उमका आगार, वर्षप्रत्ये माहमीरञ्जल माधमी जीमातू । इण गीति मेती ममकित पात्र । उमके पाच अतिचार जो है मा टालू । मो लिखै है—पहिलो मका जतिचार, मा निनउचनके गभीर गहन भाव सुणिके दिलमें शंका मटेह धरै, ॥ क्य होय मन म आवता नहि । मन में डिगामिगाट, रहै

नियम निर्णय १ करी शक तो और दिन कर पहुचाव । मास नियम और
 मास में कर पहुचाव । वर्षान नियम और वर्ष में कर पहुचाव । ए छ
 छिटा च्यार आगार दिन मास वर्षान नियमकी तरंगे भी च्यार व्रतमें
 मद्र । गीति यथाशक्त शैली माफक छिडी आगार ममजी लैला ॥ एकही तरंगे
 ह । कम मद्र । फिर गती निवर्ग । इहा मो धारणा करणी । इहा मने प्रतिना
 लक्ष्य निव । इम गाथा नीच सम्यक्तन्मार्गका कथन ह सो जाणया । गाथा
 मरिना मह तरंगे चारजीव मुनाहणो गुणो । विनपन्नन तत्त इय मम्मन
 मण गाथा ॥ १ ॥

इति म्यादादर्शलीपूर्वसम्यक्तन्मार्गिका इणगीते आठरवी ।

अथ वारहव्रत लिखे हे ।

प्रथम प्राणातिपातविमण व्रत ॥ १ ॥ द्वितीय मृषादादविमण व्रत ॥ २ ॥
 तृतीय अद्रक्षातिपातविमण व्रत ॥ ३ ॥ चतुर्थ ब्रह्मचर्य व्रत ॥ ४ ॥ पाचमा
 परिग्रहविमण व्रत ॥ ५ ॥ षष्ठ दिग्पविमण व्रत ॥ ६ ॥ सातमा भोगोप
 भागविमण व्रत ॥ ७ ॥ अष्टम अनवदंडविमण व्रत ॥ ८ ॥ नवम मामा-
 विर व्रत ॥ ९ ॥ दशम देशारगामिक व्रत ॥ १० ॥ इग्यारमा पाँपघोषवाम
 रूप व्रत ॥ ११ ॥ बारमा अतिथिमविभाग व्रत ॥ १२ ॥ ए वारहव्रतना
 नाम जाणया । हरे थूलप्राणातिपात व्रतकी व्यवस्था लिखे हे ।

द्विच प्रथमव्रत थूलप्राणातिपात व्रत, तिमरे दोय भेद हे । एक द्रव्य प्राणा
 तिपातव्रत । दुना भावप्राणातिपात व्रत । तिहा द्रव्यप्राणातिपात मो पर
 जीवह आपमरीमो जाणिके जयणापाले । उनरे दश द्रव्यप्राणा किस्का कर,
 उगार । मा द्रव्यप्राणातिपात व्रत रढीये, व्यवहार दया हे । तथा भावप्राणाति
 पात सो जो अपना जीव र्मरे मणि पह्या हुवा हे नव पाँवे हे । अपना भाव
 प्राण जो ज्ञान दर्शनादि उमरा मिथ्यात्वकमायादिक अशुद्धप्रवर्तन मेती
 प्रतिचर्ण घात हुये हे, प्रतिचर्ण हणाय हे । मो अपन जीव र्मरेरिपु
 मेती छोडारण रे फीर करिके तिनरा उपाय जा आत्मगुणरमणता घरे ।
 परमाररमणता मरे शुद्धोपयोग व्रत । उदये अव्यापक रहे । एकस्वभाव
 रमणता मा ममस्त र्मरेरिपु उच्छेदरा अमोघशस्त्र हे । एतले मकर पर

भाव इष्टता निनारी स्वरूप सन्मुख उपयोग मो भाव प्राणातिपातत्रत कहिये । निश्चय दया पण एहिज है । इहा धूलप्राणातिपात, सो धूल कहिये, मोटा निजर जावै फिरै धिरै । ऐतलै त्रमजीव उनक मकल्प करिकै न हण । इहा हननक्रिया चार प्रकारकी है । एक आकुट्टीकर हणणा ॥ १ ॥ दूजी दर्पकर हणणा ॥ २ ॥ तीजी प्रमादकर हणणा ॥ ३ ॥ चौथी सरूपकर हणणा ॥ ४ ॥ ए न्यारुका अर्थ, आकुट्टी सो जो निपेधी रस्तू उमकु उत्साह मेती करै । ज्यु आग्वा जो मारई फलफा भुडथान करणा, जो हरी मोकली हुनै भी उसका भडथा कर खाणा नही । उमकी चाह धरिकै करै मो आकुट्टी दोष ॥ १ ॥ दर्प आकुट्टी उच्छुक पणा मेती उमत्तपणै मानगरै धरिकै टोडकरै मो हिंसा मो दर्प हिंसा ज्यु गाडीघुडबहिलयोडाप्रमुख एकएकमाँ अभिमान धरि दोढाये, यहभी आकुट्टीदर्पहनन क्रिया दूजी ॥ २ ॥ तीनी आकुट्टी प्रमाद, सो काम भागरै निपै तीत्र अभिलापसै जो हिंसा करै । त्यु कदर्प बढारैकु तसादि जीवकी हिंसा करिकै पट्टी गौली माजुम प्रमुख बनावे, मो आकुट्टी-प्रमाद हनन त्रिया ॥ ३ ॥ चौथी कल्पहिंसा मो आपनै धर कारणै रधनादिक करै मो नाणवी । इहा थावकरु प्रथमहिंसा तो न करणी ज, जो रत्ति करै तो भी जयणामँ करै । ते मारै इहा सरूप करी आकुट्टी तथा दर्पकरी त्रमजीव न हण, ए चीटी जाती है इनक मारु ऐमा सरूप करिकै हणे उमकु कुट्टी मकल्प कहियै । ऐमा मरूप करिकै निरपगध नि कारण न हणातु । कारणै आरभै रधनादि ग्रहस्थकरणीय करता तथा कारणै पुत्रादिकके शरीर जीवोत्पत्तिका औपधादिकारणै जयणा । घोडा बँल प्रमुखकू चानकादिक मारणैना आगार, आँग पेटकै क्रिम गडोल वा पगमँ नारु देश भापाये गाला, हरम चम्मज प्रमुख आपणै शरीरमँ उपजै, तथा मित्रादिक रँ और स्वजनादिक रँ, शरीर-विषे उपनै, तिनकै उपचार करणै की जयणा । जे कारणै माधू कू तो मूत्तम गानर दोनु जीवकी त्रम स्थारर दोनु भेदकै जीवनी नवकोटि विशुद्ध पचखाण मेती हिंसाका त्याग है । इम हेतु माधू कू वीशविधा की दया है, अरु गृहस्थ कू मयाविधा की दया है । मो किम तरैमे तिमका

निरग लिये है। गाथा। जीवा मद्रुमा धूला मकल्पारभश्चा तथा
दग्निहा, मावरात् निगमगहा मारिखा चर निरवेक्खा ॥ १ ॥

अथ, जगतमें जीव के दोय भेद हैं, एक धार, दूजा प्रम, तिहा
धायम मन्म वादर दोय भए हैं। वे मृक्ष्मसी हिंसा नहीं है। ज माटे
गि। इरान्पिरा गरीको वादगघ का घात लगता नहीं है। तिनह
वागय एषी नाति जीवसू घातपात है। इम रास्ते इहा मृक्ष्मश
पय ॥११ गु सी पागी अग्नि प्रायु वनस्पतिरूप घादर पाचु धायर तिनह
७ ३ ॥१११॥ अर सुल मो रेडद्री तेडन्त्री चांरिद्री पचेद्रीरूप ए जीवके
गल वर ॥१॥ तिनमें मरे जीव आयें। तिन मरेसी त्रिभण शुद्ध माधु
र्या वर है। तिम रास्ते तीश विशाकी दया मुनिह है, अर श्रावमती
तो पाचधावरकी दया पल गरु नहीं। मचित्त आहारादिकारण अग्र्य
दिना ह्ये है। तिम वास्त एण विशा गया अरदगप्रिया रहा। एतल
एर तम जीवकी दया गही। मोमी दोय भद है, एर मरुत्य, दूजा
जारभ। तिहा आरभ करिं प्रमनीयसी हिंसा होय जाय। मो छोडी
नही जाय। इम रास्ते दोय हिंमामें म एक मरुत्य हिंसाका त्याग,
अरु आरभ हिंसाकी तो जयणा है। ते कारणे फिर दशमाहे स आघ
गये। पाच विशा रहै। एतल मकलपी प्रमजीव न हणु। उनमेंभी दोय
भए जीव है। एक मापराधी जीव है, दूजा निरापराधी जीव है।
तिहा जो निरापराधी जो जीव है तिणह नही हणु, अरु सापराधी जीव
हणनेकी तो जयणा है। जे कारणे मापराधी दया श्रावक मेती मद्रा
मजतमें पल नहीं। जे कारणे धर्म चोर पैटा है। आपनी चीज लेता
है। मो पिना मोरे कृटे छोडे नहीं, तथा और अपनी स्त्री अन्यपुरुष
अनाचार मेवता दये तो उनह तस्त्री दिया बिना न छोडै। यह मा
पराधी रहीये। आरभी कही राजार्क आदेशमें युद्धमें गये थके मग्राम
करणा पड्या। तम आगमे शस्त्रादिक चलाने नहीं। जागला शत्रु शस्त्र
डाले, तम पीछे डाले यह रास्ते मापराधीकी मरुत्यहिंसा न छूटे। तम
और पाच विशामें आधारहित भये। चानी अगई रहै। मकलपीने
निरअपराधी जीव न मारु। इतना रया, उममें भी दोय भेद है। मरुत्पीने

निरपराधी जीवक न मारू । एक मापेकी दूजा निगपेकी, तिहा मापेक निरपराधी जिवनी दया श्रावकर्म न पलै । मो क्यू मो कहै है । श्रावक आप घोटै घुडनीहल रथगाडी प्रमुखकी अमनारी करै है । तत्र घोटै प्रमुखके पलदके चावखा आर लगावता है । इहा घोटै पलदने नया अपराध कीया है । उमकी पीठ उपरै तो चढी बैठै है । उम जीवके शरीरकी मामथाई की तो कठ खर नही । पलमान है, के दुर्मल है, उपर चनी बैठै है, फिर उमके गारी प्रमुख देके मारै है । ए भी निरपराधी तथा अपने अगम तथा अपने पुत्रपुत्री न्याति गोती निमित्त मन्तकर्म वा कानर्म कीडे पडे है । तथा अपनेट मुखमै दाढमै दातामै कीडा है । तत्र उमके डलानके वास्त कीडेकी जगा आपध लगावणा पडे । तत्र उख जीवने क्या अपराध कीया है तो अपनी योनी उत्पत्ति ठोड पायके कर्मके जाधीन आय उपरै है । कछु दुमटाड सेती नाहि उपरै है । तो वै अपराधो नही है । तिम कारणे निरपराधी जीवकी भी हिंसा कारणे श्रावक मेती तनी न जायै । और वागवगीचामै गये थके फुल फल पान गोनद्ध प्रमुखके चाट प्रमुख देणी अथवा फल फूल तोड लीया इम वास्त अडाई विश्वा रचि आधा गया तत्र मना विश्वा रखा, *इतनी दया शुद्धश्रावक करै है । एतल त्रमजीव मकल्पनि निगपराध कारणे पिना हणु नही । ऐसी प्रतिजा भई । वै प्रतिजा शुद्ध जन रहे, जिहा ताहि अपनी शक्ति पहुचे । तिहा तलर ठगाई न करै । निरधपमख न रहे । रगै कोई जीवकी विगधना हूचै ऐमा उपयोग न झाडे । तथा प्रमै आरम्भकारणे लफडी गोतै प्रमुख न्यायै मे आधी लकडी होय । मटी सूली न होय । तिममै आगे जीव न पडे, ऐसी पकी सूकी होय तो भी रगोईका राम पडे । तत्र पुजी करिके झाटक शटक करके जलायै । तथा घी तेल मग प्रमुख रमभरी चीजके भाजन जतना से राखै । मुख पन्ध कर रखे । सूले रके नहीं । तथा चूल्हाके उपर पाणिके ठिकाणे उपर चट्टा बाधै । तथा जनाज खानेक तयायै मो नरो न्यायै । अथवा रपमै उपरका धान न्यायै मो मन्धा मूल्या न हुं, कोई जीव त्रम नचरमै नावै ऐमा न्याय । तथा पाणी छाणनेका अतिरख मपीठमो राखै । पहर प्राट पाणी आणया तथा वर्षामे बहुत

पार्थ तिहार्थी अतीचार बंधका दूजा लागे ॥२॥ तीजा छविच्छेद अतीचार
 कहै । बेल प्रमुख्य शुतरके कान छेत्तये, नाथ घाले, पुष्पत्वपणो मिटाने,
 आग्नी छेदन करे करायै । सो तीजा अतीचार छविच्छेद जाणुणा ॥३॥
 चोथा अतीचार अतिभारोपण कहै है । जो बेल मुतर उपर जितना
 राता उनमान प्रमाणा भरखेकी गीत हूवे, उनमे जाटा भरै, सो अती भार-
 रोपण अतीचार लागै । श्रावकता छरुडा पेल प्रमुख्य जो भारकं भरै, मटामट
 तिम मेती पाच शेर शेर करु भार मरायै, तो व्रत शुद्ध रहै । उममे
 भी जानवरकी चलखेकी ममर्याई उतनी नही है तो विरेक मती डलावै ।
 जानवर निर्मल रुमजोर वै तो उसका खाणा घाम टाणा री खर
 लेवरायै, प एमा न विचारै, जो लोफ सत्र डालते है सोता, तितना हम
 भी डालै । मुज व्यरहार शुद्ध है, एमा न विचारै । व्रती होय सो दूजा
 रेल करे ए व्यरहार है । चोथा अतीचार अतीभारोपण ॥४॥ पाचमा
 अतीचार मात पाणी रा विछे करे मां लिखै है । जो रेल घोडेरी
 माता माफक खाणा रध करै, रुम करै, अथवा अनेर कोरक देयै । बखत
 टालके रै । तत्र अतीचार लागै । अथवा किमीकी वृत्ति आजीविका
 रध रग्गी सो भी इन मे आयै । अरु श्रावक तो दाम टासी चारु
 टार प्रमुख्य जा अपन पीछे जिमकी आजीविका लगी हुन उमकी खर
 लेख पीछे भोजनादिक पारत करै तो व्रत शुद्ध रहै । ए पाचमा मात
 पाणीका अतीचार ॥ ५ ॥ ए पाच अतीचार श्रावक जाणुणा पिण
 अदिग्या नही ।

इति श्रीद्वान्धवप्रतिपत्तयः प्रथमप्राणातिपातविरमणव्रत उद्योतमाग
 गणिना कृत भाषा मपूर्ण ॥ १ ॥

अथ द्वा ।

श्री अरिहतादिक ममरके विरमण चित्तशुद्ध लाय ।

द्वितीयव्रत विवरण लखु मृषावाद जिम धाय ॥ १ ॥

अथ धलमृषावादविरमणव्रत कहा कहीयै । मूल कहीयै मोटा, मृषावाद कहीयै
 जूठका गोलणा, तिमका विरमण कहतै छोडणा, तिहा मूलशब्द पूर्वपरै,
 मृषावाद जठ घोलखै अतीति रधै, अपजम हवै, धर्मनी,

इन सब हैं साडे जीवन् यना पशुच एमा जूठ न बोलें । अथवा मुत
 लक्ष्मी धात यनेना यनाकर रहे । अनेरगुणी यधती रहे, गैरमुतलक्ष्मी
 या। अनरगुणा यराके कडे पिय निमो हुन तिमो न करे, उनका तो
 याम या यनाकर निरमणत्रत उमरुके योग भेद है । एकर द्रव्य मृपायाद
 द्रव्य भाव यनाकर । तिरा द्रव्य मृपायाद मा जाणत अजाणत निपरित
 ५६ । उठ कर माइ द्रव्य मृपायाद । एजा भाव मृपायाद, मो मरुलपरभाव
 पुद्गलादिकर । अल्प बुद्धे अपना चरण, अपना करे । रागद्वेषयुक्त कृष्णा
 टिकर शुद्ध यथा मनी त्यागमविरुद्ध भाव, आगमार्थ द्विपावे, उत्तम
 प्रदे, द्युक्ति लक्षण । या भाव मृपायाद रहिये । ए जाणत मं ज हुवे ।
 ए प्रत मनम उडा है । पालनेम अतिगुद्वि उपयोगी हुन । जय तो शुद्ध
 रहे यर प्रतपाल, ज रागणे आणप्रत द्रव्यदेशनिपयी ते दिखार है । ए
 जीवन्ती शुद्ध पहिचानमेती जीवन्त्यापाल तया परनिष्ठागत पुद्गल पर्याय, एतले
 अपना निष्ठाभी चीजमेती या सोडे त्रिणमात्र प्रमुख मो परनिष्ठा कहाये
 उमरु पिन दीधी नही लेवे । एतले अटत्तप्रत पले । तथा एर स्त्री रा
 मयोगत्याग मन वच सायामेती करे एतले ब्रह्मप्रत पले । तथा धनधान्या-
 दिक नवविधि परिग्रह त्याग करे । मूर्छी न धरे । एतले परिग्रहविरमण-
 प्रत पले । एर एर द्रव्यदेश वकी पहिचानमेती न्यारुप्रत पले । अर जो
 अरु जो मृपायाद निरमणप्रत तो जय स्वद्रव्य गुणपर्यायभी द्रव्य क्षेत्र-
 काल मेती पहिचान हुन । तीर करिये जीवन्तर उपयोगी हुवे । जब शुद्ध
 पले । एर पर्यायमात्र निरुद्ध भाषणे सेती प्रत भाजे । या वास्तै माधु
 प्रायिक बहुलमापा बोले है । तथा माधुभी प्राणातिपातनिरमणप्रतादिक
 न्यार महाप्रतम अन्यतर भाजे, तव एक चारित्रगुण भाजी, ज्ञानदर्शनकी
 भवना । एर जागली गति निगडे । अरु जय मृपायादविरमणप्रत भाजे
 तय रत्नत्रयी समूली जाय । दुर्गति माही म्ले, अरु अनतममारी हुन, दु
 लभयोधी होय । इम वास्तै इन प्रतको शुद्ध करे, तो छह द्रव्यकी पहिचान
 चाहिये । माव्रानती रावे । तथा इहा जगतम द्रव्य असन्वके त्यागी तो
 बहुत दर्शनम पाडेये पं भाव अमत्यके त्यागी तो एर श्रीवनागममचि शुद्ध
 यदाप्रतक होवे, जोकर नही । तथा मृपायादत्यागवतके पाच उडा जठ है ।

मो श्रावकवतीरु अवश्य छोड़णै, कौण कौण, प्रथम कन्यालीक मो अपनै
मिलापकी कन्या है, उनकी सगाड हुती हुने । तत्र कन्याके ग्राहक पूछै,
कन्याकेमीरु है । तत्र रागमेती उसमें दोष वै सा छीपावै, गुण वै मे न हुवै
ता भी जुठ बघावै । ए कन्या निर्दोष है । ऐसी सुकुलिनी सुलठिनी
मिलनी मुश्केल है । माधात पारवती है । ऐमा राग मेती रहै । अरु जा
बहु परस्पर द्वेषभाय होय तो कन्या निर्दोष है मो सुलछनवत है, तो
भी कहै ए कन्या कुलछनी है नैसकदम की है । स्वभाय नयून है । इम
लडकी के पामै रहैत है पाडोमी लोक कहै है । तत्र हम भी सुन्या है,
इममें कोइ मन्मथ करेगा, मो पछितावैगा ऐसा अछता दोष कहै, श्राव-
कत्रतधारी है, सो तिमरु सगाई सादी त्रिच आरम्भ झूठकामै गोलना युक्त
नहीं है । ज कान्खे स्त्री भरतारका मन्मथ जोडावणा है मो ममार भ्रमण
बीज गणना है । यु करते अपना मन्मथी है, घरकीवात है । दाक्षिण्यताई
सु छुटता नहीं है तो अतिजठ अशुद्ध न गोलै । और गुण वै मो कहै,
अरु कहै भाई अपनी निमा कर लीजीये । जन्मका समथ है, ऐ व्यवहार
है । यथा कोई चाकर गन्वता हुवे, तथा जो कोई भागपाती व्यापार के
खातानामा जोडि मिलाया चाहै मोभी पूछै, एकत्र ए कैमा है, भला है
के पुरा है तत्र त्रती श्रावक होय मो रागद्वेषकी वात न रावै । तिम तै
कन्यालीरुकी तरै कम प्रेशन बोले । गुण हों मा रहै अरु कहै भाईमनुष्य
क मनोगत भायम कौण महिरम है । तुम्ह स्याने हो, अपनी तजनीज
कर लीजीये । ए कन्यालीरु जठ जाणखा ॥ १ ॥ अथ दूजा झूठ बडा
गनालीरु । मो लिखे छै । कैमी तरै किमीक महव्वती यार जामनाय की
गौ त्रिकती होवै, तत्र राग रल गोलै । इम गौकू जोष मेती लया, बडे
दुध की दाता है । सुलछणी है, लातप्रमुख नृजत चलावती नहीं है । इम
गौरी माहू भी हमजाणै है । वह भी नृत्त दुध देती । ऐसी वाता कहि के
गोत्र विकारै । गाय महा अपलच्छणी थी, कम दूधकी देवाल है, लात-
प्रमुख चलावै, इत्यादिक दोष सु भरी है । जो तो त्रती श्रावक हुवे मो
एतलै रागद्वेष मेती मटोपत्र निर्दोष करे नहीं, यथार्थ भाषा बोलै ।
मत्र चौपट हाथी घोडा सुतर बल गौ भैम सचका निवरा ऐमै

हाउ विनय रगारणा युक्त नहीं, कदापि मरंध म्नेहका हुवं तो बोलणां पट, तत्र अपना ततकु टोप न लागे ऐमा वचन बोलै ए गवालिक् त्याग करणा ॥ २ ॥ अब तीमरा म्पावाद भूम्यालीक, सो जमीनका जूठ बोलणा, मो रैम, तिहा जमीन किमीकी है, अरु आप आपमै कहै मे री है । ऐमा बुद्धि प्रपञ्च करिकै अपनी ठहरावै । अथवा और कोई जमीनकी गानरलटै हुं, तिहा रागडेप पण्णितिमेती जुक्ति बुयुक्तिवर रागी को माचा ठहराव, हेपाए जटा ठहराव, हुं किमीकी दिवरावै किमीक, जगा किमही प्रारकी तो एमी गडा म्पावाद है पहिले तो श्रापकवतकि जमीनका कनि एरी रातम पडग्या नहीं । जमीनका कजिया मोटा आरभकी खानि है । पडापी अरना उनन मरंध है तो उनमै न छुटै तो यथार्थ कहीयै वै जठ न कहै, आरमै एकात मरंधीक मरनावै । ए रातम हम नहीं बोलैगै । इम रास्तै हमए मत बतलाया, यु करते भी कोई पच मीलिकै उसी पर कनीयै धान काठहराव आनि कै पडे तो अपनी चतुराईसू पहिलातो न बोलै । एमै कहै, हममेती तां बडै बडै पच है जो ठहराव मो खरा आर म्पावै गहत है, ऐमा कहीकै, चूपररी पैम । अरना प्रतका भय रास्तै, अर कलाचिन् गहत प्रर तत्रकहै मुजक पर घेर न्या कहो मै तो इम जमीकी रातमै पूरा सामहिग्म नहीं ह । वै भूमिका जठा न बोलै इनमे मर वात जमी मवधी, घर हरेली रागबगीन्या री ऐमी जाणणी, फाइ खरीन्ता होय तत्र भली घुरी न कहै । धनधान्यादिपण्णिकका जठभी इममै आया । ए तीना जूठ भूम्यालीक त्यागै करै प्रती श्रावक है मां ॥ ३ ॥ चाथा थापणमोगा प्रतधारीक न करणा, जो कोई अना मत द्रव्यभूषणात्किचीन धर गया हुवं विनगुहाई अछा गहस्थ भला चालीकै, तत्र कितनै दिन बीतै धरणी मागणेक आवेगा तत्र हम नहीं देंग, एमी बुद्धिप्रपच करिकै जूठा पचोमे बोलैगा किमितरै मेती, जग मांग, तत्र यही कहैगै, कोई हमारी लीखी दस्ताएवज है, अथवा किमीकी गुहाई भी है । जा कोई मालीयत रखे है, मो लिखाय पनायकै रखै है । अब त्रानणकी मूठ जागी, हम नगरमै मातर है । यह परणगी आयागया इमकी कौण हर ररावगी । हममै रख छोडकै उमकी

तरफ कोन बोलैगा । तो ऐसी चीन द्रव्यकी ज्यू ज्योटीयै । अरु मे
 अपनी अकल मैती मरु जगाम दगा । किम ही क पैच मै नही आवूगा,
 एमै कुत्रिचारमै पडै इतनैमै पहिला आखिके मार्गगा, धरणी मेरी चीज
 दगो, तर गुम्माकर गोलग, कमा माल अरु किमरु मृप्या, मो कट्ट
 ठीक भी है, हम तुमरु चिन्हते भी नही, तुम कोन हो । म्या किमीकै
 भालमे धरी होय, तिममेती तहकीक रुमे हम तो पिना पस्यै किमीकी
 म्यते भी नही, तिमतै तुम्ह फिर परदशी इतनी गत सुणिकै धरणैवाला
 कहसै लागा, अरे माहिन मै रैणै वाला माहिन लेनैवालै, दोनू जीने
 ह । कोई गहुत वरमभी न हुआ, माम च्यार पाच की धरी मेल्ही मो तुम
 एमै शाहकार होय क एमै जीवनी मर्या ग्यात हो । ए गत भली नही । अठा
 गडैमै मला नही ह । तर दानु झगड म लग । गहकार अपनै भाईगन्धरु
 कहै । इम दगागोर क काड ममचार्यो कहिमी कया नही, नहीतर गहुत दिन
 या रूंगा, तमती पारंगगा । पछे ममझेगा आज पीछे किमीमेती अठा
 गटा न करै, तिम गाम्तै इमरु ममझार्यो । नहीतर फोजगरीमै कहीकै
 भन धा, ज्यू मरु हमारि पाममती द्रव्यचीन गिणगिणीकै ल्यैगा तिमम
 ममझी जाय अपनै घरहु, इममेती अठा कजीया कर मती एमै वचन
 भगी रह सुणाये । वह धरण वाला विचारै, क्या म रह, सर लोक इमकी
 रव गोलै । मै इफला परदेशी इन मती चमि नाउगा । तर गह अगोल्या
 हुय रहै । ऐसी कुत्रुदि करै की आप मचा हूव । आगलैरु जुठा करै, अरु
 पिराणा माल हजम करै । वह थापण लोकभाषा धरोकड गेरुड रागै मो
 महापाप है । इहलोक मै कडापि पापकै उदयमै करही जाहर हुये । ये
 चता धरता, तो महा गचदण्डातिक पडे, लोकमै अपजम हुये, अप्रतीति
 रये, परभव रुडा कलरु चढै, दुर्गति मै पडै दारिद्र भाग करहु न भिटै ।
 चिनेश्वर भाषित धर्म उदयनार । इमगाम्त आरु वती हुये, मो मर्यधान करै ।
 शास्त्रमै सडै इनामत रवणी न कही, कृपाचित मूल भागे, कृपाचिण्यमवधी
 मर्यणै पडै भाईगन्धकी गुहाई घलायकै तोल मोल कराय के काल कर,
 कै मर्यणा । अत दिन गये घटती यधती न करणी ।
 पनी चेतना न है, कृपाचित अपनै मर्यणै पु

चेतन प्रकृत तनी, विष प्राप्त गुहाधिक तिगार्यक स्वत र्ग्य इममता
 उर र्ग । प्रण। बागं उर सुधी हाय उर । इनमं मय पातका विरग
 चारु लक्षण । इत्यदि वि ग्रामधान ए मय उचीकृ थापणभोमा न करणा
 । २ । प्ररग मयागत् जडीमाभ्य व्री श्री श्रावक ह्ये, मा न कर्ह । ति
 । ३ । वि । ११ । इटी मारयमा ताय जणा श्मर्त करणं प्रार्णा
 ना । २२ । २३ । न वाचा कान यथा, तिनमं जा माचा हं तिमपर एक
 २४ । २५ । निम पुर्यनं अपनं डिलमं धार रर्या हं ।
 २६ । २७ । मय पाय उमर ताट जगत् करगं । यह पातका अमर दे
 २८ । २९ । विगारयका जल उद्याया द्वेषपोषणं श्री ग्यातर आप र्ना
 ३० । ३१ । भाव गीतमर मय । लोका र्ग कहनं र्ग, इम पातमं इम महिरम हं,
 इमकीमाग्य हन भर, राचद्वार मं भी काटं काम पडेगा अर पूर्णं तो कहं इमकी
 ताग्यमा भाग गततं म हम ग लीज, ऐमी रीतं शृठका परय करं ऐमी
 भात करिं इटी माग भर, इटी माखका उटा पाप हं । यह भयमं यथा पडे
 तो श्रावक नाय, गनप्रमुरमं मय पडे यह शृठा शहरम जिमतिममं श्मडा
 र्ग हं, तत्र अन्यान्य मय लुट्या जाय, मार ग्याय । परभयमं इम दुर्य मेती
 उद्यु दग्य भागमं, दुगातेका माधी हाय, पग पग जणचींती श्रापटा आ-
 णिं र्गु हाय, इम वास्तं श्रावक मय मा कडीमाख भरणी योग्य नही ।
 ए पाच तो पडे जट हं । श्रावक नाम मय तिमर त्याग करणा, तथा
 श्रा भी निम गालणं मेती गनभय उपनं डड भरणा पडे, जिहा ना
 रान हाय अग उद्या जाय ऐमी भाषा गालणी नहीं ऐमी तं दुजा मपागद
 विरमणत लीया हं, उमरा आजीविका निमित्तं अपनं परिणामकी
 र्चार्मती र्क्षेही जृठ मोलणा पडे उसका आगार हं । इहा क्रोधमान
 माया शोभ गग द्वेष रति अरति र्नीडा लजा विकथा भय हास्य इत्यादि
 अठ मोलनका मारण हं । इहा हास्यादि बात विनाटमं तथा
 काटं निमित्तं कयायादिकं परिणाम्यां जात्मा मृद चेतनाभे मृन्मयो, आल-
 पपाल मोलार्ग उमकी जयणा । तथा रेई चुगल प्रमुख दुष्ट नि कारण
 गहन दु ख र्ग । कमे तं र्ग नहीं । तत्र वेमा अपगधीकृ शिक्षा दिवा-
 वणं ममय गालणा पडे उमका आगार एतलं मन्त्र्य करिकं विना

प्रयोजन निरापराध, हास्यादि कारण विना निरपेक्ष जूठ न बालु । पाच बडे जूठ मैभी स्वमर्धी कन्यालीन गवालीक भूम्यालीक ना चाले बाल-
 ली का आगार है । उमके पांच अतीचार है, मो जाणणा । तिहा प्रथम सहमा
 स्मार अतीचार, मो किमिहू एकाएक अणुविचार्या कहै, अयुक्त तोहमत देवै,
 जो तू चोर है तथा जार है पृठा है इत्यादि विना तहकीक किया दिना
 रहै । मो पहिलो अतीचार है ॥ १ ॥ श्रावकहू तो माचात् रड विरुद्ध
 वात देखी रतो भी प्राणि कैते जाहर न करै । न कहै तो जुठेका शोष लागै,
 तत्र बडा पाप लागै, कहै थकै विरुद्ध वातका प्राणिके वाई कष्ट दोषादिक
 उपनै, तत्र श्रावकहू अतीचार लागै, विरुद्ध वात है तो आपमं जाहरमै
 आरोगी । दूजा रहस्य भाषण अतीचार । जो कोई दोनुं अपनै घरकी
 मुखदु खकी वात रगत दिग्बकै, उमहू कहै, ग्वरदार रहोगै, तुम्ह दोनु
 मिलिकै राजद्वारकी विरुद्ध वात करे हो, पै बडे तमामा देखोगै, आगे स
 विचारोगै आज पीछे ऐसी वात न करै, ऐमा कही के टोऊ रै ताई
 दु ख उपनावै, आगे भी स्त्रीजन मित्रकी अपना मिलापि की आगे भी
 किमीनी छाना वात अथवा कोई अर्थवतकी वात आपने जाणी, मा
 वात लोक मर्मपि प्रकारे, उलकी चर्चाइ मानत चलै, जाती जाती वात
 गनताइ पहुँचै, तत्र राजदद भय उपजै, कष्टका कष्ट होय मो जाय, मो
 रहस्य भाषण अतीचार दूजा ॥ २ ॥ त्रीना दारमत्रमे अतीचार कहै,
 जो अपनी स्त्री तथा भावज प्रमुख घरके लोर तथा मित्र अपना हित
 राकी कोई जानी भूलचक्रमेती विरुद्ध वात होगई, पीछे पछितारा करि
 के वह दोष छोट दीया, मो बहुत दीन पीछे कोई अनमर वह वात गडे
 मा फिर प्रकाश करै, तत्र ते लाजकी भारी अपघात जीवकू करै । तत्र
 आपहू उडी अयच लागी, आपकूमि रहत वेदना दु ग्य बडे, लोकीक मै
 अपजम बडे, इमवास्तै दारमत्र भेद तीना अतीचार जाणणा ॥ ३ ॥
 चौथा मृषा उपदेश अतीचार कहै । जो आप स्याणार्पण होरणकू पापा
 पदेश जो मत्र जभ्र जडीपुडी वतावै, जो फलाणी घुट्टीका मूल निकालो,
 फलाणी पुटीका रममै मिलायकै इतनी चीन घांटौ, गोली कर खावै
 बडी भोग शक्ति इवगी । ओर यह मत्र मा जाय जपो, मद्यमांमकी जाहत

यो, व्युत्तरा पमन हरे, जो चाग मो ग्रावो। और कहे गुनी, भमुर
 (चागर) का आहू सु फलानी आपध रुक् पातपर यत्र निर्व्याय। उन्दके
 तमन सा ॥५ शत्र भाग जाये, ता मरे, अरु कहे, विनायके अहेके
 गव मता पागप्रमव स्वग्न करे, पीछे हम कहे, जेमे देवतातिक हू बलि
 सा, पीछे तिमै रमेगी, मोले प्रहरी अप्रिमती पागामिदि होयगा, जेमे
 उपदेशे मता अरु कहे हम काम शासने त्रिपुण है, आमन २४ चोगाशीकी
 त्रिभि पागाम, तुम्ह गीसो तिमने त्रिभि प्रहारके सुरति विलाम त्रिया
 पहल ॥ १७ ॥ ती श्रद्धि रहैगी। काम चागगा, कामयेका कामाग
 तानर कामग गहन जीव सुत रहेगा, अधारे परवाडे उजुवाल पव
 यारु काम सा गमा ताग है, निरि तिधिसा विपग है, मा तुम्हक
 रताद। इयातिक गहन पाप उपदेश है। ओग्भी ओपधातिक शास्त्र
 तानर पारि। अपरा किमीह दुग् मे डालगेका उपाय बनाये उनक
 प्रतिपाद मत्रदि त्तारि गीग्याय तथा विषय चागे विमी वात नरी उठाये
 ता पाप उपदेश कवन चाधा अतीचार जागणा ॥ ४ ॥ द्विष पागमा
 ॥ १७ ॥ ना कर्षी ता लिग्य है। मा किमीह जूठा लेखा लिग्य, नामा
 गे शठा लिग्य कमरा अक्षर लिग्य पूर्वलिखित अक्षर द्विरी प्रमुख
 गथागे रगी श्रान डारि। शठी महोर परवाना उपर करे, ग्याग मव बणावे।
 गमै रुतनाईसा भट सब आया, ७ पाचमा फुटलगना अतीचार
 इहा आजीविसा निमित्त काटाचित्त अहन्तारै योगमेती आडत प्रमुख ध्या
 पारमे अधिर लाभ कष्टु धारण प्रमाण कमवेश लिखणका आगार, पे
 उमह मूलमे टाटा आये, सो न करू. जाग्भी आजीविसा - हेतै कमवेश
 सर्पातिक धारणा प्रमाण लिखनेसा आगार ७ पाचू अतीचार मृषावाद्
 उपदेश है। यह पाचू अतीचार महादुगतिके सहाई है। तिमसेती इनके
 ताने चाणणा, पिण आस्वानही।

इति श्रीडादशप्रतपिररणे द्वितियधूलमृषागादविरमणव्रत प
 उत्थमागगणिनारुत भाषा मपूर्ण ॥ २ ॥

दूहा

मदगुरु पठपरचनमी। कहिम्यु विवरण शुद्ध।
 नृतीय अत्तात्तनवन। न कह शास्त्रविक्रद ॥ १ ॥

अथ धूल अदत्तादान विरमण व्रत लिखीयै छै । तिहा प्रथम धूल जो चोरी मोटी मकल्प करिऊँ, दिवाल फोडी खात्र देऊँ, अथवा मार्गा-दिंक द्रव्यत्र लैणगी मनमा निकल्पकी भई, यह एकाकी है । अवर कोऊ है नही, तत्र जाण युझकरी के, कोड नत्रा प्रपच करि लीया चार्हाजै, अथवा पलात्कार करिऊँ पगई चीज लैणगी अथवा निचर उचाडैँ किमीकी चीज उटाय लैणगी । तथा अपने घर अनामत चीज धरि आया, फिर मार्ग है । तब नामुहर जाय । तथा ररा जराहर प्रमुग लई धरम धर । खोला ले धर । जोर किमीनि हीरा मोती रचनैऊ टीया । निमम नगका फेग सारा करिऊँ ल लैर । कम मोलका धरि देव । ए मत्र अदत्तादानका दोष कहीयै । जे कारणे करही प्रगट हँ तो राजदह रेणा, अपनम होय, अप्रतीति उपजै । इम रास्त धूल अदत्तादानक जो न्यागै, सो अदत्तव्रत है । निम अदत्तव्रत में दोय भेट है । एक द्रव्य अदत्तव्रत ॥१॥ दुजा भाव अदत्तव्रत ॥ २ ॥ तिहा द्रव्य अदत्तजो पराई चीज पूर्वोक्त प्रकारे गई पडी विमरी लैर नही सो द्रव्य अदत्तव्रत । तथा जो पराय पुद्गलद्रव्य उनकी चीन उर्णगध रसादिक रचना रूप तेवीमो विषय तथा आट र्मकी उर्णणा र पराई चीज है । व रस्तुगते जीवक अग्राह्य है । उमरी नो राजा उदयीक भावमें धसनम्र अदत्तग्रहण भावमेती तिहा श्री निनाममोक्त तच्च सुखिके पुद्गल आनदी पणो मिटारै । शुद्ध उपयोग नलमती उदर्ये अव्यापक रहै, निर्जरापहुल परिणाम मा भाव अदत्त विरमण व्रत । जिते तिते प्रकृतिओ रघ मिटो छतलो अत्त व्रतका होय । तिहा मामान्ये अदत्तके न्याय भट है । प्रथम ग्रामी अदत्त ॥१॥ दुजा जीव अदत्त ॥ २ ॥ तनि तीर्थकर अदत्त ॥ ३ ॥ चाथा गुण अदत्त ॥ ४ ॥ तिहा किमीकी चीन पिना दीधी लैर, मा स्वामी अदत्त कहीयै ॥१॥ तथा जो मचित चीज फलादिक गाढ प्रमुग्वमे तोडै । अथवा छे भेटै मो जीव अदत्त कहीयै । जे कारणे फलके जीवुन एमी रुद्धु आना टई नही है । जो हमर तुम्ह छेदन भेदन करे तिम हेतु दुजा भट जीव अदत्त जाणणा ॥ २ ॥ तीजा सो तीर्थकर दवन जो निपेधी चजि तिन क प्रहै । जैमे माधक आधाकर्मी आहार निपेध है । शाक रेताई अमच

उमन निषेध है, जो शार्चर तब तर्कियन् अदत्त है । तीजा भेट तर्किकर
 शब्द अनामक निषेध आहार ल्याया । सो आहार विना गुरुकी
 अदत्त तर्क । तब गुरु अदत्त कर्हिये ॥ ४ ॥ एच्यारो अदत्तसपूर्णा ॥
 तब माभु मे तज्या जाय, गृहस्थ तां कीई अशे तजी शकै । इहां श्री
 मं पतापं स्वामी अदत्तता त्यागकी मुख्यता है । इम वास्तं पराई
 ३७ पृथक् उदाय करिके न लेवु, जो चीन लेते चोर नाम धरया जाय ।
 गन्तव्य उपर्य । प्रथम लागे । ऐसी चीन न लेव । ओर मूदम तृण
 मण्डपगत जिाकी फाई बहुत मनाई न करै, वे चीज लेणकी जयना है ।
 इमाती चीज पटी पाउ तां जो परिणाम टिके तिहातक लेऊ नही, कदापि
 नष्टमूली चीज देखे परिणाम शिथिल भये तब वे चीज लेवु । लेकरके
 स्वयं निषेध अपना पाम राख । एतल मे जो धणी मालम हुआ तो उनक
 मूद, नष्ट करी । मारुम न हुआ ता उमस्थानके गरच । यु भी परिणाम
 न रहे तो अद्वे धमस्थानके गरच, अर्थ आप म्बु । तथा अपनी
 जमी मे स्वगतै निधान निकरमे, उनक लेणका आगार । उममे मे
 आधा अथवा चोरा राता धर्म करू जैमी धारणा, तथा पराई जमी
 मेन निधान नाकरले । तब जो परिणाम टिके तिहातक लेवु नही ।
 अरु जो मिथिल होय तो आधा आप रखु, आधा धर्ममे लगावु । तब
 कोई बेवारम अनामत धर गया है, वे कोई देशान्तर गया, उहां मृत्यु
 भया तब उनरी चीन पचमे भले रचियत जीवुकै आगे जाहरि करिके
 तां पच कहै मो करू । कदापि देशकालकी विपमता सूजाहरि करै
 उलटा लफरा लागे । दुष्ट राजादिक लोभे लगायके कहै । तेरे घरे बहुत
 द्रव्य धरया है । तू तो अपनी साहूकारी जाहरि करके थोडा दिसात
 है ऐसी उपाधि उठै । तिम वास्तै किमकू न कहू । एवे द्रव्य धर्मस्थान
 के म्वरच । वे म्वरचत धन अपणा कहणा पड़े उमकी जयणा । तथा घ
 शोरी जो धर्म मत्र चीनका मालीक तो पिताजी है । अथवा माता है
 उनकू पूछा विना वस्त्रद्रव्यानि लेवु उनकी जयणा । अरु चिम मेती मह
 हवे । मरधी होवे, जिनके धर जाणै का आवणै का स्वावणै का खिल

वर्णन का व्यवहार होवे । उनके घर गये, कुछ दिन पूरे फल पानप्रमुख
 लेने का आगार । उमका जीव आजुरदा होवे तो न लतु । तथा निर्मात्रि
 चाकरी करत व्यापारमे कुछ क्रम करिने द्रव्य मिलानेकी जयणा ।
 प्रीना प्रत पाले मो व्यवहारशुद्ध अदत्तादानप्रत । निश्चयमेती तो जेता
 अग्रघर परिणाम भया, गुणस्थानवृद्धि पधरिच्छेद इत्या मो निश्चय
 अन्तप्रत रहीये । इनके पाच अतिचार लिखे है । तिहा प्रथम तेनाहड
 अतीचार लिखे है । तेनाहड क्या कहीये, तेने कहीये चोर, आहत
 रहीये इयां लीया । चोरीकी मोई चीन ऊनकी ल्याई तिमरु तेनाहड
 रहीये । एतले चोराई चीजका लेणा । निम फारसे चोरीकी चीज
 सहर्षा मिल, तर आमा लाभमे पडया तर विचार भेरे तो पगटे चीज
 हाथ लेणी नही । ए आप चोर ल्याया है । मुझे क्या दाप है ।
 ऐसी बठ विचारणा मती लरे । पिणु य न विचार, टम अशुद्ध द्रव्यमेती
 मेरी चेतना बिगडे जाँर फटाचिन् किमही रूपत जाहर्गमे आया तो
 परुडगा जर मनभाल पूछे । महर्गमे निमनिमकी चीन गटे है मो मरव
 आक चतुरंग प्रताये । तर चोर कु तनती दरे । तर निम तिमका नाम
 पचा बताये, उहा रगकी है, उहा रेची ह, मर जग्याम चीज जाहर्गम
 ओह । गाहृकारु भी सहर्गी देगने लेईथी, मा मत्र परुडे आये । दड
 उलटा लगे । जो चीन चोरपाममे लीधी मा भी जाय मगर होय
 लोनीन रात करे । यही लारु चोरु रे ताई पटेमा देते है । चोरी मर्ग
 है । मेमी रात भले गृहस्थक सुणणी पडे, मा क्यु रीनीये । ओर ला
 कीरुमु अपजम रे । मो तो इम भयका दुख परभयका दर्शये ता
 दुर्गतिर भोगलेनाले पेहीज मो प्रथम, इहा अजाणपरु लेणेका जागार ।
 परपरये जाया, उमका जागार । निना पग्ध रहमोलकी थोडेक चीज
 रिने, उनर लणेका शागार । ए उनरु जठ माच रूपना दिग्गलायने
 न लेय, ए पडिया अतीचार ॥ १ ॥ दुजा प्रयोग अतीचार लिखे है ।
 जो चोरक प्रणया करे । तुम्ह आज कल यही निरम्म वैठि रहे है । विना
 किये उग्रम क्या ग्यायेगे ! इम दोनग क ती गज भन्या जोईये, निम
 मेती घर गीच बैठा ने न होयगा । हम तुम्हारे महव्यती है । तिम

का तथा अपनी जाति न्यातिमें अपनी बुजरगी जाणावणें क आंग हो-
यकर व्याह कर देव, वस्तुमाना तथा द्रव्यादिकका सहाज्य करे अथवा
प्रेरणादिक करिके किमी मेती दिलाव देवे । तिममेती विपयी प्राणी क
स्त्रीलाम हूवा । तत्र वे पुरुष अच्छा कहै । इनके ताई फलानैर्जनि हमा
रा घर जमाया । जो ऐसे होय तो यह व्याह हूया, नहींतर हमाग
क्या हवाल हूता, ऐमा जम अपना सुणिके गहूत रुम बखत होय । तत्र
ओर भी व्याह के अर्थी होय सो आणिके इणकी सुशामद करे, स्तुती
भी करे, साहिजमे पर उपगारी थोडे निजर आवे है । ऐमा सुणिके कहै,
कोई कार्य हूवे तो मुहमे तुम्ह कहरीया, मनम मत कीजीयो । हमारा तु-
म्हारा एनमास्ता है ऐमा सम्बध मसारमे जगा करावणा यह अनर्थ
बीज वावणा है, तिसमे धतशुद्ध न रहे, अरु काम अधिकरण बढ़ावते
समार बदे, श्रावकू तो अपने घरमे कोई इम वातका कार्यकारी हूय
तो उम कू भलावे, आप न्यारा रहे तो वैवाह करिके पराया विनाह जो
डावे वती होयके तिस कू चोथा अतीचार लागे ॥ ४ ॥ इहा अपना
घरमनधी अरु छुटसबधी व्याह करणकी जयणा सो भी परिणाम
रख लेवे । स्त्री भी पर व्याहमे मोदप्रमुख बाधे आंग होयकर कुलधर्म
जगावे, तत्र अतीचार लागे ॥ ४ ॥ तथा पाचमा तीवानुराग अतीचार
कहै, जो स्त्री उपर तीत्र अभिलाषा धारे, पराई स्त्रीके देखिके मन गीच
बहुत अभिलाषा चाहना करे । उम विना ग्विणमात्र रहि शकै नही ।
फिरते धिरते जीव उममेही रहे । अथवा देहमे काम उधावणें वं भोग
ममर्थाई करणें कू अफीम भाजूम भाग ओर भी धातूहगताल पाराप्रमुख
पट्टी बधेजकी गोली दूहे इत्यादि तीत्र काम राग मती के तत्र पाचमा
अतीचार । जोर स्त्री भी योनिसहोचवानो आपध माइया फल कर्मीम
त्रिफलालोद इत्यादिअ अगमे गोलीअर मचगवे । अत्यत अधिक उल्लठ
घेप रेरे बहु हारभार विषयलालमा करे तत्र पाचमो अतीचार लागे
॥ ५ ॥ ७ पाच अतीचार जांणू पे आरू नही । इहा स्वदारा मतोप
व्रतमाले कू छेहडके तीनु अतीचार है । आगलै दोय अतीचार जनाचार
है । तथा परदागणिरमणुतवाले कू तो ७ पाच अतीचार है । स्त्री कू

भी ऐंमर्हा अतिचार लागे ॥ ५ ॥

इति श्रीद्वादशप्रतपिवरणे, धलब्रह्मचर्यप्रतपिचारे प उद्योतमागर-
गणिनाम्नतभाषा मन्पूर्वाम् ।

दुहा

मुमतिदाइ श्री शाग्दा ताफ पदपगमप ।

पचम परिग्रहव्रततणी भाषा करु सुभेप ॥ १ ॥

अथ पञ्चमधुलपारिग्रहव्रतपरिमाण विगतपारि करिके लिखे है ।
मो जाणणा, परिग्रह मो कहिये, समस्तपणै ओर द्रव्य नानाप्रकारका
ग्रहण करणा सो परिग्रह । उस परिग्रहके दोय भेद है । एक बाह्य द्रव्य
परिग्रह अधिकरणरूप सो नवविधि परिग्रह है । दूसरा भावपरिग्रह मो
चवदह अन्वितर गठिरूप जो परभावना ग्रहण समस्तप्रदेश मेती सन्वा-
ईपणै उध मा भावपरिग्रह । शास्त्रमे मूर्च्छावृत्ति मूर्छा मो भाव परिग्रह
रहे है । तिहा चवदह ग्रथि सो रहे है । तिनके नाम । प्रथम हास्य
॥ १ ॥ मति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ भय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ दुःख
॥ ६ ॥ क्रोध ॥ ७ ॥ मान ॥ ८ ॥ माया ॥ ९ ॥ लोभ ॥ १० ॥
स्त्रीप्रेम ॥ ११ ॥ पुरुषप्रेम ॥ १२ ॥ नपुसप्रेम ॥ १३ ॥ मिथ्यात्व
॥ १४ ॥ एव १४ अभ्यन्तरग्रथि है । इहा समारी जीव कू अविस्तीक
उलमती इच्छा आकाश समान अनत अपरिमित है । यही अविस्तीके
उदये इच्छा अरु इच्छामू कर्मउधमे पडयो चारुगतिमे भटकै है । इसमे
नाइ अविरोधक पुन्यकर्ताके उदये मनुष्यभवादिक सकलसामग्रीयोग
पाया, अरु मदगुर मगति पाइ, तत्र श्रीजिनजाणी सुखी, तव चेतना
जागृति भइ, चेतना समरी तत्र विचारै । जहो हु समस्त पर भावमेती
न्याग अघी अछेद्य अभेद्य, अदाद्य, धर्मी सो इच्छापति पडयो ।
ममन् जन भेदन परिभ्रमणादि दु ख भागी परधर्मी भयो तौ अवध
ममन् परभावना मूल इच्छा ह दूर वरु, ऐसी चेतना भई । तब मम
न्त परभाव त्यागरूप चरित्र आरै, अरु जिम उ प्रहलग्नी अविर्गती
चलमेती ममस्त परिग्रह मूर्छा एकासी छट नही अरु तापमे भी टरे,
तत्र व न्युमार्ग देशविगति आदि इच्छा परिमाणव्रत धरे, उह इच्छा

परिमाण नवविधि सो लिखै है । तिहा प्रथम धन इच्छा परिमाण,
 तिहा धन च्यार प्रकारका जाणणा । सो प्रथम धन गणिम कहीयै ।
 सो जो गिणती वस्तु बेचायै श्रीफलप्रमुख ॥ १ ॥ दूसरा धरिमधन,
 सो जो तोलसै पिकावै गुलचीणी कीरीयाणा प्रमुख ॥ २ ॥ त्रिजा मधि
 धन, सो जो मापमेती विकायै । दुग्ध घृतादिक ॥ ३ ॥ चोथा परिच्छेद्य
 धन, सो जो परिचासै विकायै मोना रूपा जवहर वस्त्रादिक नाणा प्रमुख
 ॥ ४ ॥ ए च्यारु धन कहीयै । उमका सो परिमाण सो धनपरिमाण-
 व्रत । दुजा धान्य परिग्रह चोरीम जातिका लिखै है । शालिजाति
 ॥ १ ॥ गोहू जाति ॥ २ ॥ ज्यारि जाति ॥ ३ ॥ बाजरी ॥ ४ ॥ जव
 ॥ ५ ॥ मृग ॥ ६ ॥ मौठ ॥ ७ ॥ उडद ॥ ८ ॥ बूट ॥ ९ ॥ घोडा
 ॥ १० ॥ मटर ॥ ११ ॥ अरहड ॥ १२ ॥ किमारी ॥ १३ ॥ कोइ
 ॥ १४ ॥ कागनी ॥ १५ ॥ चीणा ॥ १६ ॥ बाल ॥ १७ ॥ मेथी ॥
 १८ ॥ कुलथ ॥ १९ ॥ ममूर ॥ २० ॥ तिल ॥ २१ ॥ मडवै ॥ २२ ॥
 कुरी ॥ २३ ॥ वरगी ॥ २४ ॥ ए चोरीस धान्यजाति च्यरहार सदा
 ग्याणै लायक लेणा । ओर भी धाणा ॥ १ ॥ भींडी ॥ २ ॥ मोना ॥
 ३ ॥ अन्ना ॥ ४ ॥ जीरा ॥ ५ ॥ ए भी धान्य की जातिमै है, ओप
 धादिके कोई प्रकारे काममें आवै ॥ १ ॥ थोर भी धान सामा ॥ १ ॥
 मणकी ॥ २ ॥ भुरट ॥ ३ ॥ बेकरीया ॥ ४ ॥ मारवाड श्रेष्ठ प्रमिद्ध
 ओर भी चिरीया मोठ अडकू धान, खडधान जो बावे बिना उर्ग ।
 फाल दुकाल खाइवा योग सर्वजातिके नाज उनका जो परिमाण सो
 धान्य परिमाणव्रत कहीयै ॥ २ ॥ त्रिजा क्षेत्रपरिग्रहव्रत कहै, सो क्षेत्र
 कहीयै खुली भूमी बाणै की रगीचा करणकी । उनके तीन भेद है ।
 एक जमीन ऐमी जो वरमान मबधी पाणीमें धान नीपजै ॥ १ ॥ अर
 एक जमीन ऐमी जो कुयैका पानीमें धान नीपजै ॥ २ ॥ तथा एक ज-
 मीन ऐसी जो दोनूख नीपजै, वरमातका पांखीमू नीपजै अर कूवैका
 पाणीमू भी नीपजै ॥ ३ ॥ उनका परिमाण सो क्षेत्रप्रमाणव्रत ॥ ४ ॥
 चोथा वास्तु परिमाणव्रत कहै है, जो घर हवेली दूकान प्रमुख तीनूके
 तीन भेद है । एक ~~न्यस्तक सो महराप्रमग। प्रमग त्रिजितप्रमाणक~~

मा भुहरा तद्व्याना विना उर्ची हवेली एर मालकी टां मालकी तनि
 गाऊका पाग मात मालकी भूमी, उनका जो परिमाण रखे । तनि
 व्याना विना जाम्बू, मो भुहरा तद्व्याना कृया टाका हवेली बीच होय
 मा खाता विद्वत कहीयै । उनका जो परिमाण सो वास्तुपरिमाणत्रत
 ताममा रूपपरिग्रह परिमाणत्रत लिखै है । जो विना मिके का
 र्था कृया उमका तौल परिमाण रखै । मो रूपपरिमाणत्रत जाणगा ॥
 द्रव्य सुवण परिग्रहपरिमाणत्रत लिखै है । जो रूपाकी तर अघड
 माना उमका ताल रखै । मा सुवण परिमाणत्रत जाणगा मा-
 तमा रूपद परिग्रहपरिमाणत्रत कहै है । जो रूपद कहीयै ताका पीतल
 गग कानी सीमा भगत लोहा सत्र धातुका वासणका परिमाण तौलकर
 रखे । मो रूपद परिमाणत्रत जाणगा आठमा रूपद परिमाण
 त्रत कहै है । जो दासतामी जा मोलमै तिकातुलीया मो रूपद कहीयै ।
 प्राग् गुमान्ता चाकरप्रमुख गिणतीमै नही, उसका परिमाण रखै । मो
 रूपदपरिमाणत्रत जाणगा चौपदपरिमाणत्रत कहै है, मो गाय
 भम घाडा बेल मुचर उट चकरी गडगी प्रमुख चौपगा जवि, उमका
 परिमाण गिनती बीच राख लैखा, मो चौपदपरिमाणत्रत नरमा
 त्र अपनी इजायती राखलणी, तिमका विवग लिखै । प्रथम धन
 जणघडया अथवा घडयो, पछे गोकडा रूपीया असरफीप्रमुख इतनकी
 ता जयगा रखै । परिमाण उपगत पुन्यईसू चर्धे तो धर्मप्रीति धर्मस्था
 नईमै रखै । धान्य परिमाण, प्रथम बीच इतना मण धानकी जयगा,
 तिमका विवग लिखै । इतना मण घर आश्रित रखै, इतना मण ओर
 परिग्रह प्रमुखकी जयगा । अत्र व्यापारकी विगति तौ मातमा गुणत्रतमै
 लिखै । नेत्रपरिमाणमै चैत्र इतना घीघाकी मुचै जमीकी नयगा ।
 उपगत नहा बगीचा भी इनमै आया । वास्तुपरिमाणमै घर खिडकी
 चर्धे इतनाकी जयगा । तथा दुकान छुटा तथा तपेला इतना गौगाना
 तथा खवार तथा लिछमी चर्धे पुण्यकी उदर्ये हाथीप्रमुखकी जयगा ।
 ओर परदेश सबधी कोची इतनै राखणैकी जयगा । इतना लिखै घर-
 दमैकी जयगा । भांडैका घर समराखणैकी जयगा । कुट्टन मन्त्रधर्कि

घरका आदेश उपदेशकी जयणा । मन्धी देश परदेश गये उनका घर
ममगणकी जयणा । कोई गुमास्ता चाकर परदेश गया हूँ, तब
उमके घरका सहाज्य करणकी जयणा । मिमीकी आजीविका हेतु चा-
करी करणी पड़े, तब बोह घर हवेली करारणका दधा भूपे तब उनका
करारणका आगार है । रूप्यपरिमाण इतना मेर अथवा मणपर्यन्तकी
जयणा, जनहर तो धनपरिमाणमें गिगिन है । ए मन् अपनी निष्ठाके
घरमें घरकी अजनास है थोर सोनारूपा जबहर प्रमुखका व्यापार
आश्रित मातमें व्रतमें लिखेगै । वृषदपरिमाणमें ताना पितल रागा लोहा
कासा भरत मन् मिलिके इतना मेर, अथवा ओर तोलप्रमाण रखणकी
जयणा । उपरात निषेध । दुषद परिमाणमें दासदासी जो निका सेती
लेणा तिमका राखे व्रत भाफक उपरात निषेध । गुमास्ता चाकरकी ज-
यणा । चौपदपरिमाणमें इतनी गौ इतनी बछासमेत, माडममेत भैस
इतनी रागगी । औलाद समेतकी जयणा । घोडा घोडी औलाद समेत
इतनाकी जयणा । बकरीकी गिणतीकी ओलादममेतकी जयणा । सुतरी
रागगीकी जयणा । हाथी एक च्यार दश ए चौपद अपने भोगनिमित्त
घरमें राखणा है । कोई लहखेमें अथवा किमी थोर रीति कोई सिरपाय
निनगण प्रमुखमें आया उनका आगार, ओरका निषेध । ऐसे ओरमी
घग्बरकी मो घरखरी मो घरका खरच काराद्र पीछ छोटा सब अधि-
करण मन् मिलिके इतना सईकेई रूपीयाका अथवा इजारू रूपीयका
तिमकी रखणकी जयणा उपरात निषेध । वर्षप्रत तेल मण इतना धी इत-
नेकी जयणा । वर्षप्रत किरीयाणा इतने मणकी में व्यापार करणा घरमें
रखणा मानप्रमाण तिसकी जयणा, उपरात निषेध । वर्षप्रत इतना मण
नृण विगति राखणकी जयणा उपरात निषेध । वर्षप्रत्ये इतना गुड
मिमरी खाड चीगी मुसली इतना मन् घर खरच क तिसकी जयणा
उपरात निषेध । इमी तरै ओर भी चीज घरसन्धी रखणकी जयणा ।
ए मन् ऐमी तरै पाचमें व्रतमें इच्छा घर सन्धी है । अरु व्यापारसन्-
धी तो सातमेंमें कहना है । इच्छा परिमाणव्रतके पांच अतीचार लिगे है ।
तिहा प्रथम धनपरिमाणातिक्रम अतीचार, सो जन धन ईच्छा

गात्र ह्यस तव नाममतामती डिल्लै मनमुना करै । ए पांच हजार तो
 रैरै जर्म सै । एत भी तो गडा हुआ । उनरू तो भी चहीयंगा अरु
 देणा हमर उचिन है । एमा बुचिक्क करिके रेठाके जुटे दाम रखे मो,
 आर न ग ना चापल प्रमुख तो इछा माफक धरम तयार है । फिदि
 जो अचिरम ताभ जाणै, तव धान्यका माँदा कर रखै, उनरू कहै ।
 ए तज उमन नाश है । तुम्हार घर रसो । हमरू ज्यु चहीयंगा, तैमे
 तीना जायगा । एमी तै करिके ज्यु ज्यु धरम धान खर्प, त्यु त्यु वह
 धान ख्यावै । शपनै थापानसेती यु जानै । मेरै तो इछा परिमाणमेती
 तधर धरम रखणका त्याग है । ए तो औरके धरम रखा है, मुजे क्या
 प्यण ह, एम मनके बुचिचार सै । अथवा कच्चा मण रग्या है, पर
 दशातर गण पक्का मण भी इतना गणै सो भी ऐमा करै मो प्रथम
 अतीचार है ॥१॥ दुमरा क्षेत्रप्रमाणातिक्रम अतीचार लिगै है । मो जो वा
 स्तु परिमाण रग्या है, उनमें ज्यादा ह्या । तव दोयघरके त्रिचालकी
 दिवाल तोड गिरावै, गडा एकघर करै । क्षेत्र भगिचा प्रमुखनी गडि
 ताँडिके घडा वगीचा करै मनमें त्रिचारे में ने जो परिणाम
 कर रग्या है मो अगण्ड है । जे कारणे गिणती एक अथवा दा घर रखे
 धे, सा त ही गिणतीमें अरु बडा करणमें कोखसा दोष, गणना तो
 ज्यु की ज्यु है, ऐमा कर । मो दुना अतीचार ॥ २ ॥ तीना रूप्यम-
 वणै प्रमाणातिक्रम अतीचार मो इछा परमाणसे यादा ह्या तव अ
 पनी भाषाके ग्रहना भारीतोलके जनावै, जथवा उननी नेष्टा कर रखै,
 रुठ भाजनप्रमुख भी भारी घडाय रगै । मो तीजा अतीचार ॥ ३ ॥
 चौथा रूप्यपरिमाणातिक्रम अतीचार मो तावा पतिल कामा प्रमुखने
 भाजन वा जोर गछपीठ जो गिणती रगै है । अर जय सपदा पाई
 तव भाजन गिणतीमें तो प्रतिजा परमाणे रगै वें तो तोलमें दुगुणा
 तिगुणा मेर तोलमें जनावै । मनमें यह धारणा धारै, मेरा तत तो अ
 स्वड है, गिणती तो भाजनकी नहीं भागी है, अथवा कच्चा तोल
 रग्या गया है । किन्ही परदेशातर परकेका व्यग्रहार है । अथ अ
 पने अज्ञानमेती रहै । कच्च पक्के कोण चरचा है । हमारे तो मव

जनता ममत मेर प्रमाग कइ हमनै सेर बढ़ाया नहीं, बाह हमारी खा-
तरदारीके वास्ते भी कीपनै बनाया नहीं तो हमारे तो सेरसे प्रतिवा है ।
कचे पकेका हमारे कइ डिमात्र नहीं रखवै है ऐसा करै सो चोथा अती-
चार ॥ ४ ॥ पाचमा छिपद चतुष्पद परिमाणातिक्रम अतीचार, सो
दाम दामी घोडा गाँवल और भी चौपद प्रमुग्न अधिक हुआ जाने,
तत्र बेच देवे । अथवा गर्भग्रहण अत्रेग करारै, गिणतीर्मना बेचै, तत्र
गर्भग्रहण करारै । अथवा भाई पुत्रकी निष्ठाकर राखे । एतलै अपना
परिमाण माफक रहखमै रखै । ऐसी कुटिलता करै, अपनी अज्ञानतां-
इसु मा प्राणीको पाचमा अतीचार लगे ॥ ५ ॥ ए पाचो अतीचार जा-
गणना प आदरणा नही है । ये इहा क्षेत्र वास्तु चतु'पादादिक कोई मा-
गनमै आरै वे प्रिकार्ये नही तिहा तक अधिक रखखा पई उनका आ-
गार है ।

इति श्रीद्वादशव्रतटीपे पचम बूलपरिग्रहपरिमाणव्रत प उद्योतमा-
गरगनाणिकृतभाषा सम्पूर्ण ॥ ६ ॥

दुहा

प्रममृ गणधर पदकमल श्री गीतमलन्धिनिधान ।

अथ गुणव्रत विवरण कइ पष्ठमदिशि परिमाण ॥ १ ॥

अत्र तौत्रव्रत छठा मातमा आठमा इणक गुणव्रत करिये । ति-
मर्म छठे व्रत बीच दिशिका विचार रहीम, इम हेतु इग व्रतका नाम
दिग्परिमाण, सो लिखे है । जिय राख्य पूज जो पनाणुव्रत कहै, उनक
गुणकारी है । ऐ तीनु व्रतमै पचाणुव्रतकी होय है । इम वास्तु गुणव्रत
कहायै । सो किम तरामै, जय दिशि परिमाण कीया तत्र दिशिनियम क्षेत्र
मै बाहिर रहै जीव उनहु अमयदान दीना तत्र पहिलो प्राणातिपात वि-
रमण तिमकी मज्जतुती भई । तथा उसक्षेत्र गत जीवों मैती जूठ बोलखैका
त्याग हुआ इतनै दुजो मृषापादविरमणव्रत तिमकी पुष्टी भई । तथा उस
क्षेत्रकी चीज अण ई लैखका त्याग हुआ, इतनै तीजा व्रत अदत्तादान
विरमण तिमकी पुष्टी भई । तथा उम क्षेत्रगत स्वामिती काम भोगवि-
लाम भिख्या, तत्र चोथा व्रत मैधुनविरमणकी पुष्टता भई । तथा उस क्षे-
त्रगत वस्तु वयविक्रय निषेधपेती परिग्रहमूर्च्छा कम भई, इम वास्तु

पाचमात्रत परिग्रहपरिमाण तिमकी भी पुष्टिता भई । तथा उस क्षेत्रका व्यापार गवधी अठारह पापस्थानका त्याग भया । तिसवास्तै पाचू व्रतकू गुगशी है । तिस कारण इनकू गुणव्रत कहीये । तिहा दिशिपरिमाण मो न्यारू िशि दिशि अरु ऊर्च तथा अधोदिशी परिमाण व्रत होयै दिशि परिमाण के दोय भेद है । एक व्यवहार, दुना निश्चयमेती, तिहा व्यवहारमेती दिशि परिमाण मो स्वभावायै दसू दिशि जागैका अरु आत्मी भजनेका अरु जहातरु व्यापारकरणकी चाह उनका परिमाण करके रखे, सा व्यवहारदिशि परिमाणव्रत है । तथा निश्चयमेती दिशि परिमाणव्रत सो जो गति गमन है, मो कर्मका धर्म है । कर्मवमि पद्मा-चीव च्यारू गतिभ भटकै है । परानुयायी चेतना भई तब परस्वभाव अनुसरता हुआ । नीव तो शुद्ध चैतन्य अगतिस्वभाव है । स्थिर निश्चल स्वभावव्रत है । ऐमा श्री जिनरागीने उपगार सेती जाण्या, तब चेतना शुद्ध स्वरूपानुयाई भई । तब आपना अगतिस्वरूप जाणिके सब क्षेत्र मो उदाम रहै, एतलै सबक्षेत्रम् अप्रतिवधक भाँये वरतै । सो निश्चय दिशि व्रत है । इहा दसू दिशिमा परिमाण मा दोय भेद, एक चलवटका, दूजा थलवटका । तिहां जलवट जिहां जलमै बैठके जावना अरु वनवट जो रुसकी जमीपरै जावना । तिहां जलमार्गै फलाणा बिंदरतक जावगा, तिस वास्तै जलमार्गकी गिणती सरयामै आये नही । तिम वास्तै बिंदरका नियम रखे । तिहा पिण पवनके तथा भेद आधी प्रमुखके तोफानमै काहाका वहां ले जाय नारै । अरु अजाणपणै भूल-त्रक मेती अधिक बतारै, तिसतै गिणती जिस बिंदर कीथी, तिसतै दूर और बिंदरमै ले जाय रखै तिसका आगार है । तथा थलमार्गै अपनै जिस क्षेत्र वन ऊर्चया हूयै, जिहासु च्यारू दिशि च्यारू दिशि जोजन गाउ कोश जितना जावगा, तितनेकी मुझ जयणा । चोर अथवा किसी म्ले-च्छादिकके बधनमै पत्यै, ले जाय अधिकै गाउ कोमै तो बाकी जयणा, परवम पडे दोष नहीं । उर्ध्वादिशि कोम चारैकी जयणा । अधो दिशि दो जोयणा उचा घड़ी नीचे उतरण सो गिणतमै नही । नियम क्षेत्र बाहिरका किमीका पहिचानसैती आये । ने वाचनेका फिर लिखनेका

आगार । अपनी तरफसेती बिनाकारण पत्रादिक ना लिख् । परदेशकी बिकथा छूनेका आगार, कोई लहणादिक मोट्टे प्रयोजन आजीवीकारे भयमेती हक्कप्रमुख लेनह आदमीप्रमुख तगाई भेजणेका मुझे आगार । ओर दिशिपरिमाण ५०० पाचमै कोस प्रमुख परिमाण रख्या है । पीछे कोई पाचक उदयसेती राजभयमेती आजीविका भयसेती जिस गाम अथवा नगर्मै वमतेथै, तिममै सो दोयमो कोश दूर जाय रहै । तो भी पूवे क्षेत्र परिमाण रख्या हुंता, सोई रर्ये पिण छोडे नही, अरु जो आगर्म जो आगार रख लिया है, तैसे अपना निवास जहां नवा कीया है । तिम तै भी पाचसै कोश गिण लेव । नही तौ पूवे प्रतिज्ञा करी है सो पाले । ऐसी निगतसेती छठा व्रत है । उसके पांच अतीचार है । तिहां प्रथम ऊर्ध्व दिशिप्रमाणातिक्रम अतीचार, सो अपने अनामोगसेती बेसुरतीका लीया तथा कोई कारणमेती ज्यादा गमन करै, तब प्रथम अतीचार ॥ १ ॥ ऐसीतरे अधोदिशि प्रमाण अतिक्रमै तब दुजा अतीचार ॥ २ ॥ तथा तिच्छा च्यारु दिशी अनामोगादिके प्रमाणातिक्रमै तब तीजा अतीचार ॥ ३ ॥ इहां अनामोगे आप जाय, अथवा नियमभग भये गुमास्ताप्रमुख भेजे तब चौथा अतीचार ॥ ४ ॥ जो एकदिशि सो जोजन रर्ये है अरु एरुदिशि पचाम रर्ये है, कयहक काम पडे दौडमै जोजनका जाणैका तब पचाम योजन आर दिशिके रर्ये थे सो तिशि जाणैका, जिम दिशि जाणैका पडे तिस में मेल लेवे, ऐसे अनान मे रर्ये सो जोजन पूरे दिशि के मोरुले रर्ये थे तिसमै पचाम कोश दक्षिण दिशिके थे, सो इसमै आन गिण लेव । दोड मंकी गिणती भई यू न गर्ये अरु आज दिन ऐमै ऐमै दिशि गए उस में मेरा व्रत भी न भाजेगा । एक दिशि काम पड्या उघर करै नही । जिस दिशि जाणै आवणेका नियम रर्या होय, तैसीहीज प्रतीज्ञा पाले । उलट पलट अपनी गरज पड्या करै ऐसी कुनिकल्पना बिचारै तब चौथा अतीचार ॥ ४ ॥ पाचमा अतीचार विस्मृति अतर्धान सो दिशि परिमाण करिके ते दिन पीछे बिसरी जाय । जो मेने तो इणदिशि कृती सो जोजन रर्ये थे अथवा इस दिसि ते रर्ये हूत ऐसा

पञ्चाशत्त्रय परिग्रहपरिमारा तिगकी भी पुष्टिता भई । तथा उम क्षेत्रमा व्यापार करती अठारह पापस्थानका त्याग भया । तिसवास्तै पांचू व्रतहू शुभकारी है । तिम कारण इनहू गुणव्रत कहीर्ये । तिहा दिशिपरिमाण ना च्यार दिशि त्रिदिशि अरु ऊर्ध्व तथा अधोदिशी परिमाण व्रत होवै दिशि परिमाण के दोय भेद है । एक व्यवहार, दुना निश्चयसेती, तिहां व्यवहारसेती दिशि परिमाण सो म्बसायाये दसू दिशि जागैका अरु प्रादशा । त्रिगेहा अरु जहातक व्यापारकरणैकी चाह उनमा परिमाण करके रफे भा व्यवहारदिशि परिमाणव्रत है । तथा निश्चयसेती दिशि परिमाणव्रत मा जो गति गमन है, सो कर्ममा धर्म है । कर्मवमि पड्या जाव च्यारू गतिमें भटके है । परानुयायी चेतना भई तब परस्वभाव अनुसरना हुआ । तब तो शुद्ध चैतन्य अगतिस्वभाव है । स्थिर निश्चल स्वभावात है । एमा श्री जिनमार्गीके उपहार सेती जाण्या, तब चेतना शुद्ध स्वरूपानुपाई भई । तब आपना अगतिस्वरूप जाणिके सब से मा उठाम रहे, एतलें सत्रचेतस् अप्रतिमधक भाँरे चरतें । सो निश्चय दिशि व्रत है । इहा दसू दिशिका परिमाण सा दोय भेद, एक चलव्रत, दूजा धरव्रतका । तिहां जलवट जिहां जलमें बैठके जावना अरु धरव्रत जो सुसकी जमीपर जावना । तिहा जलमार्गे फलाणा बिंदरतक जावना, तिस वास्तै जलमार्गकी गिणती सरयामे आवै नही । तिम वास्तै बिंदरका नियम रखे । तिहा पिण पवनके तथा मेह आधी प्रमुखके तोफानमें काहारा कहां ले जाय नाखे । अरु अजाणपणै भूलचूक सेती अधिक बनावै, तिसतें गिणती जिस बिंदर कीधी, तिसतें दूर और बिंदरमें लें जाय रख्ये तिसका आगार है । तथा थलमार्गे अपने जिस चर व्रत उचर्या हवै, जिहामु च्यारू दिशि च्यारू बिदिशि जोजन गाउ कोश जितना जावना, तितनेकी मुसै जयणा । चोर अथवा किसी म्लेच्छादिकके बधनमें पड्ये, ले जाय अधिक गाउ कोस तो घाकी जयणा, परवस पडे दोष नहीं । ऊर्ध्वदिशि कोम चारैकी जयणा । अधो दिशि दो जोयणा उचा चढी नाचे उतरण सो गिणतीमें नही । नियम चैत्र चाहिरमा किसीका पहिचानसेती आवै । वे वाचनेका फिर लिखनेका

पायकै अपनी चेतना जगायकर स्वरूपानदी चेतनविलास अनुभवै सो निश्चय भोगोपभोगगत कर्हियै । अथवा भोग शब्दका अर्थ लिखै है । सातमा व्रत के दोय भेद है । एक भोग, दुसरा उपभोग । सेती कर्म-व्यापारादिक क्रियारूप य है । सो तिहा भोगके फिर दोय भेद है । एक उपभोग दुजा परिभाग । तिहा सो चीन एकही बेर भोगमै आई आहार पुष्प मिलेपनादि । परिभाग सो बेर बेर भोगमै आयै । भवन वस्त्र स्त्रीयादिक । तथा कर्मसेती यु है । उसके भेद नहु है, सो आगे लिखै है, तिहा श्रावक वृ उत्तमर्गमागें निरनद्य आहार लेखा । ते शक्ति नही तो मचित्त परिहारी होणा । ते नही तो सचित्त परिमाण कर लेखा । अरु गार्गीम अभक्त रत्नीम अनतमाय प्रमुख दुर्गातिहतु जाणी अवश्य त्याग करणा । उममै भी पूरी शक्ति न होवै तो अपना वरिय मदका पश्चात्ताप कर परिमाण करि लेना । तिहा प्रथम गार्गीश अभक्त लिखै है वड १ पीपल २ पागम पीपल प्लक्ष भी पीपीलसी जातिविशेष ३ तथा उवरि ४ कालुवरि ५ ए पाच फल अभक्त है । इन पाचूमे मखी सरखी जीव है । आकार मेती सरीसै होत है, ए वास्तै पाचु अभक्त है । और सही-त मध ६ मदिरा ७ माम ८ मरन ९ । ए च्यारु निस्तर जैमा इन चीजका रंग है तैसाही अभक्त्य जीव उपजै है । अरु ए च्यारु महा विगय है, बहुत विगाड करै, कामादि दोषकू नढावै । पहिले तो ए हिंसा विन होता नही । अरु पीछे भी चेतना कू बढकायै इम वास्तै अभक्त रहे हैं । अरु पुराणादिक वैष्णव मार्गमै, तथा कुराणादिक म्लेंच्छादि शास्त्रमै भी मदिरा मामका नहुत दोष रूखा है । इम वास्तै स्वपरदर्शन मँ भी ए चिज त्याज्य है ॥ ६ ॥ ए नव भयै, और भागप्रमुख लक्षणमै चेतना विगडे सो इनमै ही गिणना इममै भी सगदी रहै । तेहथी त्रम जीवनी बहुत उत्पत्ति है । इम वास्तै यह भी न्याज्य करणा । तथा हिम मा वरफ, सो भी अभक्त, अपकायकै असरय जीव है, पीछे चेतना कू मरु करै, सरदी करै । ए चीज खानेसा कठ जरूर नही । बहुत आगभीक । स्वादिष्ट भी नही है । बलादिक घृदिकारक भी नही है । अरु श्री मर्वनपरमेधरजी प्रतिपिद्ध है, इम वास्तै अभक्त है । इसमै प्रस-

जीव ४ पांडे १० दिशि परिमाणमे रुम नेश करै, अथवा कागदप्रभु
 रसै लिखा रग्या न रै । अथवा चुद्ध विलाम मदता भई तिमसेती
 वदत दिन तीति प्रितकी भ्रमणता वृत्ति होय जाय तब जादाकै कम गि-
 रती करै सो पाचमा अतीचार ॥ ५ ॥ ए पाच अतीचार जाणणा पे
 जाणणा नरी ।

इति विद्याशब्दत प्रियण दिशिपरिमाणगुणत्रत ५ उद्योतसागर
 गणिनात्रत पष्ठमत्रतभाषा सम्पूर्ण ॥ ६ ॥

रूहा

त्रत सप्तमरी तिधि रजु पालं भविचनलांग ।

यह है गुणवत मगदू नामे भोगोपभोग ॥ १ ॥

अत्र भोगोपभोग गुणवत दुमग, जे कारणे ए त्रत आदरगैमेती
 सचित चिचका ग्याणना छोटे । जवना परिमाण रर्यै, तथा निममे
 उहु जाग्म होय सो व्यापार न करै, बहु हिंसादिअ अरुण्य करणी
 पडे ऐमे का त्याग करै अभक्ष तनै, इतनै नियम इम त्रतमे
 लीयै जाय, तिम वास्तै पाच त्रतोभी मजजुती है, तिरतै गुणवत
 करीयै । अत्र सली सत्र लियै है । तिहा भोगोपभोग त्रतकै दोय भेद
 है । एक घत्रहार ॥ १ ॥ दुजा निश्चय ॥ २ ॥ तिहा भक्त अभक्षनी
 ममजि पायक, और भी आश्रय मवर की ममजि पायकै खानपानादिक
 इन्द्रिय सुखकै प्राण उमरै शक्ति परमाणे उहु आरभी तजै । अल्पा-
 रभी क रर्यै सो व्ययगार भागोपभाग व्रत करीयै । तथा निश्चयसेती
 जा तिनवाणी गुणीकै वस्तुतचका स्वरूप पायकै त्रिचारै जो जगतमे
 पराई चीज ले ग्याणी सो हगम कहीये, जो पराड चीज खाये सो
 हरामगार कहायै । तिम वास्तै जो नेकीके लोअ है सो अपनै हकर ४
 पित्राणै, तिम राह चीच चल पराई चीजका सुपनैमे भी जीव न राखै ।
 यं मै भी शुद्ध चैनन्य भाव धारि परममत्पुरुषकी जाति होयकर सडे
 भी गिरै भी जाती भी रहै । ऐमे परपुद्गल के पर्याय है । जगतका
 जूट विसना भोग मुजै हराम है । पराया भोगनीयै मैती जस नहीं,
 मामध्य नही इम वास्त परभाव छोटे । स्वगुणवृद्धि हवै गेसी समजि

उहा रात्रिमें छत्त दिवालप्रमुखमें आश्रित जीव बहुत बैठे हो। वे सता
 पै व्याकुल हवै अग्निमें पड़े, तथा पतगप्रमुख जीव चक्षु इन्द्रियकै विषय
 व्याकुल होय के अगनिमें हपापात जल भरै। छात छपरमें रात्रिमें सर्प
 गिलोई बुलायतरा मछर घट्ट वमते हवै ऐसमें ताप लागै तत्र व्याकुल
 होय के सर्पादिक गरल डारै, ए भोजनमें आवै, तत्र आत्माका घात
 हवै। अरु दिनका कीया धरि रग्ना हवै मो अन्न ग्वावै उमर्म भी
 चीटी प्रमुख जीव चै उमकी खर्ग रात्रिम न पड़े, वे खावै तत्र बुद्धि
 नाम वे, शास्त्र बीचभी कदा है मधा पीपीलिका हन्ति इमनास्ते रात्रिको
 भोजन न करणा। अथवा जिमणा, ए सर्प निषेध कहै। और वासण मेलते
 करते रात्रि करू जीवकी रग्या न पलै। अरु रात्रिके ग्याणनाले परभय
 उलक मजार मृसा सर्प वागुल चमचेडका भय पावै। धर्म दुर्लभ पावै।
 अरु आप रात्रि भोजन करै तत्र पुत्रपौत्रभी वह डग पड़े, कुचाल चलै,
 अशुद्ध परपरा चली जायै। अरु आप तजै तो पल्ले भी सुचारा चलै।
 रात्रि भोजनमें प्रत्यक्ष जीव हिमा दर्खीअ अन्य दर्शनीका जल बीजल
 नै जागू धर्म पाया हता, ए जिनाना निरुद्ध रात्रि भोजन है, ए प्रत
 पण मुनिक पचमहाप्रततुल्य द्रष्टा उचरारै है, ए गान्ते सर्पथा त्याज्य
 है अभक्ष्य है ॥ १४ ॥ तथा बहुबीज मो जिसमें गर्भतुच्छ अरु बीज
 नहत सो तुच्छ फल कहारै, रीगण वनस्पति जाति विशेष पटोल खस-
 खम छार पपोटा प्रमुख इन फलामें नितर्न बीज तितर्न जीव ज्य टाक
 भरी निर्लीमें तेर मा जीव तो खमरामम तो उनमेती कंडगुणा होवै
 इमनास्ते थोडा खारण जीव घात नहत हवै। कष्ट उदरवृत्ति न हवै। तथा
 रीगण प्रमुख बहुबीजी चीज सारे तो पित्तादिक रोग का हेतु है जिन
 आत्मा निरुद्ध है इम वान्ते अभक्ष्य है ॥१५॥ तथा आचार जो भातिका
 आवपेलीना पाडल नीतूना रै अत्रडा मरुदा वारुडी प्रमुखका ओर
 अद्रर जर्माकद गिरमिग इत्यादिकका आचार अथवा राईडा दिन तीन
 उपरात अभक्ष्य है, तुअ है, त्रम जीवकी खानि है। चील प्रमुख तौ
 यौगहीमु अभक्ष्य है। उनका फिर आचार कैमा, विपथा
 किनि घाग्या तिमरा म्हु कहणीमे नावै चौथे तिन उमर्म

न टाप गगदाप यह है ॥ १० ॥ तथा विष जो अफीम प्रमुख चीन
 मा वसन्त है । जे गरखे अफीमादिविष चीज ग्याँमेती पेटके जीव
 ज्मि नगेगति प्रमुख मर जायँ । अर चतना मुरझाए । फेर इस
 गाँ श्री डर पडे खारुँकी गुटे नही । मांताद बसत के बसत ना मिले
 ना रहत दोष उपन, शरीर शथिल पडे, अर अमली को घत करणा
 दुस्तर है । अर भाव बदल जायँ । जमल करै तत्र बहुत और तर अरु
 उरै तत्र अहुँ गाँ अमान ओग स्वामि छोडी परामि पडणा । अर खानेमे
 पटी मन्ता, तथा अफीमादि विष खानेवाला पडी नीति करै लघु-
 न विष तिम चत्रम अमथार जीवकी हिंसा होय । जिहा ताई पमा
 रना मन्दा जाय निहातर पथीप्रमुख जीव मर जायँ उनकी गधमेती
 इम वास्त यह भी अभक्ष गिण्या जाय, मोमल चक्रनाग हरताल प्रमुख-जे
 चीन इममे आय ॥ ११ ॥ तथा कर गडाहा जो ओरा जोमेष राचा
 ॥ ११ ॥ गल उपरै गडरैके मिले है, अशुद्ध द्रव्य है, इनमें भी बरफना
 जमा महादोष है जिनावा विरुद्ध है । इस वास्ते अभक्ष है ॥ १२ ॥
 तथा खडी मट्टी बहुजातिनी पृथ्वी सो अभक्ष जे कारणे इनमे भी अ-
 सरय जीव है, फेर ए चीन ग्याँ मेती पेटमें घृत जीवकी उत्पत्ति
 हुन । ए पादुगेग आमवात रज्जी व पथरीप्रमुख रोग बहुत होय,
 गुरुत मिट्टी खाय उमका मुख का चेहरा पीला होय मुरखी मुख की जाती
 रहे कोई जानि की मिट्टी मे मंडर प्रमुख जीवकी जोनी है । ये मरटी पायने
 चीन मृक्ष उपजता होये, ऐमैमे भक्षण करते पंचेरी जीवकी भी हिंसा होय
 जायँ । जिनावा विरुद्ध है, इम वास्त अभक्ष है ॥ १३ ॥ तथा रात्री
 भोजन ना प्रत्यक्ष दोष निघान है । इह लोक दु ख हेतु है, रात्रे च्यारु
 आहार अभक्ष है जे कारण रात्री भोजन जो जैसा आहार उसमें ऐसैही
 रगके तमस्काई के जीव ऊरने, अर आप्रित जीव मपातिम बहुत जीव
 आय मिले । रात्रीमे भेल मभेलनी स्वर न पडे, तथा प्रसंग दोष बहुत
 लगे, जत्र रात्री ग्याँका डर होय । तत्र नित्य रमोर्ड करणी पडे तिहा
 जीवका सहार हूँ, आमकृत्तका आचार न पले, मृक्ष असजीव निजर
 न आये अरु जत्र निजर आया, तत्र चतना कनु न हूँ । अमि जलै

नीली मरमाई रही है सो चीज वामी भई, चीज एक रात्रि व्यतित भई सो अभक्ष, मिठाई उपकालमें अच्छी शुद्ध घेस मनी हूँ तो उत्कृष्टा पनर दिनका काल है पीछे अभक्ष है । अरु जो उसका वर्ण गंध मितानी बदल गया तो काल पहिले मी अभक्ष है । तथा उष्णकालमें मिठाईका काल २० गीम दिन उपरांत अभक्ष, । तथा शीतकालमें मास एक १ काल उपरांत अभक्ष, तथा दही मोल प्रहर उपरांत अभक्ष है । पै एक राति वीतिनी आचरणा मठेका काल भी इमीतर, इण्णरीतसेती जो काल जिमना शास्त्रम कहा है सो पूरा हुआ पीछे वह चीज चलितरम हूँ । इम माँट अभक्ष जे माँट चलितरम हूया । तर अमर्यात वेडद्री जीव उपनै, इम वाम्त त्याग है ॥ २१ ॥ तथा उचीम अनतकाय भी अभक्ष है । जिम कारण सुईकी अर्णा उपर कृतमूल रहै । उममें अनत जीव है । सो मर सूक्ष्म रात्र पृथ्वी पाणी अग्नि वायू अरु प्रत्येक वनस्पति ए नमजातीं मर जीवमेती अनतगुणा जीव सुईके अग्रमें कदकी जो मनी है उसमें एत जीव है इम वाम्त सत्र अनतकाय अभक्ष है ॥ २२ ॥ इति वारीश अभक्षका निररण । अब बतीस जाति अनतकाय लिखे है । जो भूमि पीच कद हूँ सो एमें सत्र कदजाति अनतकाय प्रथम ॥ १ ॥ छरणकन्द जो जमीकद ॥ २ ॥ वज्रकन्द ॥ ३ ॥ हरीहलदी ॥ ४ ॥ अद्रक जो कद ॥ ५ ॥ हग्याकचूर ॥ ६ ॥ सतावरि बेलि औपधी ॥ ७ ॥ सोफआली ॥ ८ ॥ कुमारपाठा ॥ ९ ॥ धोहर जो सीज तथा लवा सीजकी जाति ॥ १० ॥ गिलोय ॥ ११ ॥ लमण ॥ १२ ॥ वसक्रेला ॥ १३ ॥ गाजर ॥ १४ ॥ लखीयो ॥ १५ ॥ लोदीपन्ननी ॥ १६ ॥ गिरमिर कच्छुशे प्रमिद्धा ॥ १७ ॥ किमलये कोमलपत्ता जो नये उगत, सबगाढके पत्ता तथा मर वनस्पतिका जो अकुर उमता, अकुर प्रथम अनतकाय हूँ, पीछे मोँट हूँ जब कोई प्रत्येक वनस्पति हूँ अरु कोई अनतकाय रहै ॥ १८ ॥ खरमुआकन्द कमेर अनतकाय ॥ १९ ॥ धेग कहीर्य मोथा केई जातिका ॥ २० ॥ हरी मोथा ॥ २१ ॥ लूणाशुक्की जालि ॥ २२ ॥ गिलोडा ॥ २३ ॥ अमृतपेलि ॥ २४ ॥ मूला ॥ २५ ॥ भूमिरूहा कहीर्य छत्राकारे देशमापा सापका

नियमा ढेरी नीव उपजै । अर जो जठा हाथसे छूण तो पचेरी
जीव उपजै । अन्य ऋर्गर्गके शास्त्रमें भी आचार नरकद्वारमें गिण्या है ।
उमरामें अभक्ष्य है मर्वथाम ॥ १६ ॥ तथा घोलबडा अभक्ष्य है । जे
फाग्ये ते डालने हूँ मो विदल धान जो कलाई बुट बोडा मृग प्रमुखका
हाथ पे पेट नर कचै गौरम जो दही मठा उसमें डालै सो ग्वाणा
अभक्ष्य है जिस का रा विदल अर दहीमठा सयाग मात्र तत्काल
भंडरी जीव उपजै जो कछु चीज विदलकी हूँ सा मठे मिलै अभक्ष्य
है । अर विदलमें निमरास्तै अनाजकी डालि हूँ चीकनाइ न हूँ ।
विदल रा मगमकी डालि हूँ पे विदलदोष नही उममें चीकना है ।
इहा जो मठा गरम करै, विदलमें मिलावै तो दोष नही तथा दूधभी
जो उष्ण न स्या हूँ तो विदलकी चीजमें के साथ खानणा अयुक्त है ।
बट्टरी जीवनी उन्पाति हूँ, इमरामें विदल अर कच्चा गोरम के साथ
नै चीन अभक्ष्य है । तथा बैगणजानि अभक्ष्य है । जे कारणे बैगणमें
नह चीज है, तथा बीटमें त्रम जीव मुक्षम रहैतै है, अर काम सब्राक
मदावै, मति घीठी करै, ए द्रव्य अति अशुद्ध है इमकी जाति सर्व
पाण्यी । जौ हरीकी सूके खानेकी आजा है अर इनकी तो सूकीभी
निषेध है । इमवास्तै निषेध अर अभक्ष्य है ॥ १७ ॥ तथा अजानफल
सो भी अभक्ष्य है । जिस कारणे अजानफल जो है, उसकी तरह गुण
दोषकी मालिम नही । क्यु खाई जाय कदाचित निषफल होवै तो
आन्मघात हूँ । व्यग्रचेतना हूँ इसरास्तै अभक्ष्य है ॥ १९ ॥ तथा
तुच्छफल टौलूड जो बननेर पीलू पीचू प्रमुख तथा अत्यंत कोमल फल
फला ए भी अभक्ष्य है । जे कारणे ए चीज बहुत भी खायतो भी तृप्ती पूरी
न हूँ । अर पीछे बहुत दोष लगै, अर जो फल खायकर उमकी गुठ-
ली डालै, उसमें ममूर्च्छिम पचेद्रियजीव असख्य उपजै । तथा बहुत
तुच्छ फल खावै तिमहू सब रोग उपजै ए वास्तै अभक्ष्य है ॥ २० ॥
तथा चलित रम अभक्ष्य जिसका काल पूरा हुआ । म्वाट बदल्या, घेम
जाये ए मा चलितरम कहीयै बुद्धा मध्या अन्नवामी रोटी सिरा कचो
री तरकारी म्वाचिडी बडा नरम पुरी इत्यादि अनेक रमोई जीवने पां-

उदय अतिदुत्तर विचारिके रहूल उस्तुता परिमाण ररया है । तिनमेंमे
 फेर नित्यरा आश्रय निरागणै रू मत्तेप रगणै वृ चउदह नियमकी दिन
 प्रति धारणा रागै । तिहा प्रथम सचिन परिमाण, मुख्य धृत्तिमें तो था
 वरुह तो मचिन न्याग चढियै, जे कारणे मचित्त वस्तु अनाहार में
 च्याग गुण है । प्रथम तो प्रासुक जलादिख पीरते और मरता मचित्त
 का त्याग हुआ, जतनाई अचित्त नहा है । तत्र ताई मुखमां प्रतेप न
 करै । दुजा रमनेदियरा जीतना हुआ रेमाई स्वाद मचिनमें हूयै तो भी
 न गारै । वेतीर चोन तो पिना पचाई स्वाद लगे और मरता त्याग
 हुआ । तीमरा अचित्त जलादिख पीरते कामचेष्टा प्राति हूवै, घडी घ
 डी उपयोगमें जीउ रहै रमे मचित्त हूवै । चौथा नितना द्रव्य जलादि
 अचित्त रीना, उनमेती जीव विराधना हूई चेतना इतनेमे रही और प्र
 तिचरण अमग्य जनत जीवापत्ति हूवै है, उनसे विगेरी भार मिटो
 ह्य्यादि और भी बहुत गुण हे । पै रनेक यु कहै है । जो अचित्त करन
 में छत्रायकी विराधना होती है इम बाम्ने एरही कायकी विराधना
 भली यू कहै के मचित्त त्याग नही करै तिणै निनशामनरा रहस्य
 नही पाया । जो मचित्त परिहारमें आत्मदमनता उद्युग्य निरागणता
 मन्त्रिपयकपाय परगतिप्रमुख अनरगुण हूयै । सो नही नाण्या । म्थन्या
 बहूली हूवै है तिनमेती मचित्त त्याग में बहुत लाभ है । यू आगम में
 रहस्य बहुत मुचम है । दिनही छत्रस्थनीय मती आगमका पात्र पावणा
 ममरुल है । जत्र हठ छोटीकर महत बुद्धिरा रगच ररे तत्र ररु पावै ।
 इम बाम्ने साहिर अन्वमतिकी कृपुत्ति गुणिरै म्नायणा नहै । जैनमली
 अतिगभीर है । इय बाम्ने मुख्य पिण मचित्त परिहारी हूवै ते नही हूवै
 तो मचित्तका परिमाण लज्यां, इतन मचित्त मुझै मोरुल है ॥ १ ॥
 तथा दूमग द्रव्यनियम तिहा धातुमय शिलाका पात्र प्रमुख तथा अथ
 नी अगुली प्रमुख पिना जो मुखमें चारै सो द्रव्य कहियै । ' परिणामात
 रमापत्र द्रव्यमुच्यते । ए द्रव्य लक्षण रहै । तिहा रिचडी मोदर बडा
 पापट प्रमुख बहु द्रव्य निष्पन्न है तो भी महंकी रोटी तथा पाट गुध
 री पेली दोकली प्रमुख ए सर्ग भिद्य द्रव्य कहियै । जे कारणे नामान्त

उमगा ॥२६॥ रथुलाकी भाजी ॥ २७ ॥ बग्हा ॥ २८ ॥ सुगवल्ली नो
 ग्नि वटी माग जैमी हवे ॥ २९ ॥ पल्लभा भाजिजाति विशेष ॥
 ३० ॥ चोगल अनालीकी टेगही चीन गरमे नही तिहा ताई वेदि
 ना अनतकाय ॥ ३१ ॥ जायुस्त्रुड विशेष, रतालु पींडालु ॥ ३२ ॥ तिलफूल
 ॥ ३३ ॥ पलाय गमान्य अनतकाय जाति नाममात्र कहा । और विशेष
 ता इन ॥ ३४ ॥ फोर्ट वनस्पति पचाग अनतकाय है । फाई वनस्पति
 फल अनतकाय है । किमीका पत्ता अनतकाय किमीका फल अनतकाय
 है । किमीका छाल अनतकाय, किमीका मूल अनतकाय है किमीका
 पान अनतकाय है यू किमीहीका एक अंग, किमीका दौय अंग किमीके
 तीन अंग किमीका च्यार अंग, किमीका पाच, किमीका सत्र अंग अ
 नतकाय है । जिममें अनतकायदे लउन लिखे है, निनग अनतकाय
 पलिनी जाय सो लिखे है । निमक पत्ता फल प्रमृत श्री मीरा जो नम
 मालिम न पर गुप्त हवे । जिसकी सधिनी मालिम न पड़े, जिस के फल
 गुप्त हवे ना ताडतैम रगेर भाणे, जो देखा थका रगेर भाग । निममे
 पत्ता माटा गुडद जेमे हवे सर्वाकन हवे, जिगमें कोमल रहुत फल
 पत्ता प्रमुग ए मय लउन अनतकायदे है । इति वर्त्तम अनतकाय । इहा
 अगधमे अफीम भागप्रमुग जो सावा ना चाल हवे सो रक्खे उगरी
 जयणा । रात्रि भोजन मास प्रतिदिन ४ अथवा ५ अथवा मासमे
 ७ शतिथदिन टाले । और जैमी सगती माफरु रक्खे । एत दिन आहारकी
 जयणा, उपरात निषेध थोर दिन तिथिहार दुधिहार करू वा
 चोत्रिहार करू । और अभक्ष जो औषध भेषजमे आवे कोई दिन तिम
 री नयणा । रत्तीम अनतकाय निषेध, रोगादिक कारण औषधमे लैणकी
 जयणा, अजाणपणे किमी द्रव्यमे मिल्या थका आवे, तिगकी जयणा है,
 है चपटह नियम विवरणा लिखे है । गाथा । मचित्त १ दव्य
 २ विगई ३ वाहण ४ तनोल ५ बत्थ ६ वुसुमसु ७ वाहण ८ मयण
 ९ विलेपण १० उभ ११ लिभि १२ न्हाण १३ भतेसु १४ ॥ १ ॥

अथ—आपके जायजीव पचाणुवतमे इच्छा परिमाण कोइ आ
 गलि प्रमैपगगति अनेक तैकी सभावना करिके धवना निर्राद समर्थ

रख्ये । अथवा घेपन गिणै सो समुच्चय वस्त्र नी सरया रख्ये । जो आजकै दिन इतकी मख्यायें मुझे वस्त्र वावरया है ओर नहीं । भेलसभेल-पणै अजानसे बदल पहिरणैमै थायें तिमकी जयणा । इति छठा वस्त्र नियम ॥ ६ ॥ अथ सातमा पुष्पभोग नियम कहै सो मिरमै रखनेके लायक, गलैमै पहिरणै लायक, फुलकी मिज्या, फुलका तनीया, फुलका फया, फुलका चद्रूया जाली प्रमृग्य जे जे चीज भोगमै आवै छडी मेहरा क्रिलिगी फुलकी, ओर तोरा इत्यादिक अरु फुलकी जातिमै जो सुगंधी भोगमै आवै, उनका मुजै इतना द्रव्य गिणतीका माकला । इतना फुल नारुमेती बाम लेय । इतनी जातिका देहीकी भोगमै, ऐसा नियम उपयोग रखि करी जेसा पलै, ऐसा तोल वजन गिणती गरवै व्यापार प्रमुख जैपी अपनी शक्ति हवै तैसीतरं राखे । इति कुमुम नियम सप्तम ॥ ३ ॥ अथ अष्टम वाहन नियम मो गथ गाडी गज घोडा पालरी उट घेल नाप्रमुख जिसपर घेठिकै जहा जाणा ह्य तहा जाय । मो वाहन तीन जातिका-तरता ॥ १ ॥ फिरता २ चरता ३ । उमकी मख्या रख लेय । ए नियममै कोसखेडणा और क्षेत्र समरावणा चकडोल हिंडोल चढणा, उम प्रमुखकै चक्रमै रेठना ए मघ थायें । इस वास्तै उनकी मख्या रख लेय । जो इतनी मख्या वाहन थाजकै दिनमै चढणा सो वाहय नियम आठमा ॥ ८ ॥ नवमा मयन कर्हीय मिज्या तिमका नियम राख्ये । मेज खाट छोटी मोटी तगत पोस लरुडरा तगवता चो की तथा भूमिपर तूलिका रुडकी भरी मुख मिज्या एतका परिमाण जो थान दिनमै इतने कामभोग मुज आन कल्पे । ए नियम रख्ये । इतने विछारने उपरकै ओर पलिंग पोस प्रमुख ओर जामन सुरमी उपर विछारणैका चीकीदार पट्टा प्रमुख इन्हरा मयका छोटै मोटै मघ उपयोग धरिक्खे रखणा । और भूलै चूकीकी जयणा । इसी तरं सेती शक्तिमाफक रख लेवै । इति शयन नियम नवम ॥ ९ ॥ अथ दशम विलेपन नियम । मो भोगकै अथ इतनी केसर इतना चन्दन चोत्रा अचरजयाति तेल फुलेल कमरी कस्तूरी अचर, अरगजा जो जो अगकू लगावाका कथा । तेल कया अचर तिमका नाम धारिकै गुलाबका अचर अथवा अम्बरका फितनैका

र म्बाजन्तर स्वरूपांतर परिणामांतर सेती द्रव्यांतर हूय । अथवा इहा
 फेड आचाय आर तैर भी द्रव्यविपचा कहै छै । पै धनु वृद्धि परपग
 ममाच म्भीज ह । इम वास्तु द्रव्य परिमाण राखै । जे एते द्रव्य आ
 च ६ दिनम त्यागा ए द्रव्य नियम बजा ॥२॥ तीजा विगयम विगय दश
 १० । विनम चार महाविगय हे मधु १ माम २ मायन ३ मडिरा ४ ।
 ए च्यारहा ता तारीण अभच मै त्याग है । ताकी छविगय भव है ।
 दध १ दधि २ घृत ३ तेल ४ गुल ५ सर्प मीठा परमान ६ ए छह
 विगयम ए दोय तिन छौड, और की जयणा । उमकी नीविआतै
 पाच पाच जातिरै एक एक विगय है । जब विगय त्याग कीया त
 नीविआतै भी तजे चहीयै । अर जो न छौडै जाय तो उमही वस्तु धार
 लेर जो मन विगयत्याग लेवै है पिय नीवियातकी जयणा, इति वि
 गयनियमनतीय ॥ ३ ॥ अब चौथा उपानह कहीयै जूतीका नियम । जू
 तीकी जाति पतल जुती खडाऊ मोना चमाऊ प्रमुख ए जीव हिंसारै
 वडे अधिकरण है । तिहा श्रावक वृ चिनप्रनादि कारण विना खडाऊर
 परिणाम नहीं है । अर जूती विना तो चलनका ममर्थ नहीं है । इर.
 वास्तु उमका परिमाण लेणा, आनके दिनम इतनी जूतीका जोडा पढि
 रनम । औरकी जूती पाउम धारु नहीं । अर जो भूलिचरु पाउम पाऊ
 पडे तीसरी जयणा, इति उपानहनियम चाया ॥ ४ ॥ अथ पाचमा
 तपोल नियम, सो चौथा आहार स्वादिम नामे तिनम पान मापारी ल-
 वग इलायची तन तेन पत्ता मीतलचीनी जायफल जायरी पीपलामुल
 पीपरप्रभुग्य किमियाणा जिनमेती मुखशुद्धि ह्यै पै उग्र पृग्णा न ह्यै
 मा चीज स्वादिम आहार विणेष तपोल कहीयै, उसे परिमाण कर ले-
 ज्या आनके दिनम तपोल जो मुयस मेर अथवा जघनर मुजे खाणा
 एमा रये । अथवा मग्या ररये । जो एती चीज तपोलमै मग्या । ए
 तपोल नियम पाचमा ॥ ५ ॥ छ । चहानियम सो छी पुस्पके पाचो
 भागै रस मो वेप करै उनरी मग्या जो आजके दिनम एते वेप
 मुन परिणाम अर एते छुटे रस वाचरण, ज कारणे रात्रे पहिरणका
 तथा स्नानादिक करणका रस वेपकेम गिणा जायै नहीं इम वास्तु जुदा

रख्ये । अथवा वेपन गिणै मोममुच्चय उख की मख्या रख्ये । जो आजकं दिन इतनी सख्यायें मुझे वख वापरखा है ओर नहीं । भेलसभेल-
 पणै अज्ञानमे बदल पहिरणैमे आवं तिमरी जयणा । इति छटा वख
 नियम ॥ ६ ॥ अथ सातमा पुष्पभोग नियम कहै मो मिरमै रखनेके
 लायक, गरुमै पहिरणै लायक, फुलकी मिज्या, फुलका तजीया, फुलका
 पया, फुलका चद्रूया जाली प्रमूर जे जे चीन भोगमै आवं छठी सेहरा
 मिलिगी फुलकी, ओर तोरा इत्यादिक अरु फुलकी जातिमै जो
 सुगंधी भोगमै आवं, उनका मुनै इतना द्रव्य गिणतीका मोरुना । इ-
 तना फुल नाकमेती बाय लेंय । इतनी जानिया देहोकी भोगमै, ऐसा
 नियम उपयोग रखि करी जेमा पलै, ऐसा तोल बजन गिणती गर्ये
 व्यापार प्रमुख जैपी अपनी शक्ति हूव तैमीतरं राखे । इति कुसुम
 नियम मत्तम ॥ ३ ॥ अथ अष्टम वाहन नियम मो गथ गाढी गज घोडा
 पालगी उट घेल नामप्रमुख जिसपर बेठिके जहा जाणा ह्य तहां जाय ।
 मो वाहन तीन जातिमा-तरता ॥ १ ॥ फिरता २ चरता ३ । उमकी
 मख्या रख लेंय । ए नियममै कोमलेडगा और छत्र ममगावणा चरडोल
 हिंडोल चढणा, उम प्रमुखकं चक्रमै नेठना ए मच आवं । इस वाम्त
 उनकी सख्या रख लेंय । जो इतनी मख्या वाहन आजकं दिनमै चढणा
 मो वाहण नियम आठमा ॥ ८ ॥ नवमा मयन कहीयै मिज्या तिमका
 नियम राख्ये । मेज ग्राट छोटी मोटी तगत पोम लफडफा तखता चो
 की तथा भूमिपर तूलिका रुडकी भरी सुरत मिज्या एतका परिमाण जो
 आन दिनमै इतने कामभोग मुज आज कल्पे । ए नियम रख्ये । इतने
 पिठारनै उपरकं ओर पलिंग पोम प्रमुख और जामन सुरमी उपर नि
 छात्रणैका चौकीदार पट्टा प्रमुख इन्हका मचना छोटे मोटे मच उपयोग
 धरिके रखणा । और भूल चूकीकी जयणा । इसी तरं सेती शक्तिमाफक
 रख लेंव । इति शयन नियम नवम ॥ ९ ॥ अथ दशम विलेपन नियम । मो
 भोगकं अर्थ इतनी रेमर इतना चन्दन चोवा अत्तरजवादि तेल फुलेल
 कमरी कस्तूरी अबर, अरगजां जो जो अगर् लमायाका कथा । तेल कथा
 अत्तर तिमका नाम धारिके गुलाबका अत्तर अथवा अम्बरका फितनेका

यमराज्या इत्यादि या मन्त्रा करि राखे । अथवा उंगटण निमरा भी
 १२ एमी म रात्रि याचरे दिन इतना तोलका मुने चाहीयेगा, मो रात्र
 लेने । तोरना नियम है । आर विलेपन भी मत्र तोलमे राखे । इति
 विलेपन नियम ऽथम । इहा पूनादिक कार्यमे हाथप्रमुखमे ध्रुपणा है,
 अथ मिरमे विलेफका फग्ना तिनमेती नियम न भावे । आर नियममे
 रात्रगाती धमर हेतु अधिक करणमेती भी नियम भग नहीं ॥ १० ॥
 इग्यारमे द्वादपर्ये नियम मो याचरु हू दिनमे अग्रद्व मेरा तो प्राये
 निगद्व है । रात्रिकी जयणामे अथवा परिमाण करे याचरे दिन रात्रि
 म एती एती वर प्रत्यचर्ये की जयणा । इहा हास्य विनोद आलिङ्गना
 दि अमेती मो मन्हीमे मधुनक्रिया लागे । जैमी शक्ति ऐसा भोगा
 राखे । कोई याचरु हू रात्रि चउविडार करता हूवे । अह रात्रिमे एकान्त
 ध्यानकी चाल हूवे जप जापकी रुचि उदूत हूवे सो दिलमे यु चाणे
 रात्रि कृ विषयमेया करिके अगुद्व हूय है जप करे करु । अरु विषय रोग
 की लगन लगी है सो भी परिणाम हू रिगाडे है । इम वास्ते दिनमेके विषे
 विक्ल्प मिटाउ, पीठे शुद्ध होय के रात्रि निहचितपणे स्वस्थ चित्ते जप
 करु । एमी बुद्धिमेती दिनहू विषय मेरे रात्रि न मेरे । इम वास्ते
 दिगी हू दिनमे निषेध रात्रिकी जयणा । किमी कृ दिनकी जयणा रात्रि
 निषेध, अरु किमी कृ रात्रि दिन मेचूकी जयणा पै गिणती राखे । जो
 रात्रिदिन होयके एती वेर सीममे भोगमेया करसु, जैमी शक्ति होय
 एगा राखे । इति प्रत्यचर्ये नियम ॥ ११ ॥ चारमे दिग्दिशिका नियम,
 सा दश दिशि जायगे आवणका परिमाण जो जैशी शक्ति जैसा प्रयो
 जन पैसा राखे । इहा आदेश उपदेश आत्मी भेजयेना कागटका या-
 चगा लिप्या ए मत्र इनमे आरे, पीठे जैसा पले तेमा राखे । इति
 दिगियम विवरण ॥ १२ ॥ तेरेमा स्नान नियम मो दिनमे तिलादि-
 क अभ्यगनपूर्वक स्नान करगा । मो उनका परिमाण जो इतनी वेर
 दिनमे स्नान करगा । इहा देवपूनानिमित्त अधिकस्नान करणा पडे तो
 भी नियममग नहीं है । ऐमी तरु मरी प्रत बीच धर्महेतु कमपेश करे,
 उनमेती नियम भग नहीं । इति स्नान नियम विवरण ॥ १३ ॥ चप

दमा मातपाणीका नियम, मो च्यार आहारमै स्वादिभसा परिमाण ता तपोल नियममै परिमाण सर्या है । अरु नाकी तीन आहार है । उसमै स्वादिम मीठा मेरा मिष्ठानपान मोदकादिक, अमनमै भात रोटी रुचो-री मीरा, तिमका परिमाण गर्ये । तिनमै एता मेरकी जयणा, इहा घरम बहु परिचार वे, उनकी खातर ग्रहत अमनादिकरुका करणा करणणा पेटे उनकी गृहस्थ क हुदाती नही है इम वास्तै उनकी जयणा, तथा पर घर जाति प्रमुख मन्ध जिमण क जाणणा पडे तिहा ता केई भण भात प्रमुखकी रमोडे बनाई होये पे नियमधारीके उनका दाप नही । तिम वास्तै आपके खाणेका परिमाण रखे, अरु परिणाम इह होवे तो परिमाणमे अधिक पचन न जीमे मो तो ग्रहत भला । पे मन् गृहस्थसेती न पले इम नास्ते यथाशक्ति राखे, तथा पाणीका परिणाम जो दिनमे वे तो कलसपारे इहा बहु परिचारप्रत क पाणी प्रमाण स्वनिष्ट भोगकी सूत राखणी । समुदायकी भेल मभेलकी छुट नही है । मो जुटा रगे मो बहुत भला है । इति भातपाणीका नियम ॥ १४ ॥ इहा जो अधिक भावत माधक हव, मो मचित्तादि परिमाणमै द्रव्यपरिमाणमै नाम लै ने रग्य उन क बटी निर्ग, अरु अशक्त क तो सामान्यकरण है । इति चर्त नियम स्वरूप । *अथ पनरह कर्मादान स्वरूप लिग्य है, कर्मादान मो व्यापार करे पापकरम गाई उधन हुये ऐसा व्यापार कर्म मो पापकर्म उमका आदान जा ग्रहण है जिम व्यापार मै उमक कर्मादान कहीपे । इहा ममारम पाप तो मरुहि व्यापारमै हुये है तोभी आरमन न्यापार-मेती ए पनरह कर्मादान व्यापारमै बहुत पाप अरु मलिन परिणाम हुये । परपग पापकी चाले । इमनाले श्रावकक अरुय त्याग है, कदापि न जुटे अर्जाविका उनमै लागी होय तो परिमाण करिले । तिहा प्रथम इगालकर्म मो लकड जलायके कोयला करे बेचे अर्जाविका उपनावे सो इगालकर्म, । ऐतलेके इगालकर्म ऐतले कोदतरकी भट्टी करे इट नीप जाये कुभाकरम, लोहारकर्म, मोनारकर्म, आंगारकर्म, रगटीकार, शीशा कार, रनार भठीयाग, भटपुजा, हलगाड, धातुगालकप्रमृग्व जो जग्गि-मेती चितनाके व्यापार है मोदगा कर्म । ए व्यापारमै बहुत दाप है ।

शरणा गति सर्वना मुग्ध गाम्भ है । च्यारू दिशि उर्ध्व अधो सगलै
 ७) नाथेन तीव्र अग्र्य हणै इ वास्तै अनाचरणीय है । इत्यगल
 भर्म प्रसा ॥ १ ॥ दूगरा वनकर्म सो छेदा अणछेदा वन वेचै, बगी
 ता फलपा नै, पा फूलफल कदमूल त्रिणकाष्ट लकडी वसादिक
 व्यापार, तथा श्री चीजका जो व्यापार सोभी वनकर्म, तथा खेती
 व्यापार करणा ए मत्र वनकर्महू करणा आनीविका निमित्त
 अमीसेजा लेणा, करसर्णी केनाई धानम वधता लेने वो भी वनकर्म
 तथा वान पंगोवै खडावै भरडावै एभी इनके व्यापार है । ए वनकर्म
 व्यापार वनस्पति अरु वनस्पति आश्रीत प्रस जीवकी अवश्य
 निराधना हूवे इत्यन्त वनकर्म अनाचरणीय है । इति वनकर्म ॥ २ ॥
 तीजा भाडीकर्म सो शकट उडा गाडा बहिल सो अरुसारीका रथ इका
 गाडी छेटी, तथा नावजाती रजरा पलवार महिलगिरी उलाक भमलीया
 प्रमुख तथा हल दताल, चरखा, घाणी प्रमुख इनके छोट मोटे अग
 धूगरा चक्की प्रमुख उगली मूलली मर्ग बनाय नै वेचै, वेचानै, खंड
 रहित, सो वनकर्म शकटकर्म ए बडे हिंसाके कारण है, अनाचरणीय
 है । इति साडीकर्म ॥ ३ ॥ चौथा भाडीकर्म सो गाडी बहिल उट पोठ
 मंगा गदह बसर गोडाना रथ मुखपाल डोली प्रमुख आप रावै, ओरक
 भाड देवै, आरका भार गंड पहुचावै । तथा घर दुकान वख व भरवार
 प्रमुख अपनी हूवे, परक भाडे देवै । तथा सार्थगाहरो व्यापार हूडा
 भाडाका व्यापार ए सगही भाडीकर्म मै, जो भाडा अपनी चीनका लेके
 अपनी चीन आरू सुपै सो भाडीकर्म इनमै बेल घोडा प्रमुख जीवका
 नाटनादी महादु ख उपजै, अरु चलवेम मार्गके प्रसादि जीव हिंसा
 अग्र्य हूवे । अनाचरणीय है ॥ ४ ॥ पाचमा फोडीकर्म सो बुवा
 खणागणा तथा तलाव दौद घाणडी नीके इत्यादिक तथा हलका खेडन
 करणा मगत्रास पै पत्थर फोडागणा, हीरा रतन रगडावणा परवी करावै,
 पाट कडावे तरसावै भूहरा तहरसाना कावणागणा, तथा जव घान्य बुट
 प्रमुखकी दाल करावणी चावल करानवै इत्यादि सब फोडीकर्ममै तथा
 इगालकर्ममै भी आवै, पृथ्वीदारणमे पृथ्वीकाय ग्रमकायके जीवकी हिंसा

है और जीवनी अगघात वै त्रिलामणादि उह पाप हवे इम वास्ते ए कर्म
 त्याज्य है । ए पाचू कुरुम है । महा हिंसा तिगर्म ज़ाडखा ॥५५॥ अय
 पाच क्राण्डिय लिगर्म है । तिहा प्रथम दत्तवाणिज्य मो हाथीना दात
 उच्छु के नस जभि रत्नजा ओर पर्वीके रोम तथा पर कलिगी प्रमुख-
 की चमर गौरि पूत्रना तथा हिरणके सिंगडा प्रमुखके सींग और मग
 कोडा कौडी रन्तूरी जरादि माती राघना चर्म, राघके मुछके कग,
 माचर सींग कचकडा त्रिमजदाणा रमम उन नात नमभ प्रमुख जी रम
 जीवुके अग उन सींग म मरका व्यापार दत्त वाणिज्यमै और, ए वा
 णि यम तत्र जागरमें जाने अग लैणक तत्र वे लोक गृहभित्तादिक
 तत्काल हस्ती गैटा प्रमुख जीवुकी हिंसामें प्रवर्त । महा पाप अनर्थकर
 आपना भी परिणाम उहा भये मलिन प्रवर्त, लोभके हेतु उन व्याधयु
 कदापि कहणा पडे हमारे ताई अन्ना दात वै भारी वै मोटा वै तमा
 आख देयोगे तो ओर चघना मोल पावेगे तत्र व्याप इन्के कहणमेती
 ज्यादा कर्मकरे ऐमी तरे मत्र द्रव्यमें जाखणा, तिम मार्त मत्र चीन
 व्यापारीमें लेखा पिणा आगार में न लेणा । आनीपिसा करा जोडज तिम
 वास्तु कुवाणिज्य तनणा । एक हस्ती मरे तत्र दोय दात पावे । एक
 गाँ मरे तत्र पूठ एक पावे । ऐमी तरे मत्र गिणी लेणा इति दत्तवाणि-
 ज्य प्रथम ॥ १ ॥ दुजा लाग्य कुवाणिज्य मो लोह, धाहटी, नील,
 मानीखार, सावू, मणसिल, लाह मोहागा पडनाम रमुना कपीला तूरी
 उम सत्र ग्यार की जाति उनका जो व्यापार मो लाग्य वाणिज्य कहार ।
 तिस लाग्यमें प्रथम मजीवका ममुह विना लोह उपजे नही पीछे भी
 जर रग नीकाले तत्र भी अन्न के सडावे, तहा भी मत्र उपजे, महा
 दुर्गंध रधिक्का सा अम उपजे । धाहडीमें भी आश्रित मत्र जीव काई
 उधुया बहुत बर्म, अरु मदिना का अग है नील भी प्रथम मटारै तिहा
 मस जीव उपजे उनकी हिंसा करै तत्र नील उपजे पीछे नीलके कुडमें मजीव-
 की हिंसा बहुत केवल नीलके मस्र परिरै तिममें भी मत्रजीवक जू लीग्य उ-
 पजे इम मार्त नहा तहा हिंसा हेतु है तथा ग्नाल मनशियादि मत्री वासना
 मेति मत्रजीव मग्नी प्रमुख मंत्र, हस्ताल मणशिल पाटते जतना रक्थ नहीं तत्र
 वासनामेती मंत्र मग्नी ग्राम पडनाम प्रमुख पण तिहा जे काममें

मरि... ॥ १२ ॥ तमिरा
 म... ॥ १३ ॥ तमिरा
 म... ॥ १४ ॥ तमिरा
 म... ॥ १५ ॥ तमिरा
 म... ॥ १६ ॥ तमिरा
 म... ॥ १७ ॥ तमिरा
 म... ॥ १८ ॥ तमिरा
 म... ॥ १९ ॥ तमिरा
 म... ॥ २० ॥ तमिरा
 म... ॥ २१ ॥ तमिरा
 म... ॥ २२ ॥ तमिरा
 म... ॥ २३ ॥ तमिरा
 म... ॥ २४ ॥ तमिरा
 म... ॥ २५ ॥ तमिरा
 म... ॥ २६ ॥ तमिरा
 म... ॥ २७ ॥ तमिरा
 म... ॥ २८ ॥ तमिरा
 म... ॥ २९ ॥ तमिरा
 म... ॥ ३० ॥ तमिरा

उट-हाथी पैल बरुसो पाडा गद्दा तथा पग्गीमै बाजकुकडा कूही बहिरि
 सिकरा लाल मैना मुरगा तोता मोर सुरस पीडडी तीतर पचेंद्री पखी
 जीव बाकू आजीविका हेतु लेंवें बेचें सो केशवाणिज्य कहावै, ए केश
 वाणिज्यमै दामदासी तिर्यंच प्रमुख जीव कृ तो प्रथम स्थान कुदुबका
 वियोग पडै, अरु जिहा ले करी और कृ देवे उहा उन कृ नित्य पराधीनपण
 अपना मन की कछुई असर भी नई ओर तिर्यंच जीव कछु मुखम बोल
 सो नही अपना दुःख है कै सुख है, जन्म पर्यंत विचारै बधमै रहे, बहुत
 कल्यै, बहुत भुख प्याम है, उसपर फेर जो लेंवें मो निरपराध मार
 भार भरै, बहुत उधनादिक घणा दु ख पावै, पग्गी भी पजरमै पडै बहुत
 दु ख मानै है सिकरा बाज बहरी ओ तो महा हिसाकै हेतु है नित्य पर-
 माम विना रखा न जावै इस वास्तै केशवाणिज्य भी धर्मरुची है जो
 श्रावक तिम कृ त्याज्य है ॥ ४ ॥ तथा विप कुवाणिज्य पाचमा जो
 सोमल उद्धनाग अनीम मनसिल हरताल गाजा भांग चरम तवाकू प्रमु-
 ख तथा हथीपार तरवार धनुष्य कटारी भरछी तोमर फरसी कुहाडा
 कुदाल छुरी पेस कचज बटुक डाल गोली दारु बगतर पाखर जलमटोप जि-
 नके बलमेती सग्राममें मजनुत हुवै, तथा हल मुमल उखल कुश कुदाल
 दताली ररवत दाब दात्र छीनी नाल गोला हवाई कृहुरुशत प्रमुख सत्र
 हिंसाकै अधिकरण उनका जो व्यापार सो विपवाणिज्य कहावै । इहा
 शिष्य ग्रन्थ करै है । सो अमलप्रमुख विप कृ तो निर कहै पै धनुषादि-
 क हथीपार कृ विप क्यु कहो हो, तत्र गुरु कहै सुणित तत्र नही पाया ।
 जो विपसेती काम हुनै है सो इनस भी हुनै, विप मारया उम कृ तो कोई
 उतारी भी सकै पिण शस्त्रका मारया तो कोई बचै भी नही तथा जब
 हथीपार लेंवै तत्र विपरूप परिणाम हुवै, ज्यू ज्यू जलदशस्त्र हुवै त्यू त्यू
 सुश हुवै, तारीफ कर मोल लेवै, अगलैका परिणाम निगडै इस वास्तै
 विपरूप कह्यै । ऐ विपवाणिज्यमै बलनाग है सो तो एकेंद्रियादिक
 पचेंद्रीपर्यंतका घात करै है । सोमल तो उनमै ज्यादा है जो मारै
 सो बहुत कष्ट पावै, मरकै दुर्गति में जाय, विप रायकै जिस गति
 ऊपजै उहा भी विपरूप हुवै, ज्यु क्रोधसेती विप खावै तो मरकै माय हुवै ।

व क्षेरी जातमें उपन उम वास्तं फलमं भी विप पायं तथा विप वस्तु गन्ध-
 यती जीव नाम ह्यै, हरताल मनामिल पांनीम पीस्या है उमपर आण
 भगी ठं मा मिताव मरं, जफीम भी जव खायं तव आत्मघात करं
 उमत्र शरीर का मलमत्र गिरं, उहा त्रम धारर जीव हणं चेतना मुजा
 रं, दुध्यान ह्यै, दुर्गति जायं, तथा भाग प्रमुग्य भी चेतना रु मुजायं
 गति भोचनादिन अनिगति बढायं, जत्रक्षचर्यं प्रहुत सेरायं, असत्य बढायं ।
 प्रतकी दृढता जायं, कषायवृद्धि करं तुच्छपणो जायं निद्रा बढायं, मति
 अमानता कर, अ-छी तत्रायत क प्रदलायं निम्घमो ह्यै, और निडा
 वाचालपणो बढायं । मुग्धमेती यचन निकालतो आयो पाछो न जोयं,
 चित्त भमीमी अस्थथा लगै, आश्रित प्रहुत जीव क हणायं इत्यादिक
 इहलोरु दु ख, परलोफ दुर्गति गहनमं पडं इस वास्तं विप कहीयं, सत्र
 हधीयार तो प्रगन्ही पापहेतु इम वास्तं विपराणिज्य निषेध है । इति
 विप दुराणिज्य स्वरूप ॥ ५ ॥ एतलं पाच दुराणिज्य ह्यै, ए सर्ग
 दश थया ॥ १० ॥ ॐ अय मामान्य कर्म कहं । तिहा प्रथम यत्रपीलन
 कर्म, सो घाणी कोन्टू चग्वा चग्गी नामा उग्रलभूमल प्रगई मारणी
 प्रेगडी यत्र मरण जल्पत्र पातालयत्री आकाशयत्र डोलिनायत्र प्रमुग्य जो
 या राष्ट्र पापाण लोह बस्त्रादि अनेक अनेक अगमिलायमेती जो जीव घात-
 फारी पदार्थ ह्यै सो या पीलनकर्म । ये यत्र पीलनकर्ममे प्रहुत धारम है,
 घाण यत्रमं तिलादिमिश्रित त्रमजीवघात ह्यै, इमी तर इच्छुपीलनकर्म यत्रमं
 भी अनरु जीवघात है । यृ जो यत्र है सो मुकरर करिकं जीवघात हेतु
 है । इम वास्तं जाजीवका त्तु यत्र पीलनकर्म निषिद्ध है ॥ १ ॥ दुम
 रा निर्लंछन कर्म कहं, सो धंरुं नारु फाडायं, घोड कू टाग त्रिरायं, भौ
 त्रलकं जान कटायं शग छदायं पृछ छेरायं उट पीठ गालन नामात्रधन
 मेल घोडं कू रसी करारणा डम त्रिराय गोजो करायं, तथा कोतवाली
 ग्विज्जमत्त ह्यै । नया कर करे ईजायं लेकरे आरुग कर करं, चोर धा
 डिमं नामायां त्रैडिगडी करं । मनमं चाणै, मेरा नाम होयं, इम वास्तं
 निर्लंछन चलायं इत्यादिना नात सगम त्राय होय सो करं, सो निर्लंछ
 न कर्म रहीयं । ए निर्लंछन कर्ममं प्रहुत पचद्रिय कू रुदर्वना होयं घात

हूँ अपना परिणाम च अतिनिर्दयपणो हूँ । उनमें दुर्गतिपात हूँ, इम हेतु यह निषिद्ध निलंछन कर्म ॥ २ ॥ तथा तीजा दावामिदान सो केलेक जीव निध्यात्वी अरु अग्यांनके जोरमें विपर्यासी कहै, ए वन गृहृत होय गया है, भिल्लादिक दुःख पावतै हूँगै, इम वास्तै दब लगाय दीजे तो जलकै हूँवै, बडा धर्म होसी । फिरि इनके नया कृपल निकलेगी फलैगी, फूल फल खावैगै, धर्म होयगा, ऐमा उपदेश तिरावै देवें थोर वनदब दीयै थके धरती माताका बोजा उतरेगा, जगा खाली हूँवैगी, धान निपजैगा, खेती नवी नीपजैगी, लोकरु सुखी होवैगै, ओर त्रिण काठ जुना जल जायगा, थोर नये त्रिण रमभर हूँवै तय ए गोरु वाद्धरु सुख सेती चरैगै, थोर जली भूमी वचि धान अच्छा नीपजैगा । मुढ मातबरी ऐसी दिखलावै, लोभकी लगनमेती पापकर्म करतो सकै नही, ओर डाकायत चोर भील का मेवासा मिट जायगा, ऐसी न्याय रीतीसेती दब दीरारै, वनकटी करावै, तथा आजीविका हेतु बड़े बड़े वनगहन निहा पैसणा निकलणा दुक्कर पडै, तिममेंती भी वन कृ अगिसस्कार करै तय तस जीव व्याघ्र, भालम चीत्ता गँडै सब भाजि जावै अपना स्थानरु टूटै, सर्पादिक, भुज परिसर्प, और भी कोडी मकोडी प्रमुख तो सर्व हर्षायै ऐमा मनमें नावै । यही जीविका पातक चढैगा सो नही अरु कहे दब दीए सेती सुखै फिरिणा आवणा हूँवैगा, पडच्छा (५थ) अच्छा हूँगा । ऐसी हिंसा निश्चै नरकगति कूं पहुँचावै, यामें सदेह न करगा, इहा केतीक चीज बु कही की जमीन में फानसा गुलाब वालोड ककडी इत्यादिक वनस्पति नरी निपजे तय पहिले जमी भदव देवे जमी जले तय वे द्रव्य उपजै सो भी दबदान इस में आवै इतने व्रती वै धर्मरुची ऐसा उपदेश न देवै और पास न दिरारै । इति दबदान कर्म तीजा ॥ ३ ॥ चोथा शापणकर्म कहै मो जो सरोवर वाव तलाय द्रहप्रमुख कू शोपावै पाणी कू बहार कडावै । तय मिध्यामती अज्ञानी लोमान्ध वे विपर्याम बुद्धिसेती धर्म धर्मबुद्धि बतावै तिहां लोमी अपना खैरसे धानके हेतु जल बहारै ऊख बहूत श्रमाई है । सोयही तलावका क्षेत्रमें ल्यावै धान निपजै पडै कीच रहै, बारी, तिसमें जलजीव मत्स्यादिक बहुत व्रसजीव अवश्य भूख तापमें मर जाय ।

तथा मामार्थी दृष्ट लोक मन्त्राधिकारी घात करे। तथा मूढ
 मनुजिमा जा यु कहें ए पानी गुदला हे गया हे मो पाणी कें
 गग हता, इमजाम्ते जमीला पाणी महत दानुजा हे, नया अन्त्र जल
 अर्पणा पिण यु न जाण इतने जीवना सहार काटागटी हूंगे एमा न
 विचार। तथा अर्पणी मीग्वध हाय गडे उमर सुलायन आर अर्चा
 पाणी आगता तप परिण, आगग्र ऐमी अधर्ममुद्धि कीया कहें पुण्य वह
 एम शापनर्मभी ममज न करे न करावे इति चोया शोषणर्म ॥४॥
 पाचमा अमता पापणकर्म मो कौतुक अर्थे अमती जनार उताह
 पाले विरिचि पाले भुग्गात्र पाले ओरभी जीवह कौतुक अर्थे वधनमे
 करे। पत्नी जीवह पृथी ओर पत्नीकी हिमा करे तिमत्र पाले, तथा दृष्ट
 भार्या दृष्टपुत्रादि मन्त्र माहमेती पापे। माय जट न गिरे ज्य नृ करे
 उनर सुमी करे तथा वेचनेके ग्यातर दामदामी पापे माभी अमतीकर्म
 तथा माडी कमाह जागरी चमार प्रमुग्र गहु आरभी जीवने माथ व्यापार
 करणा उनरु द्रव्य सरची देणी मो भी दृष्ट जीवना पालणा ह्या, इहा
 धोडकी ग्यातर गहुपाप सिग्पर लेवे इमजाम्ते निषेध, इहा अनुकम्पाय
 ध्यानप्रमुख जीव क कौण प्रमुख क मनु देणा मो पुण्यहेतु देणा
 निमना दोष नहीं, अरु अपने महलमे जा जीव ह्या उनरी गयर लेणी
 तप लोकरीति तथा नीतिमाकर पाप वृद्धम्य की भरणा पोषण करे
 उममे मो दोष नहीं है। इति अमति दोष पाचमा ॥ ५ ॥ इति १५
 पनरु कर्मात्तन रुधन। अत्र स्वर्णकी कर्मात्तनकी विगत लिखे है। इहा
 गालकर्मकी आनीविका निषेध है इमजाम्ते न करे ता भी गृहस्थ है
 निगविशेष ओट्या जाय नरी इमजाम्ते उनकी ममही करे। अपनी
 मगति माकर विचार। रूपा माता गत्राणा, घाट वगारणा मिखा
 पडावणा नरावणा प्रमुख र्पणते रय तथा वध जो अग्नि पर्ये र्गमे
 रगावणा उनरा मान रावे। तथा इट चना घर काय लेणना आगार,
 व्यापार निषेध, उनमे भी जो अपनी खातर इटप्रमुख लहीना होय एमे
 मे कोई मन्धी मार्ग तप देगा पडे, उमरु नीमत माफत्र पडेमे लेणे पडे
 उमरा जागार तथा भटभुंते घर वृद्ध मन्धी करावणा पडे उनरा
 तप प्रते परिणाम स्वै। मरने वा पाच शरवा वा अधमण वा मणव-

यन मन्धान राखे, अग्नीकर्मकी चीज लेणे देणैमै आये उमरु अग्निर्म
 कगवर्णका आगार उमरु वेचणेका आगार ओर निषेध ठठग लोहार प्र-
 मुग्मै घरमवधी घामण कुमण मुख कराये तिणका आगार । लज्जादा-
 क्षिण्य कृदुम्नादिकाय माहाज्यकी आदेशादिककी जयणा ॥ १ ॥ तथा
 अनर्ममै घर मवधी पैल घाडे उट प्रमुग्मकी ग्यातर घाम प्रमुग्मखणैका
 मगावर्णकी जयणा, घर्गाचै ग्यातर उत्तर प्रन्युत्तर देणैका आगार ॥ २ ॥
 माडीकर्म वचि नाव गाटी छरुडा रथरहिल जो घरमा ह्वे उमरु
 ममागणा पडे उमका आगार, निरुमा उलीते लाय कहू आये निमका वे-
 चणैका आगार मोरुला, लैहणैमै आया उमरु रग्ये वा रचे तिणका
 आगार ॥ ३ ॥ चौथा भाडिकर्ममै अपना घरहाट नार गाटी प्रवग्ग
 प्रमुग्म भाडे देखैकी जयणा तिमका भी आगार ॥ ४ ॥ फोडी कर्ममै
 अपना घरमाधी कय्या भुहिरा टाका तहरमाना कगवर्णका आगार, घर
 की खाली क मगवर्णका आगार घर कगवर्णका तथा जगहरका व्यापार
 घरमवधी नग घाटघुटकी ग्यातर ताडागणा फोडागणा मोती रीरा
 गगा तथा घरकी ग्यातर पथरगानी रुदागणी घाट घटागणा पडे उनकी
 जयणा । लज्या टानिएय माहाज्य करणा पडे उनकी जयणा, घर मर
 चम फाडीकर्म जो ने आये उनका आगार माकला । इति छठी कर्म
 पाचमा ॥ ५ ॥ उठा दन वाणिज्यमै घर ग्यरचमै अरने मोगरु अग्नि
 मग्ममै लेणा मगावर्णका आगार आगे व्यापारक विरुमै ग्या ह्वे
 उमकी जयणा लेणे देणे आये मरभराकरणेका आगार इति दन्नाजिज्य
 ॥ ६ ॥ सातमा लाव वाणिज्यमै मी दत वाणिज्यमै घर जगान घर
 खरच फोटे कार्य पडे तिमका आगार ॥ ७ ॥ आरुग्म मग्ममै घर
 ग्यरचमवधी जो ग्या ह्वे उनकी जयणा, लहरमै अरने उन क वरु
 की जयणा, लज्जा टानिएयमेती फुरमार्गी मग्ममै कर्मी पडे, उनका
 जयणा, तथा अपनी तयार चीज किमही मडे उटमनिे मागा नर
 वचमान माफक मूल लहर देणी उमका प्रवग्ग । इति नववर्ण
 आठमा ॥ ८ ॥ नरमा केश वाणिज्यमै मृग अज्ञातका हेतु, उमरु
 व्यापार निषेध, घरमवधी पमू वेचणेका अरु लहरमै अरने
 आगार, घरमै

निमित्त घोडाप्रमुख चक्रर और लैणका आगार कोई मगारी उचित
घाडा प्रमुख ग्वरीद कर देने का आगार राजादि प्रमन करने कु
कोई जातिक चतुष्प चचाती लेकर निचरकरणका आगार, फुरमामी
फेजयागिज्य नाचाले भरभरा करणका आगार ॥ ६ ॥ त्रिपयागिज्य
ग्गमा जो जो आगे व्यापारमें रग्ये ह्वे तिमका आगार तथा घरस्वर-
चर्म ॥ त्रिप चीज श्रापधर्म आगे तिमका आगार तथा अपनी मानकी
ग्वार घरस्वरीमें जो जो शस्त्र आगे तिसके रखणका आगार, यह करा
गया ममगणका मगावणका आगार । लहखे आगे उनकी जयणा
इति ॥ १० ॥ यत्रपीलण अग्यारमा कर्म ॥ ११ ॥ जो जो व्यापार आ-
गे रगे है । उम व्यापार में जो जो यत्रपीलण क्रिया आगे उनकी जयणा
तथा घर स्वरचर्म जो जत्रपीलण आगे उनकी जयणा । तथा अपने
अगके भोगादि निमित्त अत्तर चोरा प्रमुखका यत्र तथा गेगादि मग्ये
फेड श्रापध करणका यत्र करण करणगा पडे उनका आगार लजा
दाक्षिण्ये फुरमामी अट्ट करणा पडे उमका आगार है इति यत्रपीलण
कर्म ॥ ११ ॥ धारमा निर्लेखनकर्मका व्यापार निषेध है । पै कोड राज्य
अधिकारी कहीये आग्रह करिके कहै उनमें जो आगे उनका तो आगार
तथा घरमबधी पशु वालात्तिकु करणा पडे उनका आगार । लहखे आगे
उमकी तजगीज करणी पडे तिमकी जयणा । इति निर्लेखन कर्म ॥ १२ ॥
तेरमा द्यदाननिषेध जो राह बीच रमोई प्रमुख निपचारते कोई चताम
(वायु) प्रयोगे जतना करते अगनि वनमें प्रमर जाय उमहु धुजावणकी शक्ति
नहीं तो मैरात्रत ऐमें न भाँन, छती ममर्धाड गडे न करुगा घरस्वरचर्म
कोई गिते कार्य करणा पडे उनकी जयणा । इति द्यदान ॥ १३ ॥
चन्द्रमा शोषणकर्म, जो मरोवर द्रह नलान मुमाणना निषेध घरप्रमुखका
कुआ गलावणका आगार नदीमें नेरी करणी पडे उनका आगार और
भी घरमबधी कार्यमें निम महिलेमें रहे है उसमें उचित पचनी मरासरी
कथे निमित्त खरच देणा पडे पाणी पीणखे खरचके निमित्त अगला
शोधाय नत्रा करणा तिसमें कइ खरच करै तिमका आगार । इति चन्द्र-
दमा शोषणकर्म ॥ १४ ॥ असतीपोषण घरस्वरीपरमबधी न हटे तिसकी
जयणा, चाह करिके न धारु । परिग्रहपग्मिमाणमें पशु रागे उनहु पोष

खैका आगार तथा मेलेछाणिके राजामेती व्यापार आजीविका अर्थे आहा
 गतिके पोषणा पडे उनका आगार अपनी गरज माटे अछुट रहू ।
 तथा अपना उदीकभायसती मिल्या जो पापहुटुन उमका भरण पोषण
 करखैका आगार । ए अयतार सफल जाणु नही तथा लहणेमे आवै
 उमका प्रतिपालन पोषण करखैका आगार अनुरूपा बुद्धि शानादिक
 पापणका आगार इणरतीमेती पनरह कर्मादान दोष तजु पे पनरह कर्मा-
 दानमे जो चीज घरसत्रघ टाक्षिण्यता सत्रघ इयादि अछटपण लहणे,
 लहणाप्रमुखमे आवै ते कारणे कर्मादान क्रिया करणी पडे उनकी जयणा
 इहा जो कर्मादान रखै हे उममे एकेक कर्मादान मे और दोष तीन
 न्यार मिलत आवै उनकी जयणा । इति पनरह कर्मादान विगत ।
 त्रय मातमा त्रतके पाच अतिचार लिखै है । मचित्तमेती मूल भागे तो
 त्रयक कु मचित्त नियम हूँ, नही तो मचित्तकी मर्या रक्खै । तिहा
 मत्र मचित्त परिहार अथवा अचित्त अथवा मचित्त परिमाणवत हूँ
 अरु कोई यनाभोग दोषमती कोई मचित्त आहार करै तथा अपरिमाण
 तो जल मे तान उफाली पानी उपर आवै तत्र शुद्ध पानी भया । उममे
 एक दोष उफालै पानी जपणितोरु फहारै यह पानी अचित्त हूया
 ममे जानीके पीवै तथा मचित्त फासु करते काचा रहै, उन कु भी अ-
 चित्त बुद्धिमेती गारै । त्राकरु कु मचित्त चीन अचित्त करण कु शस्त्र
 अच्छी तरै लगै तदपल्लि अतमुहर्त राद गारै तिहा अचित्तकी बुद्धिमेती
 मचित्त राये अथवा अनाभागाणिके खाये मो प्रथमातिचार ॥ १ ॥
 तथा त्रना मचित्त प्रतिबद्ध अतिचार, मो चित्त क मचित्त नियम है मो
 गाछमती तुगत उखेल्या रोगमती गुद प्रमुख राये मो तहा गुद तो अ-
 चित्त है । पिण सचित्तमे मर्श लग्याथा सो त्रपण है, तथा आन पत्रका
 नमुच्चै सहित्त छुसमे मेले ह मनम उपयोग एमा जाणे मन तो ए फल
 पत्रे चमे है ए अचित्त मये इनमे क्या दोष है एमा उपयोग न जाणे
 अतर गुठली मचित्त है । इम वास्तै सचित्त त्यागी होय मो ऐमी चीज
 अचित्त बुद्धिमे राय तव दूसरा अतीचार लगे ॥ २ ॥ तीजा अपक्व अ-
 तिचार मो जा अचालित आटाप्रमुखका अगनि मक्कार नही कीया है
 अर कच्चा ही आटा फाके जे कारणे श्री सिदान्तमे आटा पीम्या पीछै-

ऐतन्म दिन मन्त्रित मित्र रहै पीठै अचिन हूँ ने लिखै है रावण भा
 द्रुप आग पीठै पाच दिन तोडा अण्डाण्या मन्त्रित मित्र रहै पीठै अ
 चिन हूँ । जेष्ठ आमादे तीनप्रहर मिश्र रहै जाधिन माम चागदिन मि-
 थ रह । काती अगहनम अर पोष ए तीन मानमै तनि दिन मिश्र रहै ।
 माघ फागुणमै पाचप्रहर मिश्र रहै । चैत्र वैशाखे च्यात्र प्रहर मिश्र रहै
 पीठै अचिन ३ । इम वास्तु रक्षा जाट्ट अण्डाण्या अचिनकी वद्धि मे-
 नी धारै तय ताचा अतीचार ॥ ३ ॥ चोधा दुष्पद आहार गो रुद्र क
 न्चा रुद्र पाप ज्यु मव जातिरा होला पूय उनी ज्वागिना मिग रव्या
 ति अग्नि मन्त्रमै कष्ट अचिन हूँ केताइक रागा मन्त्रित रहै उनक
 अचिन उद्विग जाणै तत्र जगनी मन्कार त अचिन जाण धारै तत्र चो-
 रा दुषर अतिचार लगै ॥ ४ ॥ पाचमा तु द्रोपधि भक्षण गो तु उ कर्षिय
 अमार निमरग्यागे मेती रुद्र नन्ति न हूँ गिणतीमै आम्भ रहत नैम
 पाडा प्रमुग्गी अतिनीकी छामी उनै र्ग्यागमती रुद्र आमाकी छु ।
 प्रयत् न भाजै । अर प्रमग्गा टोष लागै कामल वनस्पतीमै कोईत
 अननकायकी मरा रहै र्ग्यगृधपणै चै कोमल फली फल प्रमुग्ग अचि
 तकर र्ग्यागैका भी व्यवहार नही है इम वास्तु रोडा प्रमुग्गी रुद्रकी फली
 र्ग्यागै मनमै जाणै रोडैकी फली तो मुन र्ग्यागणी है यू जाणैर धारै ।
 पै यू न जाणै तू द्रोपधि भक्षण टोष लगै । इति पाचमा अतिचार ।
 इति श्री द्वायप्रत निररगे मप्तमा भागोपभोगप्रत प उद्योतमागर्-
 नाग्निनाकृत भाषा मपूर्ण ॥ ७ ॥

दृष्टा

द्वायप्रतकी टीपमै रह मात निरधार ।

अष्टम अनग्धदण्ड का भू लिगु गुविचार ।

प्रथम अनग्धदण्ड मा चो मप्रयोनन धनधान्य क्षेत्रादि नमनिधि परिग्रह-
 मरधी हानिघृद्धिरूप जे कारखे धनशुद्धि निमित्त ममारी जीवह रहत पा
 पकारण मरणा पडे तो मार लूठ बोलखा हूँ पापके उपकरण मिलाव
 खे पडे मनमोत्रा कीया धहीयै, अनेरुत्रिरुत्परूप आर्चन्यान करणा पडे ज

कारण वनादिपरिग्रह आनीविना हेतु है इस वास्तं धनवृद्धिनिमित्तो जेजे
 आश्रम मेवन तो मेवन ता मप्रयानन है इस वास्तं धनव्य दड है यूही
 धनहानि हूवे तत्र भी ऐमा शरण पायके गृहभ्यक्त वे धनहानि करणेक
 अनेक विफल्य करणा पंडे पापभ्यानक संख्या पंडे वे भी अनर्थदड है
 जे कारणे ममारी सुगमा मूलका शरण व्यग्रहार है तो धन नही है इस
 मार्ग उमकी खातर दण्डाय मा अनर्थदड तथा अपन भजन उदुव
 परिवारादि तथा आश्र जो जो आश्रम पापभ्यानक भेयणा पंडे मा भी
 अनर्थ दड है । जे माटे जिहा ताटी कषाय प्रबल निवारक नही तिहा
 ताडी भ्यजनादि पाप छुट नही । ममार्गमे इन्द्रियसुगमं पुष्ट हेतु भ्यजन
 है व्यग्रहार्गमे हेतु रुहार्ग है अपन सुमे सुखी अपन दु मे दु'सी इम
 वास्तं उनकी खातर पापभ्यानक भेय मा भी एक अनर्थदड है । जे माटे
 ममारा जीव पुष्ट श्रिलामी पुष्टलानदी है । प्रबल श्रितिति कषायोदय
 मती इनक ओडी मरत नही है । अरु पचरिधि भोगभेयनसेती केतीर-
 राये इन्द्रियतप्ति रहे आत्मा प्रमृत्ति रहे मो भी अनर्थदड है । ए च्या
 प्रयाजनम जा फोड प्रयाजन होवे नही अरु पापवृत्ति करे मो अनर्थदड
 निष्कारण पागट जिहा आत्मा टटाय दु'कर्मका वृद्धि हुइ सो अनर्थदड
 रुहार्ग । इनके च्यारो भद है मा लिखे है । तिहा प्रथम अपध्यान अन
 र्थदड ॥१॥ पापोपदेश अनर्थदड ॥ २ ॥ हिंस्रप्रदान अनर्थदड ॥ ३ ॥
 प्रमाचरित अनर्थदड ॥ ४ ॥ तिहा अपध्यान अनर्थदण्डके दाय भेट है ।
 एक जातध्यान १ दृग्ग गंद्रध्यान २ तिहा प्रथम आर्चध्यानके च्यार
 भेट तिहा प्रथम अनिष्टमयागात्त ॥ १ ॥ इष्टवियोगार्त्त ॥ २ ॥ रोगनि
 वानार्त्त ॥ ३ ॥ अग्रेमोचनार्त्त ॥ ४ ॥ तिहा इन्द्रियसुखके विनकारी अ
 निष्टशान्ति विहासल जनके मयागकी चिंता रहे ए मुज अनिष्ट शान्ता
 तिक ग्रके मिले । ए मुज नरनिधि परिग्रह मिल्या है उमका रसे वि
 योग पंडे अथवा इष्ट जे प्रलभ मातापिता स्त्री पुत्रमित्र प्रमुग्गका विदे-
 शगमन वा मरण हूय बहूत चिंता करे खाय पीवे नही वियोग दु ख
 मती आत्मघात चिंतने आडर सारादिन सुमंमे रहे तथा घरमे कुपुत है
 ए भाह वेदिले

मुगमती उमका कड़ उपाय पाउ तो भला है, खी विचार मोत मेरी भडी मिला है भर्त्सार क भोलने है चिने चिने भर्त्सार मुजसेतो जुदाइ कर्गवर्गी टम गान्त इनका कड़ उपाय पाउ तो भला हूय जाय सेवक चितव जा स्वामीके मुह आगे फलाणी पै म चट्या है मेरी लाभम करे गा मेरा राही चिने है मो मारंगा स्वामी कड़ जुठ साच कहता पैगा मेरी चाररी डोडापैगा तत्र मे क्या करुगा इमका कड़ उपाय पाउ तो भला है उमके निग्रहरी खातर कड़ जत्र मत्र प्रार्थण मोहन वमीरुगन हुडे कोई जुठा साचा उमका कड़ उिद्र ताके। जठता थाल देवे। लोह के मुख गागे उमका त्रग बाले। उमके निग्रह करणाला कोई छे, कोई धर्त जदिल प्रभुग्य उठी गोलयो फलाणा प्रमनीविधात करगलिदान करे। तो शत्रनिग्रह करे तत्र मे मू मो नी जीनघात करे उमका मग्न राखे पै मुठ गु न विचार तू अपने शुद्र माग साच दिल सेरा करेगा तो तुजे कौन निरालेगा पुण्योय ह तत्र ताइ कोई चुराकरे शर नही। यू आरती जठी विचार इत्यादि मर्म मर्म मसारी अनर्थ दहार्थ छे तथा आगमी अपनी आतुरतालेती निना अशुम कारण मिले पिण आगे मर्म मुनिरूप करे जे दुरमन के कुलके बीच फलाणा मर्म पैदा म हया छे मो मुज दु ख देगा इमवास्त ए गनदागदिक आर इमकी जाय दह पावे तो भडा होय, बहुत तम्दी पावे तो ए गाम छोडिके भाग जावे, इनका कड़ भी उिद्र पाऊ तो फलाणे क रह वै रानदागम खर करू तत्र तम्ती आपसे पावे एसी विधारणा मुठ करे। अरु उमके दिलमे कड़ भी नही है पिण आगनी ऐम अनर्थमे पडे जोरमी तथा सूठ विचार ए क्षम चोर गहूत भये इनके हाकम छानी फोन खरर चोर जत्र अपने दान थावे तत्र मर्म निग्रह करे तो भला है, नह चार क जहालगी पूर्वपुण्य उदय प्रथल है तहां ताई उसका कड़ भी विणसे नही विण यह मर्मपनाला जो चितने है तो उसक चोर मारणेकी क्रिया है, हिमारी आर्तध्यानकी बेठी ओर फिर कोई मातर हया है अपनी यह राखरी करेगा, हमसे पाव आगे धरेगा, टमवास्त पेगा इलाज इम मगमनादेश करणाला फिर उठाव कहाह इसरी दाद फिरियाद लगे

नही इत्यादिक बंठा अनर्थ विचारि पिय मुख एह विचारणा दिलमै न विचारि भैरु कहै क्या वेगा इसका पापोदय प्रगट वेगा तब आपसती हांतव्य मिटैगा नही तो काहै हू इत्यादिक अर्धध्यानार्त्त अनर्थदंड है जिना मतलब यूही पापजाल पोतै राधै ॥१॥ तथा रोगनिदानार्त्त जो ररुय मरै शरीर मै कनही रोग हवै मत्र रोग दूर रहै तो भला है ऐसा विचारि किमीरु पूछै फलाणा रोग क्युकर होता है तब कहै फलाण चीज राधै तो मितार होता है, अरु फलाणा अभक्ष्य खावै तो कनही हवै, तब वै अभक्ष्यादि खावै ओगुरु वतारै तथा जो शरीरमै रोग उपना तत्र बहुत हायहोय बहुत करै बहुत आरभ करै नहु द्रव्यव्यय करे हा हा मेरा रोग यह कब जायगा, घडी घडी पलपल बीच जोतिपीरु पूछै भैरु दिन कर्म है, यह रोगव्यथा कत्र मिटैगा, और वैद्यक पूछै महाराज भैरु दिल राच बडी भका है तुमसै करतव्य जाना है नही, मेरे उपर किसीने जादु करीया होयगा, फलाणा भैरु उपर खुणस रखता है, सो भैरु उपर किमीने रगय हवै तो वैसा जोपो ऐमै रीतिसै नई नई शका धरै, रोगकी गानर, अत्र यह कुलविद्वध धर्म आचरै अभक्ष्य खाखैरु तयार भया अत्र आकाशनी करणैरु भी लागै उनकै मन सोचे में अत्र सदाई यह रहै जो रोइ राग छेदनैकी नडी आपधी मत्र जत्र उतारा झाडा हजराइत ए मत्रहीकी चाह रग्य ए चीज किमही बगत भैरु काम आवैगी ए सब कामकी है । इमरु अपन पाम अमलमै राखीयै ती अच्छा फिरी हाथ ऐमी चीज नही चदेगी तत्र ऐमा जाणिकै जडी घुटी सब एकठी करनै लागै ए मत्र रोग निदानार्त्त ॥३॥ तथा अग्रशोच आर्चध्यान, जो आगलै कालकी चिंता करै, जो आगलै मालमै ए जिनाह कब करुगा तथा ए महिला हनेली ऐमी तो जनाउगा महुको देखकर सर्व अचम्भा पावैगा । तथा फलाणै रैत बगीचा बोयावैग, ऐसा मै भी जनाउगा जो ओर सबकै बगीचा उसकै जागै नाकरै होय जावै, सब दुरमनकी छाती जलै, एमा बनाने तथा ससीदा कीया है सो आगे बहुत यह मुहगा होयगा, तत्र हम अपना मुह माग्या माल लेजुगा, और किमी पास ऐमा नही पावैगा चवैगै अरु लैगै ऐमा वचन आर्च ध्यानमे बोलै, तत्र इतना

पैसा हाथ मार लेंगे थप क्या फिर है क्या तिलमं जागेंगे मां ।
 तथा ए चीज जनन चाहे कोईने पाम नहीं है । कोई थच्छा मिरर
 गाता पातिमाहें ठिफाण दिग्यलाईयें ता वै भी चाहकर लें, एमें म
 अपना भी कर बंधे मिरपाय मिरे, अपना भी काम होय आयेगा, प
 हमें थच्छे मुह भाग लेंगे तत्र एमी मात्र मांगें लोकर खतही रहेंगे
 एमें ह्या ता है नहीं, जस पहिलेम इमगन होय है खाट हमें आगेने
 बांधे है । तामें क्या जागीये क्या हायगा चीजमें नफा मिलेगा है
 नहीं चीज कहा कोई जायेगी, एमी ता मरने ही नहीं, तातु पुता हमें
 ता मार्थे तामें यह भी आचंध्यान, ज मरा मरे घरमें नाज मयद बहुत है,
 मर अगली मारके चिहन मारै है अरु पतरां भा जाले यही कहत है आ
 गला साय बडा निपथ है निमते न्याय्याणा जो कोई रयेगा तो न्याय
 स्रटी जन्डी मिलेगी, अमथ्य दुनाल पडेगा तो भी रचुगा नहीं तत्र
 प्रांतमें तिगुखा भी नफा मिलेगा ता भी नहीं बचें एमें जात जात
 धान भात हमारा मन मान्या वेगा तत्र अठगुणा उपर जाण जान ग्या
 येगा तत्र बेचणकी बात निकलेगा तत्र पैसा बहुत मिलेगा तत्र फिर
 नाच अगममें मगारंगे तिममें जां भी मिलेगा एमें द्रव्य पडेगा लागु
 नी भौना करंगे फेर फेरतरेका व्यापार करंगे । अपनी निनरमें मन व्या
 पार है मत्र गेती महिरम है किमही मै ठगाऊमें नहीं किमही माहिरमें
 मारारमें मद्धा २ पद्धा लगारंगे किमी जागा अपना गुमान्ता रहेगा,
 उहाकी हुडी लिग्य टवेग ओर निहा ज्यु ना हृ भाडा लगारंगे अ-
 धरा किमी मिररमें कोई चीज अपनी गमकी लीचीये इममें ७ममें चरभ
 वयली जायेगी कोई वर्षे न्यार पाचमें लखी फोटी धजुनामनी गाल
 खडे रहें अपना भी नाम मत्रमें मिर होयगा, जत्र आमान हाय जायगा
 किमही वृ खातर में नही न्यारंगे, ऐसमें कहाइ मागाइ सागीका भी
 जाग मिलि जाय तो महतही अच्छा, तो इहाही उपार होलीया इहाही
 फिर प्रनाये । लटफेजाले सनहीका जोग मिलि जाये मनके मनोरथ स-
 बही फले । दुश्मनु का छाती उपर कीया माहिररा तो मुग दले पहती
 त्रि वे एमा राजप्रधारमें नीमा मूर हवेग तत्र अपने प्यार अपनाय वृ

पदार्थगं सुदीपुरु निरुलाय देवै तत्र अपना जायता ऐस मनकै चाहै सब करैगे भोगविलास करूगा अर जो यहा सादी हमारी भई तो बहुत रुम-बरती करगै कनही स्त्रीयादिक अपनै जीवर्म गुम्मारु रँठंगी तो तत्र उसक ममारंग अछी अछी तरै कँ तास जरी घोगै गहिना पहिनावंगे इत्यान्तिक मनरुल्पना जूठी माची बाधै । बहुत कर्म उपार्ज तिस ते यह आरतध्यान छोडी अरु धर्म करणी करै आगलै भवकाल जो इन्ह भवै ध नसमृद्धि जमप्रतिष्ठा मान महत्त चाहै परभरै देवत्व इद्रत्व पदवी चाहै ए पहिला अग्रशोचनार्च भ्यान रुहीयै । तथा गैद्रध्यानकँ न्यार भेद लिखै है । सो जाणणा, तिममै पहिला हिंसानद्रोद्र ॥ १ ॥ मृपानद-रोद्र ॥ २ ॥ चौर्यानद्रोद्र ॥ ३ ॥ मरुत्तणानद्रोद्र ॥ ४ ॥ तिहा प्रथम हिंसानद्रोद्र जो त्रसधार जीवकी हिंसा करिके अपनै दिलमै हर्ष करै बहुत जारभरी चीज घर होली वगीचा बनारै पीछे उसकी तारीफ लोहै सुगम सुण मनमै बहुत खुस हूँ जो मैने रेमा अपनी ओकूय यतमै ? कैमा काम कठिके करायै मन लोक तारीफ करै है हमारे जैमी अरुफला फलान थाइ जणाका हायगा मेरा पैमा गरच लगा सो म रही मफल भया, तथा रमोई खानकी प्रमुख चीज बनारै सो तिस मै रहत भातिका ममाला भक्ष्यस्तु कैई अभक्ष्य मिलारै, अनेक अग्रिम-भ्कोरे देकर जखी वस्तु बनारै । अत्र सप्त घुलावा दे करि के न्याती जाति मित्रमान प्रमुग्ग वु जिमाने तत्र वे रमिए लोग भोजन करिके रसोइकी तारीफ करै अरु कहै ऐसी वस्तु रनी बहुत बेर ग्राइ होयगी भाइजी पिण आजरा तो मना ऐमा न्याया क्या तारीफ करै जितनै ममालै दीयै है तिनकी गमरोई बहुत ही मृपीयारी लगै है, ऐसी रमोइकी तारीफ बहुत सुणैमेती मनमै रुम हूँ अरु फलाने मजमानी करी हती तिमकै नाम टै निरुलै थै, अरु हम वैमा भोजन कीया, मन तारीफ करै है, फिर एमा मोमर पावंगे तो फिर भाईअधक वृलायक अछी तरै मेती जी-मारंग, तथा रान भोजन अभक्ष्य चीजकी नकल ननायक उमरा आसय धरिके गारै मिलारै तब रमीया जीमख बखाणै, तद जाणीज सप्त म-फल भया अरु हम भी रुम हूँ, जैमा हमसरैमा कोइ भी भोगी.नही है । अथवा राज्ञविग्रहयुद्धादिकरी वार्ता सुणिके रुमी हूँ, ए

भला सीया । यह गना ममर उहादर है, आगे भी इनके पिता दादा
 पतिगामिन पेट महार है, अरु सीपाईगीरमै बडे मजबूत हूतै, तिनके
 एमी है इनके पडेसन उम जगा फते पाई । निह्ला भी ग्वाली रगया एमै
 मनमात्रा जागणवाला है । पेट अकल बाहादर है । पडे पडे भुमीया कुमार
 इस्मनर गर राये हुते मय र मिग नमाय करि चो तरफ अमलरा डरा
 उनाया रा अर भी मय जुवान एमे ही है । एणु की जहा जहा चौकी है
 तहा पटा चीजरा राई मालीर नी रता है । तथा थोर क्या कहु
 फलागा मुसद एकी चाटमै अर र मारलेते, आप एकिला निर्भय
 आप र गेटे र चीर टालना आर क्या हायगा, साबाश साबाश कहे,
 आर इस्मन क मया मुगिकर गुम र, मरिणी याह है । मुँडे हाथ फेर ।
 पहचा ममलै हाशुका, मुगम र । हगमपोर हमार पुण्य ते मर गया ।
 एमै एमै कट कम राई । यह मर न रगे मारणवाला तू कौण, उ-
 मरी मरभित्ति आणपरी मड उरके भिमो भोगरी, एर तिन तुन्हभी
 गह यही परुडोग, इमका इठ गर रगणा तिनमै कट भला नही, अर
 ना तू मारता ता इतना तिन क म नील रगी तो ऐमी विचारणा हिमा
 नर गट ध्यान कहाये । ए पिना मुतलर रमै राधना ॥ १ ॥ इमरा
 मपानर राट रहे है जो जुठ गोलिके हरे पामै, जो मनमै विचारै, मैने
 कमी बात बनाये कही, ना मरने कउल रगी, मेरा रूपट निमहीने
 नही जाण्या, ओर र ऐमी कला नाये, एते पडे पडे अरफलवान हुते
 पिण काई गोल मकया नही, मैने मरहीम जराय म्वाल कीया, बोलमै
 ता पडी रगमा है, राणना ता कट राम रगता है, इमही अगत हम
 नरी इत ता दभते क्या इलाच हुता, इन मयुकी गति हुती, ऐमी तरै
 पडे तथा इस्मनरी भी जुठी तोमत रवे, टु प पाये तय हय, मैने
 कमा डेर कीया है । तया अपन परनर सरधी आगे वाता बनारै
 अर मुरगा तुम् क्या रगेमै, हमने कैम कैम कैल कीया, पे किमीको
 मालूम नही है, आपरा फल मोट जाण तय अरकल कैमी तथा दरवार
 चाये चुगली करता गनारा स्वार्थ करमै हय, मैने राजा क कैमा
 बर्मा सीया है । एमै एमै मनमै विकल्प करै इत्यादिक मृपानद रौद्र
 कहीये ॥ २ ॥ तीमरो चौरानर रौद्र नहीये । तीमरो चौरानद रौद्र सो

म परि यही जान स्वर्चम आय जाय तो तुम्ह कहत वह आपधीवी
 भूत तारीफ करते मा हमर एक मोताप भी देखीम नाई। तुम्हाग
 उठाना रहता तिम खातर जान यादगीरीमें आय जब वह कह हम
 उपर भातिपन बडी कमबख्शी करी तुम्ह हमारी खबर लेवो नहीं तो
 फात लैय एमी तनवीनमें पढम वात बनायके लखे बडा बोज देकर
 जागलैम लैणा म्म होणा इत्यादिय विस्वपना घुरी करणी यह भी
 चार्यानन् रौद्र कहिये ॥ ३ ॥ अर चौथा मरचणानन्द रौद्र कह मो
 चाणगा, मरचणानन् रहींय मो जा परिग्रह धनधान्य बहुत बडाँ फेर
 अधिकता चात करे पाप कुदुम्भ पोपलैके ताई परिग्रह बढावणेरु बेहद कु
 गति विचार आरै लोकविद्वात्सकी अपत्ता न करे, यू करत पापपरिग्रह
 मोई प्राचानपुण्यमती पाय, नहत मिले तन मनमै सुम बे, देखो मेने
 ए मन एक चापने सोया। एमा कोण स्वर्चनार हृषगा, मरे जैमी
 तैलत मिलायगा, एमा अहकार रर मगन रहे फेर चेतना उगी परि-
 ग्रहमें लगी रहे, मरे राड उम परिग्रह क नुशान होय द्रव्य क बडा-
 लकर मरे तालीग्रमुयकी खबगदारी मरे राति क नीई नाही, मगा
 पुत्रका भी विश्वास न करे, पत्रादिक क कह तुम्हारैम केमी अकल है
 मति मारि गई हे तुम्हागी, तुम्ह ने उद्यमी होवे अकल हो, हमारी तर
 क्या तुम्ह कमायगे तुम्ह तो धन विगाड हो, हम न हूवगे, तब जा
 नीय क्या होयगा। लछन ता जममेही जाहिरमे आवे है। तुम्ह क बडी
 तमती हूयेगी, कमायगरी ता कला एक भी एकम नहीं, तो वह दो-
 नग केय भोगे, अर मुरगा धन कमायणा बडा मुमकल है, कमायकर
 डकगरखानी मद्रम अर ताड दगो, हमने कमाया भी कमावे भी है।
 जान ताई लोकीममें प्रतीत आरु व्यवहार चलाये जाय है मो हमारी
 खबगदारीमे और दूश्मनूरे ताई भी होर कर रख्ये है हम थकेने कोई
 दारा मुतोदम भी नीमालता नहीं है, तुम्ह जैम हुते तो धन कमावणा
 तो दूर रखा पर तुम्ह क ग्याण कान देता एमे दुश्मन लागि रहे है, हमा
 री अकल सोयी, ज्यु तुम्हारा भला हूवे, इसतरसे परिग्रहमें चेतना लागि
 रही है मो मरचणानुवधी रौद्र कहिये ए मरे अपध्यानाचरित अनर्थ
 दह कहिये। दमरा पापकर्मापदेश अनर्थदह मो हरघडी जिमी क गैर-

मग्धी कू लज्या दाक्षिण्यता विना पापोदेश दीर्ये । जो तुम्हारे घरमें
 बड़े उड़े भये, हमारे देगनैमें आज आयै, तिसतै तुम्ह क कहतै हो,
 अत्र इम कू समारौ ज्यु यह सुघरेगा तो गाडी हल सघ जगा जोतोगे
 तहा रहैगा, शरीरका बल बधैगा । नही तर गौ कू देखि करि हिरस क-
 रैगा तो लोक कू चोट चलावैगा, तिमतै इस कू फेरौ गमी मीतान क-
 रागौ, मालकू कछ विगाडो हो पीछे जोतमै जुवैगा नही, जो फिरागोगे
 तो चमकू मिट जायगी, नाश्या भी तो हनोज नही है, तिमतै नाथ तो
 पहिला जोइजै, ऐसा पापोदेश देवै, और कहै, एह घोडा बछेरा उडा
 हूवा जायै है, अत्र इमकू फेरणीयै, पाम फिरावा, ज्यु चाल मीगवै
 चोकडा लगामक्री दिगवौ अत्र उपर काठीप्रमुख मडागौ, बाध्या गध्या
 जिनावर खराय होता है । तथा अवर परसातकै तिन आयै, अपना
 गेतमै घाम गुछली व मो कटाय डालो, जू जमी माफ हूवै, पाणी वर-
 मातका खेतमै भरै, पच कर जमी तर हूवै तो धान अच्छा नीपनै । वर-
 मात भी आया, घरकी मग्मत करारौ, ए घर जाजरा भयै है, फेर व
 नारौ, अत्र बखत है, ममाला मज्जुरी सत्र समती है, अब हवेली तुरति
 हींसु बनावौ, तुम्हकू खर न हूवै तो हममेती पूछलेना, ऐसीतर मनसु
 पैम रहैगा उम तजवीजमू बनैगा तत्र सत्र कोई देखिकै मुस्ताफ हायगा ।
 ऐमै उपदेश देकै कर्म खोटै नाथै, तथा फिर कहै तुम्हारै भाईजी लडकी
 तो स्याणी हूई, इमकै फिरारम होकै नही, व्याह जाग भई कछ न हूवै
 तो हमसू लेवो पिण किमोका नहीतर ओगका करन करो, नहीतर हम
 किमीकू कहीकै हमारी मातगरीमू लेवो पिण यह नाम कीया जोइजै ।
 यह धर्मकाम है, तिममे डील न करो, ऐमै उपदेश ममार वधावखैकै दे-
 वई । श्योरू कहै भाईजी बगीचा ममगवौ रहाड जमी सुकत होय तो
 आगि उपर जलायघो । यह जगली नहूत घामकूमरा यध रहा है मो
 कटायकै इसही जागा जलाय देवौ, ज्यु जमी माफ हो जायगी ऐमी कहै
 और प्रेरणा करै । अमुका तुम्हमेती दुरमनाई रखै है, मो तो अब तुम्हा
 ग बखत है, राजदग्नारमै तुम्हारा तो काट्ट है रुडाई पेचमे देकर वि
 माय डलारौ, अपनी चलती होय तर गर् न कीनीयै । हमारी

लक्ष्मी । अथ प्रथम फिदि कय पारोग । अथनी चलतीके बीच भ
 ग रुग्णीम नाया तो क्या जीवगीना फल है, निम वास्ते दुश्मन
 म गाग रुग्ना मोह भला है, यह ता तुम्हारी चढाई लोहने आ
 न्त रर है । एक न्य पर हमने भी गुणी तिम ते तुह अजब युती
 भित्ते हो यह मिग उपर चटा जाता है, तुम्हट इतनी भी निर्ग
 दुश्मनरा ऊटान हो सार्तीय चटामलेती, लोहकी यही कहत है
 ता ररने मेती रीरिये टर्म पापटाप न गिणी जीये ऐम न उपेश
 यार रर टागानि चत्या है ता भी हनान र्मोईसी रुह चत
 नहा उठा चरके र्मार्डे की तरदुति ररा, चौकाप्रमुख रिगरी, स्
 ररा र्मोह पीर मय राम है, हमारे ता उठने है रडी फन र्मोह
 र्मारे तय रुह मुर्च इत्यादिक उपशक प्रयोजन विना जटा वा
 रुहिना तिमम क्या निरुलगा, जापना आत्मा भारी करणा ए दिक्षप्र
 आरुण्ड कहना । जो अथने गवधात्र तथा दाक्षिण्यमेती, तथा
 गरचिना हर कोईह रहना क र्मार् नही करते हो । आगि नही
 तो आगि लेरै, हमारे घग्मेता जय चाहो तर हमारे आंगनेम मार
 थोर उपशक है, आगि दीश जातो बडा सच य है थोर कई
 रजारर वाय तरकारी बहुत आडे है ले आये । सितारमेती दिन
 तेयकी पीले अमरुकी तरकारीह तो चयसे अथने हाथमे छोटी
 पाई ये पीर घी हीग हलदी मगाला घालीके पचाईये, तर पीछे
 मरी वेला उम जा मजा पारोग । तर कतेगे शापाम अर आगेमू तम
 ग्याग जागणैकी चीज है सो मजेमू बनाइये र्माइये । कोड देगे ते
 रर, रडे चातुर है । म्मा विना पूले माग विना देव, कई अधिकरण
 अर गीगारे, मो भी अनर्थदइ तथा थोर यत्र जो चरकी उग्रल
 पाडी रर नाज चरखा चरखी घाणी मगेता टान छुगी कैची पापडा
 गति बुहाटा फरमी थोर भी मय हथीवार छोट मोटे चितने होय
 वाय ररक रटारी ररण प्रमुख तथा ओर अधिक्रणमै बुहारी प
 परा र्ममरम की टडी आदि है । थार मर माप रीह रणान
 चालता चलाये वेठा गडबड करै, नि प्माण पाप लगाये, ए

आपकी अग्यानताम वाधेवाइपणै मेती लीगे यथा उहु जातके तेलमर्दन करे, रगयके ऊपर ऊगटना पीठी मुगध द्रव्यनिष्पन्नमेती तेलकी चिकनाई मिटावै वह पठिर्म कइतीतीती चीज घट्ट पडै, उसमेती ऊगटना करे पीछे जीवाकूल भूमी हो उम जगा उपर बैठिके स्नानप्रमुख करे । तहा वह पाणीका रेलचलै उहा जो जीव होय सो फटकरम गधमेती प्रिनाशने तथा थोडै पाणीका काम वे, वहा उहुत जल टालै, इहा तजवीज करिके शुद्ध भूमि देखि करी स्नान भजन करे तो दया पलै । प्रमाददोषमेती धर्मकी कइ क्रिया गडगड कर, तथा कौतुकनाटक पेरणा प्रमुख देगणै आप जावै, ओगक साथ ले जाय दिग्यावै वं दोडागेडीमे चलतै आरै उहुत जीवकी विगधना ह्य राह बीच वहा तमामा जाय देखे, सुमी ह्ये, आरके आगे तारीफ करे । अपना इहलोक परलोकका साधन जा व्यापार उद्योगे जप पूजादिक उस खबत रहि जाय तब ने काम सोटावै । फेर वह तमामा देखि घर आयकर परजनके वर्णन करे, आप चीकना कर्म राधे ओरके परिणाम त्रिगाडे, ओर सती मत्त करणै कूट लैणै चले, ओर चोग मार्णै ले जात होय उहा देखणै गारै दगै उहा परिणाम ए रहै, अय इमक कय इमक कच मारैगे, मती रहैके घरमे इन पंगे आगमै कमे बैठड, ओर मिश्यात्पकी अनुमोत्ना तारीफ करणी पडै, चोग मारै उहा पापकी निंदा पकडै, मारै उमकी तारीफ करै, उहा चीकना कर्म राधे, फेर फेर जय वै बात निकालै तारीफ करै तब भी चीकना कर्म राधे इमकेड रेरे कर्म राधे तथा कामशास्त्र जे कोशशास्त्रादिक उनको परचय उहुत करे । चौरागी भोगामन शीखै गीसावै, पडिनादिकमू माडी पुनम तिथताई सुद वदिमै चढता उतरता कामनेवना वामाहू धारै धरावै, नगरमिख वर्णनशास्त्रकू पठै पढावै, भाव भेद अग उपागके बतावै, ओर नदीतट जलप्रीडा करणै जावै, ओरकु उलावै ने नदीमे तिहा तोडी । अपना मेल घावै । वह मेलका पाणी चलै इहा तक सय जलजविका छोटेका नाम हूँ । हूस घरके आपकै का म मना बढायणकी कैफकी चीज माजूम गोली चूर्णप्रमुख गारै । पचद्रीय जीवयोपन्न मलमकी पट्टी लगावै वर्धजका ओषध करै । ओरकू

माग्याँ । तथा तिम रचनम् आप्त परम् कामसज्ञा वधेई चेतना विग
 ८ एम् रचन माय आरुक् पालाय । तथा हाथके मुखके नेत्रके भृगुटीके
 नाग्य रं चिनम् देख थोग्क् हास्य थायँ । किमीकी मजाख कर करायँ ।
 यत्वन मम बाले । तथा गजरुथा जो रानाकी दौलति बग्याने, रानाकी
 लडाड रग्याने, इमतरं फोजा चली, लडाईके मामान हँ हम भी राडे दे
 य र इमतरं मनपोमाकर दग्मनम् हेर कर लेने, बडा तेगवाटर है ।
 तथा राजा गानाका भाग रवाने ओर कहँ, उम रानाकी कोण रगेपरी
 करे र जाय दूमरा इन्द्र है तिमम् इतना सेर अतर भोगम् थायँ है ।
 गनाय अगम् पल रवाने करे । तथा तिमना कामराज दशम्था जो त
 दत्तद्विय मुख जो ग्यानपानाति रवाने अथवा तिमगोटह ते मुणिके ओर
 ती भी चित्त नागचं विचरे, आप्त आरभकी अनुमोदना हँ, उम क्षेत्र
 तिमपाकी रम रथायँ । तथा स्त्रीम्था जो स्त्रीको रूप रग चतुर्गई उसके
 रत्नैलमा निप्रगतासु करहचरी कैम द्विष्टात मुणायँ जारी तिमपाकी र
 जाणै मा रडा चतुर कहये उमरु मुणिकेई पुम्सुके परिणाम तिमडे ।
 अस्त्री मुणिके फेद सीयँ । आप्त तिमपयकर्म आर ओर भातिके रथायँ ।
 तथा भक्तम्था चा राना पीना अमनातिके च्याम्ड प्ररार आहारकी
 कथा कहँ बरवाने तिमबोर्ड राई रमतती उमके सन्कारकी वात तरं तरं
 रतिके रवाने सीयारँ । फलागी रमाई फलाणी तरकारी इमी जुगती
 बनारं देवता थाप आय आगेरँ । परमेथरम् भी भोग चहँ ऐसी रनी
 है । इहा निकलकरु भी ऐय लगायँ गात् मिध्यात्य पापायँ केड जीयँ के
 मुनिके ऐम आरभमे प्ररते तथा एम् दिन बहत आरभम् रग्याया, सो
 फरफर याद करे मराहँ । तत्र रम् र्था स्त्रीम्था कर्म राधै । ए च्यार तिमथा
 रग्न लाय मर्याता नीति धर्मगमीरता इतनेरी हानी करे लवाड कहायँ
 ए थायँ तिमथा न करे तो रुठ अपना काम सीदायँ नही कृष्ट हाद्वियमुखम्
 हानि होयँ नही, केवल निम्मा र्मरधन चीम्ना थायँ ए प्रमादसे हँ, ए
 बुचाल भिटायँ मिरे, काममान पायँ फोकट दहायँ ए प्रमाद अनर्थदत्त
 कहयँ एम प्रतके पाच अतीचार लिखँहँ । तिहा प्रथम कदर्प चेष्टा कहयँ
 कम्प रहीयँ । कृचेष्टा अतीचार भो जो मुखविम्भार अविम्भार नेत्र

विकार हाथूकी सजा बतारै । पाऊरुं विचारकी बुचेष्टा करै, चेष्टा करते थोर कू हामी आरै किमी कू कपाय उठै । कहामी कहाँ चली जायै । अपनी लघुता हूवै धर्म निदायै ऐमी बुचेष्टा करै सो प्रथम अतीचार जाणणा ॥ १ ॥ दुमरा अतीचार मुखमेती मुखरता करै, सो जो अस-बद्ध वचन घोलै जिनमै ओ—एउ प्रगट हूवै, कष्टमे पडै, अपनी लघु-ताई हूवै धैर धार्धे धीमाई बधीनै लवाड चुगल इत्यादि नाम धारै, लो-भमे जावै, एमा बहुत बधरर गोलणा यह दुजा अतीचार ॥ २ ॥ ती-मरा अतिचार भोगाधिक आरम्भ करै, सो जो भोग उपभोगको धैरवै स्नान पाणी आहाग वा त्रिलेपन साँधा प्रमुग्य आरम्भकी क्रिया जो है सो अपने स्वपमेती ज्यादा बनावै निरमा आरम्भ करै द्रव्यव्यय होवै । ब-हुत इमक धरै सो यह तीजा अतीचार ॥ ३ ॥ अथ चौथा अतिचार कामकै मर्मकथन जिमकै गोलणैसँ अपनी विरानी चेतना काम क्रोध मर्या होय जाय एमा ते तर्का गोलणैसँ विरहकी बात दुहा सारखी रेरता श्रलणा कवित पग्जिगग श्लोक शृङ्गार रसकी कथा कहणी सो चौथा अतीचार ॥ ४ ॥ अथ पाचमा अतिचार अधिकरण दोष कहै । सो जा अपने कामवाजसँ अधिक अधिकरण मैलै तैयार रग्ये । सब अगो-पाग मिलाय के ममार क रग्ये । सो अधिकरण कहिये, सो जिनसँ त्रिसादिक पापस्थानकी पुष्टता दाय । रथ उखल मुमल घण चक्की छुरी तरनार कटागी बडुरु कमान, तीर तरगम ढाल बरछी सरोता छीनी फरमी कुटाल प्रमुग्य हर्षियाग मर उनसँ जादा बनावै विना मबध दा-चिण्यतामै माग उम कू चाहकर गेवै । विना मार्गै सो पाचमा अतीचार जागै पिण आदरै नहीं । ममजु आरक ते मा तो त्याग करै एह बडा लाभ है ।

इति श्री द्वात्रिंशत्त टीप विवरणे अष्टम अनर्थदंड विरमणत्रत

५ उद्यात सागरगणिनाक्त भाषा सपूर्णा ॥ ८ ॥

॥ दुहा ॥

अथ चाँ शिरयात्रत कहु नवम सामाहक नाम ।

टोप बचीस छाडकर बैठै एकान्त धाम ॥ १ ॥

द्वादश कार्यान् प्रथमं पुनि दश वचन प्रमाण ।

मनको दश दोष ज मिली मन वचीम सुजाण ॥ २ ॥

अर्थ — तिहा छद्म अरु सातमा तथा आठमा एतीनुं गुणव्रत कथा
अत्र पत्रा आठ व्रत कृ अरु आतमगुण कु पुष्टिकारक, अपिरति कषायमे
तादात्मभावे मिल्या अनादि अशुद्धता जो विभाव परिणतिकी दर मि-
गवर्णक आमिक गुणानुभाव वरणे महज स्वरूप रमास्वात्की मनी पारणे
क नवम मामायिकव्रत करणरूप शिचाव्रत लिखे है । तिहा मामायिक सो
ना जवन्य दाय घटी प्रमाण आर्त्तरोद्रध्यान परिणत क्रियारूप अशुभ
सावध व्यापार ओडिके आत्मा क समता परिणाम राखे मो मामायिक
अथवा समजाय मामायिक एतल, मम कहता मय्यरु प्रसारे रत्नत्रयी
ना ग्यान नशन चाग्रिप्रम्य सहजरूप उदामी वृत्ति मुक्तीना मार्ग मो
मम कहीये उमना जो श्राय जो लाभ हूवे जिम क मामायिक कहीये ।
ए मामायिकव्रत दोष घडीसी मुनि भारती वानगी है निशानी है ।
अरु अनादिचालका विश्राम रणका मय्यक उपाय है जिहा माधर
नाय घडी स्वरूप ममुल चतना करिके सहज स्वरूपकी चाहना धरि ने
ममल भावध त्रिकरण योगे तजी के मामायिक करे । उमने बनीण दुपन
दुरि करे, तत्र शुद्धि हूवे मो लिखे है । तिहा प्रथम बारह दोष कार्याके
है मो बताये है । तिहां सामायिकमे पग ऊपर पग चढायका उर्धासन
पलाठी लगाय के रमे, पाव उपर पात्र चढायके बेमे त मानमहात्म्य
पयायकी वृद्धि विनयगुणकी हाणि होय अथवा उखमेती गोडा बाधकरि
ठामणी करिके बेमे मा प्रथम दोष है ॥ १ ॥ जिसमे विनयगुणा दीपे
उद्धता न जणाय अरु जयणा होय ऐमे आमन रसे । तथा दुमरा चला-
सन जोष मा जो धिर न हूवे । वेर वेर आघा पाछा हाले चपलाई करे,
मूलमार्ग ता प्रारन एकहीन आमणै सामायिक पूर्ण करे । अडिग
पणे रहै, कदापि रोग निर्मलता कारणे एकामणै टिम्या न जाय फिरणा
पडे तो उपयोगसयुक्त जयणापूर्वक चरत्रलेमेती अठी उठी पूजन प्रमार्जन
करिके आमन फिराये, वे चाले राये नही मो दुजा चपलता दोष है ॥२॥
हिवे तीनो चलदृष्टिदोष कहीये, जो सामायिक लके द्रष्टि नामिका ऊपर
रगणा है अरु मनमे शुद्ध श्रुतोपयोग-राये, मौनपणे ध्यान करे ।

तथा जो मामायिकृत शास्त्राभ्याम ररणा है तो जयणायुक्त है मुहप-
 ची मुग्घे देई द्रष्टि पुस्तक उपर ररिऊँ पढे मुग्घे, तथा सामायिकर्म काउ-
 मग्ग ररणा है तो च्यार जागुल आगै अरु माडातीन अगुल पीछे मो-
 कले पग रहै, ऐसी योगमुद्रासँ रहै रहै भुना दोऊ प्रलपित रग्य, द्रष्टि
 नामिकाऊँ ऊपर रखे वा जीमणा पगकेँ जगुठे उपर रासँ ए शुद्ध सा
 मायिक शैली, वै शैलिकु छोटिकेँ छोटिकेर चपलपण च्यार दिशि आरु
 फिराँ चरित मगकेँगी तरँ मो त्रीना रोप है ॥३॥ चोथा मावद्यत्रिया
 दोष कहै मो जो क्रिया करिकेँ कष्ट मानद्य त्रिया करँ अथवा मानद्यक्रियाकी
 मना करँ अमारति करँ मो चोथा दोष है ॥ ४ ॥ पाचमा जालनदोष,
 सो जो सामायिकर्म दिवालप्रमुग्गका आमरा आडिकेँ निरभय एकामनेँ बँठे
 ए रीति छे डीकर वा थमरु दिवालरु पीठ लगानकेँ बँठे, अथवा आरुके
 आरुकेँ बँठे दिवालरु पने पिना, उहु जीनका विश्राम है बडा पीठ लगानते
 में उत जीनरु पिरापना हुँ । निद्रा प्रमाद बढे ए वास्ते आलचन
 ए पापना दोष है ॥ ५ ॥ अड्डा आरुचन प्रमारणा दोष मो जो सामा-
 यिक लेरर रभीतिना चरण प्राणी हाथपाद मकोचै विस्तारै, जे कारणेँ
 सामायिकर्म तो पिना पुष्ट चरण हलणा चलणा नही है । जरुगीमेती
 नचार हुँ । तो तत्र चरणलामेती पुजन करि प्रमार्जन करिँ हलाँ म
 णम अगमहताका खेद धरँ । ए मलीपिना निरुमा हाथ हिलाँ नही चो
 हलाँ ना छटा दोष है ॥६॥ सप्तम जालम्य दोष मो जो सामायि
 कर्म जगे आलम मोटे, जग अग णटाँ । कस्टका करे रमरवांकी करे
 ए प्रमादकी उहुलतामेतीप्रतमे खेद ऊँडे । तत्र शरीरम् अगतिभाव जागै
 तत्र आलम मोडे, अमुग्गमण ऊँडे ए मातमा दोष है ॥ ७ ॥ आठमा
 आमोहन उप मो जो सामायिकर्म अगुली प्रमुखरु टेढी करिकेँ करडका
 कडे, ए प्रमादकी प्रलनाम् मे, मो आठमा दोष, ए तीनु अडा सातमा
 दोष निद्राप्रमादकी उपाधिम् हुँ दर्शनापरणीकर्मका उदय प्रलमेती
 हुँ ए आठमा दोष है ॥ ८ ॥ नवमा मलस्पर्ष दोष मो जो सामायिक
 लरर अगमे सुनली रण मूल भाग तो सामायिक लीधे गजुली प्रमु-
 गकी उपाधि उठी, तत्र मे चेतना टीरुपमे नही नही निरुल्प हाँ लगा,
 शुभ आलनमेँ चेतना यिग न रहै । तत्र नाचार होयके चखलाप्रमुग्ग

मती जयणापूर्वक पुनन र प्रमार्जन करीके मनमें अपना अस्मरणपनाका
 पत्रात्वाप अना महापुरुषकी धीगता मनमें भावतो वीमै धीमै खिजुली सख्य ए
 भल हे गा उनमा दोष ॥ १० ॥ इग्यारमा विमासण दोष मो कह जो
 मामाधिक्रम अगविमामरा करै । एतले हाथका योभा देवै, वेगल ह
 रा करै ईट मा इग्यारमा दोष ह ॥ ११ ॥ चारमा निद्रा दोष सो जो
 मामाधिक्र लेकर निद्रा करै ए मरिघाती प्रकृति है भो सामाधिक्र निष्फल
 करै ए वाष्प गरमा दोष कथा, ए चारह दोष मामाधिक्रम काया के दो
 प छोडणे ॥ १२ ॥ अत्र दश वचनका दोष कहै तिहा प्रथम कुपोलका
 दोष मा ना मामाधिक्र लेकर कुवचन बोले, कुपात्रय भल उत्तमपुरपके बो
 लण लायक वचन नहीं जो वचन सुणिकै मिमीसु लज्जा भय कपायादि
 उपने मो कुवचन दोष रहीये ए प्रथम दोष ॥ १ ॥ दुजा सहमान्कार
 टाप मो वचन सामाधिक्र लीवै आगे पछि उपयोग विना दीध बोले, अ
 विचारित बाल, ज्यु मनमें आवै तेस कहै ए दृजा दोष ॥ २ ॥ तजिा अ
 मतागेपण दोष कथा कहायै, मामाधिक्र लीयै मीमीरैताई जूठी तोमते
 उरनरी किया करै भो तीजा दोष ॥ ३ ॥ चाथा निरपेक्षपाक्य टाप कहै,
 ना मामाधिक्रलीधै शास्त्रनिरपेक्ष अपने छै सेती बोलै, युभी जैनमार्गी
 मदान् मापेक्ष वचन सोल्या चहीयै । निरापेक्ष बाल नहीं । मो मामा
 थिक्रर भावै ज्यु बोलै मो चोधा दोष ॥ ४ ॥ पाचमा सक्षेप दोष मो
 ना मामाधिक्र लीयै मत्रपाठे वचन मक्षेपे करिवो जे अक्षर पाटादि
 हीन करि रहै यथार्थ करै नहीं ए पाचमा दोष है ॥ ५ ॥ छटा कलह
 रम मो जा मामाधिक्र लेकर माधर्मीमेती कलह करै, सामाधिक्रम तो
 कोह मि यामति गाल भी टेने वा उपमर्ग करै कुवचन कहै तो भी उन
 मती कलह न करै । ज्यु ज्यु करै कलह समापणकी चिता करै तो घे
 माधक सामाधिक्रम माधर्मीक माय कलह न करे अरु क्लेश करै सो
 उहा दोष है ॥ ६ ॥ मातमा विख्या दोष, मो जो मामाधिक्र लेकर
 राज्यादिक च्यार विख्या करै, मामाधिक्रम तो मिज्झा अरु ध्यान
 इगहीसी तो मुरयता है कदापि ते नहीं करे तो धमकथा वेठा करै
 मो महापुरुष चरित्र अथवा तीर्थादिकरी महिमा कहै । ओर ऐमी तैमी

कर्मवृत्ती विरुधा न करै, करै तो मातमा दोष ॥ ७ ॥ आठमा हास्य दोष कहै । सो जो मामायिक लेकर पारकी मजाख करै नहीं, जिख कारणे हास्यमोहीनीके उदय हास्यरममेती इहलोकमें मजाख करै तो लघुता पामे लोकिकमें यृ कहै है अनर्थको मूल हामीरोगको मूल खांसी अन्य परलोकमें तो वै हास्य रमकर्म उदय आवै तब रांतरै भी छुटै नही इम वास्तै माधक महजै भी मजाख न करै, मामायिक लेकर तो कदा क्यु करै । इम वास्तै आठमा हास्यदोष सो त्याज्य ॥ ८ ॥ नवम अगुद्ध पाठ दोष, सो जो मामायिक लेरै मामायिक मृत्रादिक उचरै । उगमै मृगसेती मपदाहीन अथवा अचर लघु ठिखाण दीर्घ बोलारै । दीर्घ म्यानकै हम्ब बोलारै । काना मात्रा हीना अधिक गोट्टा अशुद्ध पाठन उचरै यदातदा कहै, वर्णमूत्रका सो नवमा दोष ॥ ९ ॥ दशमा दोष मृणमण बोलै सो जो मामायिक लेकर उतावलो म्यष्ट प्रगटा अक्षर न उचरै, पद गायकै ठिखाण इसो कहै मृगमेती अचरकी कट्ट टीप न पडै, कोई जाणे मग्गी मगभटकरै छै । गटबड करिके पूरो पडै सो दशम दोष ॥ १० ॥ यह दश दोष उचनका जाणणा अब मनकै दश दोष रहै है । प्रथम अविनय दोष सो जो मामायिक लेरै किरिया मय करै पै मनमें विनय नही विनय सो मामायिक क्रीया, कौनतरै है, रौन फर है, रिमीका मापन है कौन पर माध्य है । व्यवहार सामायिक कौन, निधय सामायिक कौन, मामायिककी क्या मैली है, ऐमा विवेक बिना सामायिक करै सो अनियेक सामायिक दोष प्रथम ॥ १ ॥ दूसरा यश वाछा दोष सो जो सामायिक क्रीया यज्ञकीतिहू माडै सामायिक ते निर्जग का हेतु है शिष्यपत्का मुग्य माधन है सामायिक करिया यश वाछे । सो दूसरा दोष ॥ २ ॥ तीजा धन वाछा दोष सो जो सामायिक बीच करतै धनात्तिकी चाहना वाँछे । हमारे सामायिक कर्षि धन हा ज्या, अथवा सामायिक कर्षि मनमें विचारै कोई मध्य प्राणी धरम जाखिके अथवा सामायिक प्रमादे धन देवै, सो तीजा दोष ॥ ३ ॥ चौथा गर्वदोष सो जो सामायिक लेकर मनमें गर्व करै, जो धर्मक ग्याता है ऐमा हमरु लोर कहै, सामायिक करै है, और मुख कया समजै, एतै मसारी जीव कामराजम पडै है हम सामायिक करै है और कौन उरि गरै, सामायिक हमशरीरि और कौन करै और

विचारि पन्धर तास शुद्ध सामायिक प्रतीम दृपण टाली हम करे ई, ऐ
 मा नर आज मा पोसा पाप ॥ ४ ॥ पाचमा भयदोष मो जो सामा
 यिक पाप भय पावे भय इहा यह ना हम श्रावक कहति है अरु जो हम
 न ईगो तो लोह रुठे । श्रावकका वृत्तमै उपनका क्या फल । ऐसी
 समाग नित्य करे, देखो फलाणा ऐसा वृद्ध भया है तो भी कठ धर्मही
 न । ताव डीमै नही भवती है । श्राव तो मय रहा विग एक नित्य
 सामायिक भा व करि मरे एमा क्या है उडे नाम धगवन है । पोसा
 पाटेमगा ता इही करेका पावन है ऐसा ठपका देखेग । इसके
 भयवती अरुतामै सामायिक करे गो भय दोष मन बीच कोई भाव है
 नरी मा पाचमा टाप ॥ ५ ॥ त्र उद्धा निदान दोष, मो जो सामा
 यिक करिके धनाशिका अरुता श्राव कठ अपनी इन्द्रादिक वस्तुका
 नियागा करे, टम सामायिकका यही फल पावु । इह लोहको रोच ता
 धन पाऊ । परलारुम भी देवनाके मुन पाउ, एमा आपय धरि करे मो
 फोटीहागो फोडीकी चीन हार । सामायिकका फल मोटा नियाणा
 रीया जग, रोच दीधी एमा करे मो छट्टा दोष ॥६॥ सातमा सशय-
 दाप, मो ना सामायिक करे पं गणय न मितारे, ममय भयो सामा-
 यिक करे प प्रतीत तचरी नही हे मनमै विचारि क्या जांनीये सामायि-
 कका क्या फल लाभेगा । करते ताँ है आग इमका क्या फल वेगा न हो-
 यगा एमा गणय धारिके करे मा मानमा टाप ॥ ७ ॥ आठमा रूपाय
 टाप ईह, मो सामायिक कार्य कपाय करे रिमके माथे क्रोध करे ।
 नराव देणा पंडे किमकिनारे तच सामायिक करे बँठे ऐसे कपाय भयो
 करे तिमम क्या फल लाभे, सामायिकमै तो कपाय कीया वे सो
 नी टाँडे ए रहस्य है, तिहा रूपाय महित करे, मो आठमा टाप ॥८॥
 नवमा अविनय दोष, सा जो विनयहीन सामायिक करे विनय मो गुर-
 का वा स्थापनाचार्य प्रमुख कार्यनी शैलीमै तो सपटी धर्मकी करणी
 विना विनय है नही, धर्मका मूल विनय, विनयी बहुमानकी पुष्टतामेती
 अगणीत फल होवे, योडा छोटी धर्मकरणी करे, उहा विनय बहुमान
 बहुत है तो फल महावत जैमा पावे, इमयास्तै सामायिक में तो विनय

सहाई सानायिक सफल है, सो निनय न करै, सो नवमा दोष ॥९॥ दशमा अग्रहमान दोष कहै, जो मामायिक करै, सो अग्रहमाने सामायिक करै मक्तिभावसै न करै । सामायिक उपरि बह्रमान चाहीयै जैसी कोई दुर्गती जीव रोग सोग दुःख दारिद्रता में पचि रह्यो है महादुःख भोगवै दे । इतनमें कोई क्रियानत बडा उपगारी सोजन नै देख्या, देखत ही दयापूर्वक परिणाम जानै, तन दरिद्रीकं घेर न्यायकर औपधादिक करी सन दृग्गमिटाया, ओगभी सन तरै मो माहा य कीया एसा जो आपनी तुल्यकर बैठाया, तन वै दालिद्रीक उपगारी पुरुषका कैमा बहुमान भक्ति रहै, मनमें विचारै, जो ए उपगारी उपर भैरै प्राण कुग्मान है । ए तो इहलो कना पुद्गलिक सुखका उपगारी है, उमपरि एता बह्रमान रहै है तो सामायिक तो इहपरलौकिक पुद्गलिक आत्मिक उभय सुखका दाता है, बाह्याभ्यन्तर दुःखका मिटावणहारो है । इसनास्तै मामायिक परतो इनमेंभी बडा बहुमान भक्ति चाहीयै । सो न करै सो दशमा दोष ॥ १० ॥ ऐसै मनकें दश दोष । एन नायाकें वारह वचनकें दश, मनकें दश । एव सर्व वचीस टाप वचायक सामायिक शुद्ध करै सो सुखहेतु का कारण कहिए वचीस टाप गहीत एक सामायिकका फल श्री जैनागममें व्यवहारै तो एता रथा है बानु कोडि गुणमठि लारस पचवीश हजार ननमें पचवीश १६२५६२५६२५ एतला पलयोपम अरु एरु पन्नयोपम ना नन भाग कीनै में आठ उपर नवभाग उपर इतना पन्नयोपम देवताका आउरबा वार्ध । अरु नरकगति नाप इमनास्तै आनक कृ प्रतिदिन सामायिक नरणा ज्यु जम मफल है । ए व्यवहार शुद्ध सामायिकका फल है । अरु निश्चय शुद्धोपयोगमेंती सामायिकका फल अनतगुणा है । यावत् मिद्धिस्थान पहुचावै इमनास्तै सामायिक एकान्त उपादेय है । वै सामायिक के पाच अतीचार है मो कहीयै । तिहा प्रथम काय दुःप्रणिधान अतीचार कहीयै मो अपना शरीरना अग्रयन हाथ पाव प्रमुख अणपूजै प्रमार्ज हलारै । दिवालक पीठ लगायकें बैठै । निद्रा प्रमुख अणपूजै करै सो प्रथम अतीचार ॥ १ ॥ दूसरा मन दुःप्रणिधान अतीचार, मो जो मनमें कुव्यारचितन क्रोध लोभ द्रोह अभिमान ईर्ष्या अमृयादि दोषसहित कार्य व्यासगाक्त मभ्रम चित्तमहित सामायिक करै, मो मन दुःप्रणिधान दूसरा

अतीचार ॥ २ ॥ तीं ता व्रतन दु प्राणिधान अतीचार, सो जो सामायिक
 उर्मि अन्वयाय मोलें । अथवा पदअचरादि अशुद्ध बोलें, ऊचरते थकें
 सुप्रसन्न, अथवा मादुम न पडें अरु अशुद्ध सूत्र उचारे । अर्थकी भी मा
 न पडें, अतिचपलपणें गडगड कही जाय मो वचन दु प्राणिधान
 तात अतीचार ॥ ३ ॥ चाथा अनवस्थारूप अतीचार सो जो सामायिक
 के उपरांत सामायिक न करे अरु करे तो यद्वा तद्वा करे वा मितानी
 पाए । अंतरिना करे । स्वेच्छायें क्रिया करे, सो चाथा अनवस्था दोष
 अतीचार ॥ ४ ॥ पाचमा स्मृतिविहीन अतीचार सो जो सामायिक
 लक्षण भूतिजाय । क्रियादिकर्म भ्रांति पडें, सामायिक दंडक सूत्र ऊचर्यो
 नही उचर्या । पार्याकें नही पार्या । ए प्रवल प्रमादकें उदयसू होय, म
 माधनका मूल ता स्पष्ट यादगीरी ह । जायते उपयोग है मो तो विसर गय
 तब सामायिकना फलमं उद्वा लगें । ए त्रिस्मृतिरूप पचम अतीचार ह

इति श्री द्वादशव्रत विशरणे नवमसामायिक व्रतकथन

प उद्योत मागर्गाणिना कृतभाषा संपूणा ॥ ६ ॥

इहा ।

श्री पारसपद कमलयुग, उद् बडे उमेद ।

दशावगाशिक दशमव्रत, तिमका काहिस्थू भेद ॥ १ ॥

अथ देशावगाशिकना अर्थ छट्ठा व्रतमें दिशिपरिमाण मो तो जावनीय
 किया है । मो दिशिचेत्र बहुत है नित्य कष्ट उनका कार्य नही है, इमनास
 दिनव्रत उममें सत्तेप करे जो आजकें दिनमें दश कोश वा पनर कोश
 वा पाच कोश अथवा नगरका दरनाजातक अथवा कोश अधकोस वा
 योग्यचैतक जगा दिशि रख्ये । वा घरकी हृदयक इत्यादिकपर्यंत जाव
 आवगा, काल उपरांत नियम ऐमा करणा, सो देशावगाशिकव्रत ए छ
 व्रतका जवि शेष है अरु जावजविरा मत्रधका सो पूर्वे नियम किया है सो
 है । ए तो चोमासा बीशदिन दशदिन पांचदिन अहोरात्रि वा दिवसतक
 मूर्ततक भी मृतलें, व्रतमें हुवें, बहुत धर रखा हुता उनकामी दोष सं
 सीया क्रिया ऊतारी, एतलें दिगव्रतका देशावगाशिक नितिप्रतै परि
 धय गमन परिमाण रख्ये, जो मं कायामें फलाणा गांव फलाणी

जगा देवल्, दरगाह डेरीका माछरा कोइ थोर जगा जाउगा उपरात मुज निपेध, इमै जो दिग्गती प्राणी कैताई देश परदेशका व्यापार है तो ऐमा कहै मुनै कायामेती इतना क्षेत्र बाद जाणना नही पिण दुग मन्धरा कागद प्रमुख लिग्या माफक है सो वाचना, अथवा आदमी भेजना तो माफ है । रात प्रमुख भी मुणनी माफ है । अरु जिमकू दूरका व्यापार नही है सो कागद भी न वाचै किमीकू भेजना भी नही । जो चित्तकी प्रकृतिमन्त्र्य विकल्पमै न हूँ तो वात भी न सुणै । हम वात न करै न रखा जाय तो व्रत भागमै छुटा राखै । थोर जाणत धरै दोष लगानै नही ए देशावगाशिक नित्यव्रत रख्ये सो सदा मरदा फजरके वसत चमटे नियमके यादगीरीमै मर्ब मभालिके रख्ये मिपरीहू मचपतै रख्ये । रात्रिमन्धी जूदा रख्ये । अहोगात्रिका करै सो फजरके समै यात्र करै । ऐमै व्रताधिमेती गुरुमुखमै वारै है तमै पालै । ओग देशावगा शिक व्रतके पाच भदरक अतीचार है सो नाम लिखै है । तिममै प्रथम जाणमाण प्रयोग अतीचार ॥ १॥ दूसरा पेमणप्रयोग अतीचार ॥३॥ तीमरा सहाणुमायी अतीचार ॥३॥ चौथा रूपानूपाती अतीचार ॥ ४ ॥ पाचमा पुटलाक्षेप अतीचार ॥ ५ ॥ तिसरमै पहिला अतीचार आणमाण प्रयोग सो नियमकी भूमिका बाहिरकी कछ चीज तिसकी गरन पडी, तत्र विचारै, मेरै तो नियम उपगत भूमिका जाणना नही, अरु चीजकी भी चाह जीवमै लगी रही है तत्र आप बुद्धि उपाजै, किमीकू वही भूमिकू जावणैवालैकू दाखिके कहै । भाटेनी तुम्ह रहा तरु जातै हो तौ हमारा कछ काम है सो भी फरणमै आगगा, तत्र वे कहे हा जी हम जावंगे, तत्र जती कहै, भाइ हमारा गता काम करतै आवणा वह चीज हमारी गानर ले आवोगे ऐमा कहै, अपनी महजती मेती सत्र गह चीज बाहिर रतकी मगावै । यवनै म्याणपणामेती विचारै मेरै मेरा व्रत भी गरया, अरु चीजका भी क्लम कर्या, ऐसी तजरीजमै क्लम भरै, ऐसी बुद्धिका अग्यानपणा करै सो उलटा तोटा लगे है जे व्रतधारी होयके ऐमा स्पष्ट का भागा न करै गुरुबुद्धै शास्त्रीतै जो कदा भोटे करै इम गाम्ने नियम लेखै परपासमेती चीज बाहिरकी मगावै सो आणमाणप्रयोग प्रथम

प्रतीचार जाणना ॥१॥ दूसरा प्रतीचार पेमरणप्रयोग कहें, सो जो नियम भूमिका राहरा चीज भेचणी है, तब पहिलेमेती मनमोरा करे । कि मीक हाथ वह चीज भेजे । कौड जाता होय तिमहींके सघाते तो हमहू ना चारणना नियम है, अरु भजणी जरुरसेती तब पृच्छगाछ किसी साथ भजे अरु मनमें सुमो होय, मेरा व्रत भी अखड रखा, हम भी न गये साथ भी साध्या, ऐमीतर करे मो उलटा तोटा भया अरु अतीचार पेस वणणेप लया ता एमा भी समज आनक हे मो अतीचार न लगावे । ॥२॥ ताजा प्रतीचार महाणुरायी कहें है । शब्द अतीचार सो जो अपना विचार बाहिर नई पुरप जाता है, तिममेती कष्ट काम है । तब प्रता विचार । ना मज उहाताई जाना तो नही है, उमें नाम लेकर बोला प्रगा ता भेरे प्रनत्र दाग लगंगा । ऐमी शकामेती जरोखे वा अगामीनी व्रत उरु नाय गटा शयकरि मार्गमें जाते जानते मरहू देखे । अरु मार्गमें चलणाले इणके ताइ देखे तब यह सुगारा करे, डोरा की मीख अथवा तनाक वगिके नाकरीच छीर करे ऊंचे माठमती, तब वह पुरप राफके चलणाला उपरकी तरफ शब्द सुर्णाके देखादेखी भई तब चला यरुणि थापे ऐमे मिलाप करे, तब बड अपने कामकी दोऊ जणा रात चित करिके विदाय करे तब पीछे मनमें अज्ञानके विलास करे, जो भेने किमी उत्पातकी बुद्धि रची, तिमने अपनाव्रत निर्मल तर मेती रखा अरु ओरमेती पोलायके कार्य करणा हुता । मो भी वातविगत करि ता ऐमी मुठ अग्यानी क्रियाकी भोलप्रणी करे तिमहू शब्द अतीचार तीजा लगे, बुद्धिवान ये समजू शुद्धव्रतीवे सो अतीचार न लगाने ॥३॥ हिवे चोथा रूपानुपाती अतीचार कहें है, सो कोई व्रतीने अगना घरि के तरु चेत माफला ग्या, ओर सप त्याग कीया ऐमे कोई अपने कामना आदमी गह पीच चल्या जाय है मो प्रतीने घरभीतर कई गिडकीके राहका अध्या चालीप्रमुखमें नेया तब प्रतीने विचार्या इनमें मेरे काम जरुरका है, तिमने इमना घर तो दर है चहातर हमसू जाणना नही आवता जा जायता व्रत भुमि परिमाणना दोष लगे, इसनास्तै ऐमा करु जे उलटा मुने पोलायके व आपही चल्या थापे ऐमा काम मनसोवा घ

रिक्त आप अपने घर से निकलीं टंगजे ऊपर आण सटा रहे, वह भी चल्या आण निकल्या दोनू री एक नजर दे-
गादेस्वी भई, ठीक जुठारी भई तर दोनूने चित्तनी बातची मो
करी, अपना सुतलनरी, वह भी अपने ठिगणो गया अर
ए भी घरचीच आर्य दिल बीच विचारणै लागै हमने मनमोवा करिके
व्रत भी क खुच न लगारै अर हमारा कार्य भी मार्या ऐसी हमने अ-
कल करि, पिण यह न विचारै इमम अनानपणो हे जो जाणिके कार्य
अपना करै मो अपनी चतुरतामती, मो चोधा अतीचार रूपानुपाती
लागै ॥ ४ ॥ तथा पाचमा पुद्गलाक्षेप अतीचार करै हे । पुद्गलाक्षेप
अतीचार मो जो नियमक्षेत्र बाहिर कोई पुरुष अपने काम क जाता है ।
तर व्रती अग्यानदोष मेती माया बूठी केलरणी क तत्पर भया । जो
मै इम जादमी कू गोलायके रक्खु तो साम्हने जाय मै खडा हु तो
दुपख लागै । तो ऐमा विचार, कोई इच्छा करिके विना माद दे के
बोलायु तर ऐमा विचारिके आरत के ऊपर काकरी फेरु ममस्या कर
पछा बखका देगारे तर ककरी देहमे लगे, साहमो जौ तर उनने भी
जोया, दोनूकी देगादेसी भई महव्रत वातविगत करै तर पीठि
विचारै हमने मया गुदिके दोग्गू मिलै जैमे लोकीक मानी गोले नही
तिसरीति मजा चेष्टा करिके कार्य करै मो पाचमा अतीचार पुद्गलाक्षेप
लागै तो ममजु हुं मो अनानपणैकी घात न करै, तो बडालाभ ना हेतु
है ॥ ५ ॥ इहा पहिले दोष अतीचार अनानमेती होय, पिठिले तीन
अतीचार कपटपणै होय, ते नाम्तै न आदखा । दुसरा शिचाव्रत भया,
उठ्ठा व्रतका भेद मेती दशमव्रत मत्तेप है । यह कर्णमे ऐमा बुझी लेना
जो परिग्रहान्त्रि मत्र व्रतमे मत्तेप ते ऐमा जाणणा ॥

इति श्री डाण्डव्रत विवरणे दशमदेशावगाशिक व्रत

५ उद्यातभागरगणिनादृत भाषा सपूर्णा ।

रूहा

अथ इग्यारमव्रत लिखु, नाम पोम उपनाम ।

जो विधि महित करै व्रती, तो पामे उद्यास ॥ १ ॥

अथ—एकदशमा पापत्रोपनाम रूप जे शिक्ताप्रत तीजा लिगै
 है तिहा पामहका न्यार भेद है । उनमै प्रथम आहारपोमह ॥ १ ॥ दु-
 मरा शरीरमत्कार पामह ॥२॥ तीजा अन्नल पोमह ॥३॥ चोभा अन्नपार
 पामह ॥ ४ ॥ एव न्यारू पोमहकै प्रत्येकै दोय दोय भेद है । एउ दे-
 शमती पामह, शूभरा मरमेती । तिहा प्रथम आहार पोमह देशधी जो
 तिप्रिहार उपनाम कर पामह कर, अथवा थायविल पोमह कहै, अथवा
 तिप्रिहार एनामण करि पोमह करै । ए तीनु प्रकार पामह करै सो दे-
 श थी आहारपामह कहावै । उमकी मली पोमह लीयो, पोमह लीधा
 पहिला प्रपनै घरमै रही रखै । जा हम पोमह करैगै सो आविल जा
 एनामण करैगै सो भोजनकाले हम आहार करणहै आरिगै अथवा तुम्ह-
 हा आहार उहा न्यारणा, पीछे पोमह लवै । जब मध्यानके देनउदन
 करि रहै तिवार पछी चरबला मुहपत्ती पुनना ए तीनु उपकरण माथ
 लकर पछपटी ओटि करि माधुकीतरै उपयोगी रहतो धरौ मारुगै
 जयणा महित चलयो जाय, भोजनस्थानकै इरियावहीया पडिऊम ।
 गमणागमण आलावै । पीछे पृथना पिट्यायकै रमै । आहारका पात्र
 पहिल है पीछे जो प्रपनै लगा योग्य आहार लेकर माधुकीतरै अगुद्ध
 थका आहार करै । मुयथी आहार बखारणै रखावै नही । मुयथी आहा-
 रक एमै रहे नही यह अन्ध्र युग कीया, जठ गिरावै नही आहार करि
 रहै तत्र फासु पानीमेती पात्र आहारका हाथ मा धोय पीर पात्र गुद्ध
 करी पाखी प्रमुख सुनायनै फोराकरि पाटा आपै, पीछे फेर उपयोगी
 बरौ पृन पाटो पोसहसालह जाय, मार्गमै निमीशु जावतौ आवतौ भोलै
 नही, इमी तरै स्वर जानमै आनी इरियावही पडिऊम, चेत्यनदन करी धर्म-
 क्रिया म प्रवर्त तथा जो आहार साम्हौ पोमहसालामे कोई सपघसिपक
 न्यारै तोभी पूर्वोक्त रीते आहार करी पात्र पाछा आपै, पीछे धर्मक्रियामै
 प्रवर्त । जो उपनास करि पोमह करै तो आहारथी सर्व पोमह कहियै॥१॥
 दमरा शरीरमत्कार पोसह सा जो मर्वथा शरीर मत्कार जो अपना
 शरीरक धानन धानन तेलमर्दन बस्त्राभारणादि शूभार प्रमुग काई रीते
 शरीरकी शुश्रुषा न करै । मावनी पर अपरिकर्मि हुतो रहै सो मर्वथी

सत्कार पोसह कहीयै, तथा तनिा देश मत्कार पोमह मो जो पोमहकै नीच हाथपग प्रमुखसी शुश्रवा करनेसी छूटानी राखै ॥ २ ॥ ऐसी तरै अन्न पोसह श्रीनो प्रिकारण शुद्ध पोमहमै ब्रह्मचर्य पाले सों मरु पोमह कहीयै अरु जों मन रचन इटीप्रमुगरी छूटानी रखै, परिमाण राखै या देश ब्रह्मचर्य पोमह जाणना ॥३॥ तथा मरु सायध व्यापार त्याग करै । सो सर्व धी अव्यापार पोमह, अरु जो एकादिउ रस्तु अथवा उषगयना आदेशा- तिककी छूटानी राखै आदेशमेती, मोदेशधी अन्व्यापारपोमह कहीयै ॥४॥ एउ च्यागे प्रकार पोमहकै दाय भेद मो आगे आगमप्रिहागी गुरु छते होते तउ ने श्रावकनीन शुद्ध उपयोगी नहत पापभीरु थै जो जो आपे प्रतिगा फीनि है तमीन शुद्ध पाले, तेमीज रीति उपयोगमै रहै प विस्मृत न होवै, कम रम न करतै, गुरु मी अतिशय ज्ञानकै प्रभाउमेती योग्यता पहिचानत जो वह देश लायकहीज है वा मरुलायक है । कदापि कम उभ्रमेती होय जाति तो ने तुरति जाणते, जो मुन प्रतिज्ञाम इतनी अग्रिगी लगी तो न तुरतिही आलापे पडिकमते ने पडीभूली नहती अरु अउ तां ऐमी उपयोगी जीन नही है, सो काल दोष के प्रभावे वरजट है । इमनाम्ने पूर्वाचारनि उपकार विचारतै लाभालाभकी तुलना विचार करी ऐमा जीतव्यग्रहार राध्या छे । तिहा प्रथम जो आहार पोमहमै है सो भेदे दाय करै देशमेतीभी करै मरु नेतीभी करै जैमी अपन शाक्ति मा फरु करै अरु तनि पामह राका रहै, जो मरु सेतीहीज करै, देशधनी नही वे, एव्यग्रहार मेला राधी है । इमीतरै उर्चमान प्रवत्ते है । अउ पोमहका प्रभाव कथा है मो लिखीयै है ए पोसह व्रत जो मो पापभरित नहत सायध व्यापारी गृहस्वको आरभ बोज उतारणको विश्रामण ठोर है । विश्रामण करती अल्पप्रोझी हूवै । जैमै भारवाहनने शिर बोझ लीया नडी गाठडी उठाई दाय च्याग कोश चल्या । ऐमै मं काई विश्रामका ठिकाणा आनै तउ ने प्रमन हूवै बोझ उतारै, जिम फरण विश्राम ठार मीतल छाया ने जलाशय हूवै तिहा क्षणमात्र घडी- काल नैठ आसूटा हूवै एकैला, मिटी जायै, हलध्या शरीर हूवै, फिरि बोझ उठाय चलै । यु दाय च्यार विश्राम रातै धरुके सुखे मजल मिर

धारा रजोहरण प्रमुख पुत्र नही अरु पुत्र तो जैमै तैसै गडगड करी स-
 धारो निछारै, कट्ट जीवकी रचा न करै सो दुजा अतीचार । श्रीजैनशाम
 नकी गैली ऐसी है मो मार्गी जीव जो क्रिया करै तिहा प्रथम द्रष्टि प-
 डिलेहण करै अन्धरी तरै सब ठोर चीज निगारु जौव पीछे पूनणा प्रमुख
 में पून तद पीछे वह वस्तु धारै । ऐमा सहज चाल है, तो पोसहादिक
 त्रियामै तो निपट उपयोग धरी पाडिलेहण करै, अरु जयणा मू न करै
 मो दूसरा अतीचार पोमहका ॥ २ ॥ तीजा अप्पडीलेहीय दुप्पडीले-
 हीय उच्चारपासण भूमि ए अतीचार सो लघुनीति वडीनीति परठण-
 की भूमि द्रष्टिमू विलोकन न करै, अरु विलोकै ताँ ज्यू त्यु काम चलाय
 देवै, जीवजतना विना त्रियै परठण लघु नीति प्रमुख सो तीजा पोमह अती-
 चार ॥ ६ ॥ चौथा अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चारपासण भूमि ए
 अतीचार मो मात्राकी विष्टारु मालेही भूमि प्रमानित देखिकै न करै ।
 अरु पून तो यद्दा तद्दा करिकै काम करै, वडीनीति लघुनीतिप्रमुख
 जतन में न परठण मो चौथा अतीचार पोमहका ॥४॥ पाचमा पो-
 ह्मिहिहित्रिणीए अतीचार मो पोमह करिकै आहार त्यागादिक सो सुधा-
 दिक परिमह जागै । तत्र पाग्णाकी चिंता करै जो प्रभावे फलाणी रमोइ
 वा फलाणी चीज खाँग तथा फलाणै विहारणै कार्यकारण है उहा जा-
 वंगै । उनमै तगादा करुगा । तथा विहारणमै उठी पोसह पारिकै अछी
 तरै मू तेलमर्दन करायकै अछै गरम पानीमै स्नान करुगा, फलाणी पो
 माक पहिनेगै, तथा बुलम्बीके माथ ऐमा पीउ भोग विलास करैगै ऐमा
 सावध चिंतनै । तथा सध्यासमय स्थडिल शुद्धि न करै, पोमहमै विकथा
 करै, पोमहमें निद्रा करै । पोमहका अहार दोष व टालै मो अहार
 दपन लिखै है । तिहा प्रथम पोमहत्रती विना पोममै छुटै थायकन
 न्याया पाणी न पीवै ॥ १ ॥ दुजा दोष पोमह निमित्त मरस आहार
 लैव नही ॥ २ ॥ तीजा दोष पोसहका पहिले दिन उत्तरारणै विधि
 सयोग मिलाय आहार न करै ॥ ३ ॥ चौथा दोष पोसहमै वा पोमह-
 निमित्त अगल दिन दहनिभूपा न करै ॥ ४ ॥ पाचमा दोष पासहनि-
 मित्त वस्त्रादि न धोवतवै नही ॥ ५ ॥ छठा दोष पोसहनिमित्त वस्त्र

आभुषण घटाय न पहिरै वस्त्र न लेवै, अंग गहिना न पहिरै, स्त्री क
 भी नय करुन हें सो सोहागका कुशल चिन्ह हे और गहना नया घ
 टायकै पामहमै न पहिर ॥ ६ ॥ सातमादोष पामहका निमित्त वस्त्र
 रगाय पहिरै नही ॥७॥ आठमा दोष पोसहमै देहमेती भेल प्रमुख छडवै
 नही ॥ ८ ॥ नवमा दोष पोसहमै सोये नही निद्रा न करै ॥ ९ ॥ दश
 मादाप पोसहमै स्त्रीया भली पुत्री न करणी ॥१०॥ इग्यारमा दोष पो
 सह म आहार त्र भला पुरा न कहणा ॥११॥ बारमा दोष सो राजकय
 युद्धकी गान भली पुत्री इत्यादिक न कहे ॥१२॥ तेरमा दोष पोसहमै ऐस
 का मरु अन्डा हें न पुरा कथन, रहना नही ॥१३॥ चउदमा दो
 लघुनीति उडीनीति बिना पूज भुमिक परठवै नही, परठवै सो अपनै
 गामिगवै ॥१४॥ पनरमादोष पोसहमै पराईनिदा न करणी ॥१५॥ सोल
 दाप पामहम स्त्री पिता माता पुत्री भाईमनधीमेती चात न करै ॥१६॥
 गनरमा दाप पोसहम चोरीकी कथा न करणी ॥ १७ ॥ अठारमा दो
 पोसहमै स्त्री अगोपागादि द्रष्टि लगाय देखै नही ॥ १८ ॥ अठार
 ही दोष पोसहकै त्याग करै करै सो शुद्ध कहियै । इत्यादि विपरि
 र्णै मा पाचमा अतीचार पोसहका ॥ ५ ॥

इति श्रीवारहप्रत टीप विवरणे षष्ठादश प्रत प उद्योतसागर-
 गणिनाकृत भाषा सपूर्णा ॥ ११ ॥

। दोहा ।

अन बारम प्रत हें अतिथि सविभाग यह नाम ।

सह दोष आहारकै पुनि अतिचार हें ताम ॥ १ ॥

अथ द्वादश अतिथि सविभाग प्रत लिख्यते । तिहा अतिथि
 विभाग कहीयै जिमह लोकिरु पर्यन्तवादि दिनको प्रयोजन नही
 अतिथि कहीयै एतल लोन्व्ययहारमै समाग्युद्धिकै हेतु तिथि बार विनाह
 लप्रतिथि इत्यादि मन चिन्ह छोडी दीयै, सवही दीन धर्मारोधन
 एरुनिष्ठा हें चिनरी, तां अतिथि कहीयै । प्राहुणा मिजमान छे
 तिथि पर्येदिकै जावै, हरकोई दिन पथमै चलै आवै उसक तिथि प
 प्रयाजन नही अणचिन्त्यो आय खडा रहै । न्यु साधुमी विणा निम

भोजनकी बेला आय हानर हूँ । प्रायसाधु नूहतो दीये उसके घर क-
 दापि और नहीं अरु भोजनकाले मधुकारी कर्षीये भ्रमरवृत्ति करै गृहस्थ
 के घर पिना निमत्रण विचरता जाय । गृहस्थकू कामना भी न उत्पन्न ।
 अरु गुरु आज्ञा पिना न दापि गृहस्थके घर जाये नही, सो अतिथि जि-
 नाजाकारी शुद्धसाधु उनकू सविभाग करै एतल न्यायोपजित विच व्यव-
 हारशुद्ध कमाया जो द्रव्यादिकू उनसेती अपना उदर भरणकू निपजाया ।
 उत्तमवृत्ताचार पूर्वक जो शुद्ध निर्दोष आहार सो भी पूर्वकर्म पश्चात्कर्मादि
 दोषरहित बहुमानमहित माग्ययोग गृहनिर्ष साधु और थके अतिहर्षवत
 हवा । पाच दानगुण युक्त दाताकी शुद्धिता धरिंके, तिहां दानके पाच
 गुण कहोयै, जो जैनमार्गी दातार सो शुद्धपात्रकी प्राप्ति पायके प्रथम
 गृहाङ्गणनिर्ष मुनिके दर्शनमात्र भये अतरङ्ग की बहुत टिनोकी चाहनाके
 उल्लाममेती आनन्दके आसू आवै, जैम अपना प्यारा परम हितकारी प्राण
 थी प्रिय ऐमै बल्लभमज्जन दूर गया होवै जिमकू मनस कदापी नहीं
 वीसरै, दिलमै यही वाछा लगी रहैके कर्म मिलै, ऐमी चाहना धरतै धरतै
 बहूतकाल वही गया, ऐमै मै वै हितू बडी मुदत पीछै अणुचित्या आण
 झडा रक्षा तब उम परमवृत्तमकू देखीकर अतरग उल्लासेती हर्षके आंसू
 गिरे सो मीतल आवै । जिम कारण नियोगके आसू गरम हूँ, हर्षके
 आसू शीतल वै, त्यू श्रावकमी साधु आयाकू देखिपर प्रशस्त रागभक्तिका
 उल्लाम ऊठै मनमै विचारै, अहो मेरे बडे माग्य आज मुनिराज बडे हितु
 पधारे, मै अनादिका भूलया स्वद्रव्य सबल रहित भाव दलिद्रपीडीत ज्ञान
 लोचनरहित अधाभावे पीठ्या अपारमसारचक्रमै पठ्या भटकताथा
 सो बहूत अकर्मनीय दुख पावते किसी गिणतीमे नहीं था सो
 यह मुनिराजने मेरेकू बहूत दुखी देख बडीसी कल्या भावधरिंके
 बडी महिरमानगी कीजी । जो मुजकू प्रथम ज्ञानाजनशिलाका फिरायकर
 सम्यकू ज्ञान लोचन खोल दीये । अरु तच्चरपीसेवारूप आजीविका
 व्यापार सतिवाया तथा रत्नरपी धारणरूप नियम देखे मेरा अ-
 भादिदालिद्र भाव छोडाया । मल्ल आदमीकी गिणतीमे मुझे क्याया ।
 ऐसै ए निष्कारण विनगरज् बडे उपगारी सो मेरे घर आगणा आवे ॥

मात्रमासी पृष्टि मेती प्रगल्भ गगभात्रकं उद्धावनेती हर्ष आनन्दकं आम्
 श्रुति ॥ १ ॥ तथा तु गमारीजीविक अत्यत इष्टस्तु मयोग पाय रोम
 उमट हृदं त्य मटी नक्तिके प्रभावमतीमुनि कं देखते सब रोमराय उह
 मित डोप हर्षम हर्ष समारि नही ॥ २ ॥ तथा मुनि कू देग बहुमान
 उठ । जम ममारा जीव सामान्य गरिब गृहस्थके घरि राजा आप चलि
 क पाय । नत्र न गृहस्थ केमा मान देव । मनम बहुत अचरितमान
 उतर ह्यभर जाय, मनम विचारि जा मेरे घर महाराज आये घरम क्या
 जल्दी यार नी चीन है मो मं डनुही निनर ररु किरि किरि ऐम बडे
 लक मेर घर रुहा थाय । ऐमा मयोग रूप मिलना है, ए तो मेरे मा
 गोदगमती दर्लभयाग मिल्या है, ऐमा विचार करी जो घरम
 अजी वे अजय चीज होय मो निकाले, फेर विचारि, मेरे घरकी चीजक
 महाराज कनूल करे तो मेरे बडा भाग्य मानु । एम उच्चासमे वस्तु भेट
 पर, ज्यु नारक भी साधु गृहस्थक घर आय, देखकर बहुत बहुमान
 कर । जा एम निस्पृह त्रिगोमणी जगदबन्धु जगति हितकर जगद्वन्द्वल
 निष्कामी जात्मानदी करुणागार मसारजलपि उध्दग्ण परम उपकार
 करण, दक्ष, क्रोधादिक कषाय भक्षर, आप तर पर तारर ऐम मुनितान
 चलिके गृह आय तो आन मरे बडे भाग्य, जाग्रत दशा मफल भई ।
 एमा हर्ष भया ममभ्रम हुता मनमुत्त जाय । त्रिरणशुद्ध प्रणाम करि रहे
 म्वांमी दीन दयालजी पधारिये, गृहाङ्गन पावन करिये । एमा बहुमान
 नेर घरम पधारि, मनम विचारि आन मेरा अतुल भाग्यका उदय हुआ ।
 आन तो माधु मेरे आहार पाणीका अनुग्रह करे मेरा जे कारण माधु
 जोसे आहार लेनम बडी तननीज है, साधु गोपणा करे शुद्ध निदोषकी
 प्रतीत आवे जब तो लेवे । इस वास्तै रंग कोई मुझमेती दोष उपजे एमा
 विचार करिके त्रिकरण योगे बहुशुद्ध मान भयो उपयोगी थके त्रिधिपूर्वक
 आहार लयाय ॥३॥ तथा मीठे वचन मो त्रिनती करे, स्वामीजी ए शु-
 द्दमान निदोष आहार है हम हेतु सेवक उपर शुद्धदृष्टि पसाय करिके
 कृपानिधान करपात्र पमारीये मुझे निम्तारीये ऐमे मीठे वचने परमभक्ति-
 वंत वचन त्रिनति कू करता आहार देवे, तत्र मुनिराज योग्य आहार ज्ञानी

लें, श्रावक भी जेती दान लायक निर्दोषी वस्तु है उन सबकी निमन्त्रणा इण विधि सेती दान देकर फेर हाथ जोडिके नीचा नमी भूमिके मस्तरु लगाय मीठे वचनेमू वीनति करै, इसरीति सेती फिर कहै, स्वामी मुझ गरीबनी पिनती है मुणि लीजीये । कृपा निधान मेरक उपर बडी महिरमानगी करी । मुझे उडा लीया । आज घर पावन भया, उत्कृष्ट भाग्योदयनिना मुनी चरण कन रज घरमे कहामू गिरे जानका दिन सफल भया । फेर भी स्वामीनी कृपा करिके अमन पान खादिम स्वादिम औषध वस्त्र पात्र मिज्या मथारकादि प्रयोजन उपजे जग्य्य सेरक उपर अनुग्रह करणाजी, स्वामी तो उडे तुम्ह हो मुनीरान हो, गुणमान हो । नेपरवाह हो, आपरु किसी चीनकी कमी नाहीं किमी वातना प्रतिबध नाहीं हे वात नीपरे, प्रतिबध हो तो भी करणानिमान मुझ मेरक उपर फिर अनुग्रह करणा युक्त है, तथा अपनी हदताई पहूचावणा जाय, उहासे उदनाकर पीछा फिरै ॥ ४ ॥ तथा पाँडे जायके भोजन करै पै मनमे हर्ष न माँवे । भाग्यका उदय हुआ, हर्षना विचारै आज कोइ भली वात होयगी उडा कोइ भाग्य हुआ जो ए मुनीरान नेपरवाह विगतवप्या महज उदामी निरीह ऐमेको मै विनती कनी, इतना सहिके घरा आय अरु मेने जो आहार दीया सो भर लीया चीचमे कोइ अतगयरुषी विघ्न न हुआ । ए तो कोई मेरा वगत तुज्पा निजरमे आवै है, फेर ऐमा पाण रुज मिले । जरु जो मिले तो जायगी अतुल पुण्याईसा प्रमाद भया, ऐमी अनुमोदना बेर नेर करे ज्यु कोई मरु भाग्यमान व्यापार करत बोडा कमावे है, कोइ दिन एक दि मारुम लक्षद्रव्य कमावे तन रूमी फिरी अनुमोदना चाह करे उनमे जादा समकृती दानकी चाह रावके । ऐमे पाचगुणमती दान देणा सो शुद्ध दानमे अतिथिमाविभागतत हुआ ॥५॥ इहा श्रावक वे सो साधु क दोपरहित आहार देणा, साधु भी दोपरहित आहार लें । तिहा दोष विचारत मोलह दोष श्रावकमे हूँ, अरु षोडश दोष साधुमेती हूँ अरु दश दोष आहार मे उपनेए ४२ दोष उचाय साधु शुद्ध आहार लें । अत्र वयालीश दोष कहै है । प्रथम आधा रूमी दोष । जो साधुकी सातर छत्रायका आरभ करणा

वर्तित दोष ए दोष भक्तिमेती वदे ना अभिमानमे वदे लोकिरुम वात चरवै
जो ऐसा मानवर गृहस्थ होई ऐसा आहार न्ते है । अथवा कोई आहार नि-
रम देना और पाडोसी देगै तो निंदा करैगै ऐसा आहार साधु देते
हो तिम नै लोक लाजसु ल्यायके अन्धा देणा मो दशमा परावर्तित दोष
॥ १० ॥ इग्यारमा अम्यागत दोष सो जो अपने घरमे बन्या जाहार
सो भद्रक जीव आहार लेकर माहमा साधुके ठिकान जायकरि देवै । मो
अम्यागत दोष इग्याग्मा ॥ ११ ॥ बारमा उद्भिन्न दोष मो जो कोठा
तथा सिंदुक प्रमुखमे रही चीन है उमकी ताली खोलकर आहार देवै
मो उद्भिन्न दोष बारमा जाणणा ॥ १२ ॥ तेरमा मालाहृत दोष मो जो
आहार मधीय अथवा छती परमे उतारि तत्र आहार उतागिके अथवा
तहरानमे नीचा उतारिसे आहार द्यावै आहार ऐसी रीतिना साधु देवै
मो मालाहृत दोष तरमा लागे ॥ १३ ॥ चरदमा अश्लिष्य दोष सो
जो आर औरके हाथमे रही चीज पे छीन लेकर साधुके देवै मो अश्लिष्य दोष
चरदमा ॥ १४ ॥ पनरमा अनिसृत्य दोष मो जो बहुत जरूरी साधारण चीज
अगवाटी होय उममे म जटाकर साधुके देवै सो अनिसृत्य दोष पनरमा
॥ १५ ॥ सोलमा अध्वरपूरक दोष सो जो कलकलतो पानीमे ओर पाणिपूरी
करि भानप्रमुख चूलहे चगवै आघन अर चावल डाले बनते आहार
मे ओर पूरगी करे जो मनमे विचारि आन साधु गाममे बहुतमे आवै है
उममेना हरजाई जावैगा इम रास्ते रमोइ पूरणी करो बहुतसी, ऐसी री-
तिना आहार साधुके देवै मो अध्वरपूरक दोष सोलमा ॥ १६ ॥ एह
सोलह दोष श्रावकसो साधुके लगै कइ अनानवर्ण, कइ भक्तिसेती,
कइ द्रष्टिगम, कइ अभिमानमेती होवै । श्रावक टालकर तजनीन करि
साधुको निर्दापित आहार जागै तो लेवै ॥ १६ ॥ जय साधु मे सोलह दोष
उपनै ना कहियै है । निहा प्रथम घाट दोष, मो जो ज्यू घाय पराया
नालकसो उर वृत्तिमे अवे रमावै, तंगतरे वचन बोलावै । नैमे माह
भी गृहस्थके बालक कु रमावै चुटकी वचावै, तर तरके प्याडुक वचन बोल
कर नालक रीभावै हमावै, बहुत प्यार दिगलावै, तत्र उमके माता
दिन जाय सायजी हमारे बालकके उपर बडा हेत करते है, तत्र वे ग-

लक्ष्मि निमित्तमेती उन माधु उपरि द्रष्टिराग उल्लसित होयक साधु रु आहार
 लेव, तत्र धानदोष प्रथम लाग ॥१॥ तुमरा दूती दोष, सो जो साधु वि-
 हरण गये दूत श्रावण भाषिनासो कामोद तर परगामक समाचार सागद
 श्राण । हकीरत पीडनी श्राण कट, वधूममुखका थोर सुखचातुरी वि
 नयकारी है, माताची तुम्हारी सुख चैनम है, और तुम्हारे भाईभी ताजा
 है, थोर भी मय इदुग्रह तुमल है फलाणी मादी भई, फलाणीक
 रग भया, वा फलाणी चीन तुमह भेजग वह चीन फलाणी मगाई है
 ज्यालि मदशा कहि करिगं गृहस्थ राग उपचार । इम तर आहार
 लय मा दाप हहा सा गृहस्थ वर्ममरधी मररष्ट्रि कारणरूप मेशे
 क्यो हवे व भी भिचा जमरं न कहै, ओर जमरं कहै । ममाररधी
 तो क्योपि न कहै उसी रीते गोचरी जाय सदशा रहि भिचा लेव मा
 राजा दूतकर्मदोष ॥ २ ॥ तीना निमित्तदोष, सो जो गोचरी गया थरं
 गृहस्थका निमित्त घतार । ग्रह गोचर शुभदशा अशुभशा चारमा
 आठिमाशनी लगार । पंत लिनरी तुम्ह पनोती हाउम चाम्त यह दान
 दीनियो जाप कराईयो, सुख हवेगा, जागे ग्रह बहुत अर्द्ध आगे तत्र बहुत
 सुख चैन पावंग । तुम्हारे दिलम सा चिंता है सो फलाण सातरी चिंता
 है ऐसी मनकी मानी बात कहै । गृहस्थ सुम हवे चमत्कार पाव तत्र
 अच्छा आहार देवे सो आहारनिमित्त दोष ॥३॥ चौथा आजीविका दोष,
 सो जो विहरण गये थरं जागे अपनी जाति जाहिर करे, अनी साहजी तुम्ह
 हमर नही पीछानी ही, हम फलाण साहके वेटे, फलाणके भतीज, फलाण
 गाहे भाई लाग तुम्हारे मेती भी मसारकानाता हमारे लाग है, तुम्ह
 पिछानते हगे अथवा नही, हम तो सब जाण है ऐसी रीति भाति कडिके
 आहार लेव सो चौथा आजीविका दोष लाग ॥४॥ पा, मा वणोमदोष,
 सो जो साधु आहार अर्थ दीनपरु भागे श्राव ससारम मररार्थी है पर
 मार्थी कोई नही है, तो हमारी खर कोन लवे, तुम्ह जैसा कोई धर्मदाचि
 धर्मि ऊपगारी उदारचिन्तत होय सो जाण, और कोई न जाण हमतौ
 निराधार निराल्चन घृत्तिवाल है, हमारा बेली कोई नही, इण नगरमें तो
 एरु तुम्हारा ही धर्मात्मा घर है, जो इतनी खर तुम्ह लैत हो, तजबीज

राखगवाले हो, तुम्ह साधु ही अम्मा पिउ हो, तुम्ह हा तो इतना निर्वाह होता है। इत्यादि दीनता निर्वाह कहिरु करे। ऐम आहार बहुत देवे, तब वे गृहस्थरू अनुत्पा कइ अभिमान राग उपजे, तब माधुर आहार देवे मो पाचमा चणीमग दोष लागे ॥५॥ छट्टा तिगिछा दाप जो आहारके अर्थ गृहस्थके घर गया गृहस्थकी नाडी देखे, ओषध प्रमुख बताने, रोगका निदान कहे, यह चीज साये ते व्याधि ऊपजी है, तिस वास्ते गोली जो खाओ तो यह रमनी है सो खाओ, नही तर दिन च्यार पाच पाच ओषधीका त्वाथ अण्टार्ये सुत्र तरसू सम रागिके पीवो ऐमा गृहस्थ छूने तब सुभी भी होय ओर दिलमे आगे ए माधु सब तरसू खरदार है तो इनरू ओर कइ देवेगे तो लेणे नही तो आहार अच्छी तरसु दीया करे। हारमे स्त्रीयादिकरू कहि रखे। ऐम रागवान गृहस्थरू करिके याहार लेंगा, मो तिगिछा दोष साधुरू षष्ठम लागे ॥६॥ सातमा क्रोध पिंड दोष मो जो आहारके अर्थ गया गृहस्थके घर माधुजन आंगसु नेवे गृहस्थ तो महाक्रण है, साधुने जाण्या छता जोगनाईभी आहार देणकी समर्थ नहीं मुखते नाकारा रहे। तब माधु गुम्मा करिके ऐमी भी भाषा बोले, जो उती शक्त भी माधुरू आहार देणकी ना कहिता हो तो तुम्हारे घर नहीन रहणी, हू अगी शोभा नष्ट जावणी, ए ननपिधी परिग्रहनी जो जो चीज है तिमकी मत्ता नही रहणी ऐम आमयशू बोले, तब गृहस्थ ऐमे भयमेती जाणे, कि माधु है तपस्यामे उलमेती कहता होयगा क्या जाणीये, ऐमा होय जाय तो थोडेके वास्ते काहेकु ऐमा कीजिये, तब माधुरू आहार देणकी समर्थी करे तो ऐमा क्रोध करिसे माय गृहस्थरू लेने तो क्रोधपिंड दोष लागे ॥७॥ आठमा मानपिंड सो जो साधु गृहस्थके घर आहार है तब गृहस्थरू देखे उडा मान उनका कहे रिद्धि देखिरु, उडा धर्मात्मा रिद्धिमान गृहस्थ हो जयरा इम रीतिमेती कहे, हम भी कोइक दिन ऐमेही लक्ष्मीका लाहा लते हूते ग्याते पीते थे, हुकम सब जगा रखे है, हजारेकी कनू गिणती भी नही मरने, गुमान्ने भला चर्यायेज जगाकी ठीका जवान खतपत्र थापते, ईश्वर देशपर देश कान - जगता तो अत्र माधु भये, श्री

आहारके अर्थ नीकले ह तो अत्र पीडली बात अब क्या याद करेंगे तब भी गृहस्थ लोक जाणै, ए भी बडे घरके है, एती सपदा छोडके भागसे साधु भयं दीसे है, तो इनक आहार भलीतर विवेकमेती दीनीये, इसमे बडा नफा है, तो ऐसी बुद्धिप्रपच करि अगली गृहस्थानस्थाकी सपदा बरखण कहिके आहार लेणा मो मानपिडदोष, तथा गृहस्थ साधुका मान पावे, माधुमे पाम आर्य थके मोटी परगुदा बीच मान देवे, ऊचे सिरे हाथ गनाकर मताने, इह पैम जा तत्र जाणै लोकके बीच हमारेताइ आदर-सन्मान दीया थी वह माधु मय तजनीजके है, बडे ओलादी है ऐमा जाणैके आहार देवे अरु ऐसे रीतीसेता माधु लेने आहारादिक सो मानपिड दोष लगे ॥२॥ नरमा मायापिड दोष सो जो आहार अर्थ माधु गृहस्थघरे गये थके कोइ कडकपट्टर रूपपरानर्चनादि कला करिके आपाढभूत साधुकी नाट मायाप्रपचके अथवा वाजीगर तत्रख्यालटिक लगाय चमत्कार ऊ पावे, लोक आश्चर्य करे । ए तो माधु परामातके घर है । सत्र प्रिया जाणै है, ऐसा जाणैके आहारादित्र बडे सन्मानमू देवे, ओर कहै स्वामीजी चाहो सो ओर लेवा, तो ऐसी मायाप्रपच प्रिया फोरिके माधु आहार लेने सो मायापड दोष ॥ ६ ॥ दशमा लोभपिड दोष, मो जो माधु आहार अर्थ गया गृहस्थके घर तिहा कोई उदार दाता प्रबल दान दाता तत्र बेसा देखिके गृहस्थ सो अपनी लोलुपतासती अधिक अधिक आहार ल्यावे सा साधु, ले तिम कृ लोभपिड दोष लागे ॥१०॥ इग्यारमा दोष पूव्वपच्छा सस्तबदोष सा जो आहारके अर्थ गया माधु उदा आहार लीये, पहिलेहीज गृहस्थकी स्तमना करे जो आगे भी हमने इस गृहस्थसेती अच्छा सुस्वाद च्यारु आहार बहिरै है ऐसा कोई न होयगा, इसी आर्जना करे, यह घर सदामदका ऐमाही धर्मात्मा है । इनके मातापिता भी ऐमेही हते, साधु कोई अभ्यागत आयै खुशी प्रतिष्ठा मातबर जैसी हवे । उनकी भक्ति की तारीफ क्या करे, सत्र जगा यह महिरम है, इम घरका जस प्रतिष्ठा मामूर है । उनके पूरज ऐसी करणीके हते तो ए भी उनके हीज पुत्र है, माहजी बडे इनके बममे -पिक वे गये, तिनका नाम अत्र वाइ चल्या जाता है, ऐसी ऐसी

स्तुति करे तुगाँ आहार लैरि पीछ मुख उरि जायकं स्तवना करे,
 तुम्ह बट लायक जोग्य ने, माधु जनकं भक्तिमान हो, तुम्ह जैसे दाता
 ओर नहीं । हमेशा तुम्हारा घर घेरी ह । तुम्ह श्री जिनशामनर्म ग
 जन्त हो यम हा । हमारे मातापिता हो, ओर जन्मरुं जाण हो परी
 चापत हो, मरु पिछानते हो, यह भला है यह पुरा ह इत्यादिक
 गीति रगिं जाहार माधु लेने मा पुत्ररुच्छा मस्तपटोप लागे ॥ ११ ॥
 रामा पित्रापिंड दाप, मो जो जाहारथा माधु गोचरी जाते प्रथम ज-
 न्मपूजादिह जागी निनकी प्रमन्नतामेती जहा जाँ तहा प्रयत्न
 अछा जाहार मिले प्र ररि मदा गहस्थकं धरमेती देवताकी प्रमन्नताम
 ल्याय मा आहार रु पित्रापिंड दोष लागे ॥ १२ ॥ तरमा दाप मर
 पिंड, मो जो आहारनिमित्त गहस्थ ह कामण माहन यगीकरण उचा
 टण प्रयोग करे, सुगन्धनादि फोडे यत्रप्रयोग कर देवे, हस्तकला रगिं
 जया ररि तत्रनिधीमती इठा दगिया मात्र अरु इहा तोमाचाम-
 रादि फोरा नि भेद ऐसा करि गहस्थक धरमेती जाहार ल्याँ मो
 मरपिंडोप माधु रु लागे ॥ १३ ॥ चरमा चूर्णपिंडदाप मो जो आ-
 हारकं अरु गहस्थकं घर गर्ये । अनरु जातिरुं औषधचूर्ण मिलायकर
 ७२ । निरि रीतिरुतव्यता मर रु देवे तत्र वे आगारी गृहस्थरु
 रुदीय मो रागी होय हमर किमी रातरा अतर गुरुजी नहीं रखत है
 मल माधु है ऐसै रागी होयरु जाहार रर । पूरे तिगळा दापमं प्रताप देवे
 अरु उर्जापिंड दापम इतना विज्ञेप आपठोन औषध चूर्णादि मिद्व कर
 रर मो चूर्णपिंड दोष लग ॥ १४ ॥ अरु पनरमा यागपिंड दोष मा जो
 माधु आहार अरे पादलेपादिक रुनि घाट उडा चमत्कार दिग्बलायकं
 तादरुं शान्दुलरु आहार लै मो योग पिंडोप इना पुने मरादि-
 योगपिंडदाप ररिया मो सुद्रमर इहा ते उडा चमत्कार है उति भेद
 ॥ १५ ॥ मालमा मूलरुम दाप मो जो आहारकी माधु गहस्थकी
 अपुत्रीयाकी गर्भ होखेका औषध बतारि अथवा जाप कर देवे अथवा
 री जनाचरणी खी होय तिरुने परपुत्रप माये रुक्रम कीया र अत्तानी
 द्वेय मो माधु आया जागीके अथवा मन्व्य मिटारुणरु गरीकी

माधु ताम दीन भाग्ये स्वामीनी मृद्ध हत्यारीना उपगार करो यह प
 मृधम भया ह मा उपगार कर देतो नहिं तो मुझे मरणा पडेगा, ते
 गीनयचन ह, धर पेह यह वचन मुणिरै माधु ह्मणा उपनै तत्र ग
 मानापानन प्रयोग पे मा वताय देव आपध वतीप्रमग्न, तत्र वह सु
 हायन अद्या जाहार लकर त्रै अथवा मृत्युन जोग भी म्बिरीन
 प्रयाग कर अथवा जातिकर्म करी एमी क्रिया कर लेवै मा मृत्युर्मदो
 एम माधु अथम्य कर्म न करणा । ऐमा करिके जाहार भी लेणा
 मृत्युर्मदो अपसरणा ॥१६॥ मोल दोष उत्पादना माधुमेती होये अ
 पूव पालिह ताप कथा सो श्रावक्य वे । निमक उद्गमदाप रहोयै ।
 मत्र वचीश दाप वजरा । ए दाप उचायके आहार लेवै मा एषणा ॥
 ॥३२॥ अन्यथा इति । गवषणा दाप रहै । अत्र दशप्रतण दोष कथ
 है तिहा प्रथम मक्ति दाप, सो कइ आहारम उद्गमादिक दापरी श
 श्रावै ता एमा जाहार आत्मार्या माधु न लेवै, अरु नो लेवै तो प्र
 मक्ति दाप लगै ॥१॥ दूजा निश्चित दोष मा जो त्योग वस्तु अ
 न्यात्रिक दापकी मत्रा अचित अथवा अचित उनमै हाथगग्दधा
 अथवा अयोग्य द्रव्यमेती भाजनप्रमग्नै स्पर्श होय उनमै आहारार्थ
 देव मा माधु लेवै तत्र निश्चित दोष लगै ॥२॥ तीना निश्चित दोष
 जा मिट्टी पार्या प्रमख हर नाड मचित चीनहा परम करिके अ
 परस्परमघट्टमेती अचित हूँ ऐमा आहार लेवै सो तीना निश्चित दो
 ॥३॥ चाथा पिहितदोष सो जो सचित वस्तु अचितमेती दाकी पे, अ
 अचित वस्तु है मचित दाकी हूँ अथवा अचित वस्तु अचितसे दा
 होय ए च्याग भागैमै चाथा भागा शुद्ध है अरु तीन अशुद्ध है वे त
 अशुद्ध भागी आहार लेवै तो चोथा पिहित दोष लगै ॥ ४ ॥ पाच
 माहरी डाग, मा जो दसैका पात्रमै अयोग्य वस्तु भरी है सो अत्र पा
 डालके उमडी शत्रमेती आहार माधु देवै सो पाचमा दोष ॥५॥ त
 दायक दोष सो जो नपुमक तथा बालक अतिवृद्ध तथा अथ तथा
 गुला तथा कपवातमेती शरीर कापाग होय तथा पात्रमै शखला
 १२५ जडी वे, अथवा धानह् खाडतावे पीसताय तथा भुनतावे अ

चरगा चरगी फिरावता कपास लोटावता तथा रुट प्रमुग्य रीखता नधा
 त्रिलोवणो त्रिलोवता जीमता तथा छहकायका आरभकार्य करता तथा
 मात मास उपरात गर्भ स्त्री तथा बालक धररावती तथा बालक रोर-
 तेरु छाडिरे अथवा प्रिया करते जो दाता आहार देवे ता ऐमे योगका
 आहार माधु न लेवे, अरु लेवे तो छट्टाढायरु टाप लगे ॥६॥ मातमा
 उमिश्रणोप मो योग्य आहार अयोग्य मिश्रण देवे मो लेवे आहार मा गु-
 गो उमिश्र दोष लगै ॥७॥ आठमा अपरिखित दोष मा जा आहारने
 प्रखगन्धरम परिणामान्तर ह्ये न ह्ये पूर्णमस्कार नही भये । कष्ट कच्चा
 रुट पत्रा ऐसा आहार भया है तिमरेला साधु गृहस्थ दानाके घर
 जाये ह आहार देवे । घरमे तिमोत्र रुचि देणकी रुचि है नही भाव नही,
 वे परिणतिवाला यह जाणै है तान दीजिये, ओम् दीलामे खेद उपजे है
 म दोनूक गहस्थरु अपरिणत रुकार्य तो एमा आहार लेवे तो अपरिणा
 दोष लग ॥८॥ नवमा लिप्तपिण्ड टाप, सो जो आहार लेवे वेदाताके हाथ
 रगटे है तत्र वे दाता दान दनरु हाथ धावे पीछे रहिगरे अथवा पहिराण पीछे
 भी हाथ धावे तत्र माधु निमित्त पश्चात्कम आरभ लग्या ऐमा जाहार लेवे मो
 निम्नापडटाप ॥९॥ दशमा छदित उप जो माधुरु आहार लेवे अन्न
 भात प्रमुग्य तथा रम घी दधि मठा तथा रममती तरकारी माटीया प्रमुग्य
 जमिभ गिरावता देवे मो आहार लेवे ता छदित दोष लगै ॥१०॥ एव
 प्रशोषण रग दोष माधु आरभ दोनू मिलयामेती लगे । वनालीश
 टापगहिा आहार माधु लेवे । तदनन्तर गुरुममीप आयकरके गोचरी
 आला । नमीतर आने जाते अरु आहार लेवे जा क्रियामडे । जो
 उचमप्रत्युत्तर भया मा मरे यादरु गुरु आगे आलोवे मरे कहे तत्र गुरु
 तथा रुभिर तथा अरु माधुरु निमरण करै मरेक कट माधुजी तुम्ह भी
 आहार पावरो तत्र माधु आहार करैरु रूठे उहा आहार करै पाच दोष
 लगै है मा दोष लिगे ते जाणणा । तिहा प्रथम मयोचना टाप मो जो
 आहार करता माधु स्वादीयो मो द्रव्यद्रव्यातरमेती मिलायके खावे ।
 तरकारीमे लुणमरी गटाई प्रमुग्य मिलावे, मादी चीजमे मीठो मीलाने
 ऐमीतरै स्वाट बनायके खावे मा मयोचना टाप । माधुरु तो जैमा

पड्या = तैमाही खाये जाये पीट्टे न कर । प्रत्येके न खाया जाये तो मज चीन पकटी मिलाय घालके खायेपीय जाये । पै जिन आहारमेती गृद्धि उठे मो न कर उहत मचटका पाये कदा प्रमुख ऐमा खाये गत्र नहि उपजे । उत पापट प्रमुखका बरटका पाये । ऐमो भी न करे, बहुत वचन चाडु गत्र न ह्ये । ऐमा आहार न करे अरु जो माधु द्रव्यातर मिलायके रममती खाये मरडका प्रमुख करे मो मयोचना दोष प्रथम ॥ १ ॥ दूजा प्रमाणातिक्रम दोष मो जो प्ररु रतीम करल आहार पमाण है अरु स्त्री अठारीम करल प्रमाण आहार है तिहा रतीम ३२ करल थी -याग खाये मो प्रमाणातिक्रमदोष ॥ २ ॥ तीजा जगारदोष, सो जा माधु जादर करत आहारदायकी जधना आहारकी तारीक करता खाये तो आहारताता मा भी चतुर है । क्या उनकी चतुराई है भोजन सुरम सुखाद है । अरु हाथके भी परम उदार ह । जिगड दंत है । तिनका पात्र भरपुर कर ते है । योग घर जाननेका ईच्छा नही रहती है । अरु चीन प्रमुख देव है मा भाय करि तेते है तिसमें भी आचर जाहार तो उहत स्वादिक है । एमी तारीफ कर खाये मो अणारदोष ॥ ३ ॥ चोथा भ्रमदोष मा जो आहारदायक न आहार निद्रित करता खाये । फलाणा हायका महा कृपण है अरु कड चातूर्यता भी नही अठी चीनर निगाड करि खात है । मदाद यही गग है । देखो ए चीन कमी बनती है । यत्र चीन तो रूमी स्वाद बनती है । अरु इन्नु कर्मोदक कमे रिके खाये है । चानर ह्ये ता कृमक कमेद बनाय । ता यह आहार कमी गये खायमा, या गलेभी उतर नही । ऐममे पेवण करिके खाये मो धुन्न-टापा॥४॥ पाचमा जकारण दोष मो जो सावु भिनययवायच मयमनिर्वाट प्ररु क्षुधा शुभध्यान थिरता इत्यादिक कारण बिना केवल मरीरकी पुष्टि निमित्त मरुप मुख्याद आहार करे वेर वेर खाये सो अकारण दोष ॥ ५ ॥ ष पाच मडकीका दोष करे । एव ४७ । मेरातीर दोषरहित आहार सावु मा अतिथी कहाये । उन कू खाये दोष उचार्यक अहार-निमग्रण करे । उसमें जे सावुने आहार लीया मोडे थाय भी खाये । अरु ऐमा माधुका योग नमिन्वा तो पुद्द अद्वान-न प्रभियसि धारण

सुश्रावक कृ अतिमहमान मू गोलार्ध । भगति भावपूर्वक जीमै वे जीमै
सोड श्राप खाँ । पक्तिपिच्छेद् आहार न करे । प्राये त्रतपोसहकै पार-
णे मुरय है । प्रनाई कारण ओर दिन भी त्रत करैहीज है । उमकेपाच
अतीचार है । सो कहीप । तिहा प्रथम सचित्त निक्षेप अतीचार तो
सचित्त चीज मट्टी जलकुंभ जलता चून्हा अथवा नाचका डेर या म
चित्त पातफल ऐमी चीजके उपरदान देणै लायक वे मो आहार धरि
राखै एतल तुच्छबुद्धि दिलमै अणदेणैकी बुद्धिसती विचारै । जिमि का-
रणमै अतियि सविभाग रूप त्रत लीया है । अथव्य साधु कू देखा
पडेगा । मत्र चीन की निमत्रणा करणी पडैगी । जर साधु भी लण
लायक आहार देखकर लेवैगे तो इहाम ऐमी बुद्धि करू निमत्रणा करू
आग्रह करू । पिग माधु तो लेवैगे नही । इम पास्ते सचित्त चीनका
ममर्ग आहार उपर धरि रवै । ऐमा जाहार मर्था लेवैगा नही ऐमी
रुटीलताई सु जाहार उपर सचित्त चीज उपर रवै । पीठै साधु कृ
आग्रह कर बोलावै । मत्र चीनकी निमत्रणा करै । इठी भावना भावै
माधु मटाप आहार देखैके पीछे हट जाय, लवे नही । तत्र बुटील
चारण मैने माधु कृ निमत्रणा करी पृठी भावना भी करिके आग्रहमेती
चलावै माधुने भेग त्रत भी मझाया, अगण आयै अरु जाहारका भी
गरच न भया ऐमा फल करै । मो प्रथम अतीचार तो ऐमा कै तो
बुद्धि रुटिल वे मा करै कै अज्ञान भद्रक भावमै होय ॥ १ ॥ तथा
रुमग सचित्तपिणिण अतीचार मो जो दान देणैकी चीज सचित्त फल
पनादिक त टारु रवै । ए भी अणदेणैकी बुद्धिमै वा अज्ञानमै होय मो
रुमग अतीचार ॥ २ ॥ तीना अन्य व्यपदेश अतीचार मो जो अण
दणैकी नियत मेती माधु आयै, जर बडा भाव दिखायके आहारकी चीन
अपनै हाथमै लेकर साधु कृ मुरय आगै धरै । तत्र साधु अपने आचार हाने
मे पृष्ठे तो ए चीन कृण सनधी है । तत्र दाता कहै स्वामीनी लीजियै ।
हमाग नही है हमारे भाईका है सो अपनाईज है वे भी तो बहुत भाविक
है धर्मरुची है । दीया सुणीके बहुत सुमी होत है । इम चाम्ने आप
लीजियै, कष्ट सतरा नही है एमा महमान करै मनमै जाणै है पराई

चीज ता मात्र लेवंगे नही इमनास्ते बहुत भाव दिखवावे । माधु विन लाये फिर जावंगे । हम अपनात्रत भी माज्या, कष्ट मरच भी न भया । पेम्मी ताच्छी मनि केलेवे मो तीना अतीचार ॥ ३ ॥ कोई दृष्टि गंगा ना दाता शिरागमेती देणकी मुट्टि मो पराई चीज क अपनी रीके दर मा भी इनमे थावे । श्रावक क तो आहारार्थी माधु आगे ग जातव्य त मा कदना जरा भी इनम उपट न करणी । अर चौथा मम-च्छान अतीचार मो गोचरी आया माधु गृहस्थके घर कोई निर्दोष चीजकी उती दर । अर जापर उम वाजिमी मप ह । तत्र वे गृहस्थ मो उम चीजका जाचना करे तत्र दाता वे मो दीठी चीजकी ना कहि शरे नरा तत्र मनम रीच रिकि दर्य सो मछरदान कहाये । जधना मोर मामान्य गृहस्थ दान जछी भाति प्रल दान देता है । उनकी तारीफ मुनिके नहीं न चाये तत्र कोई ईर्ष्या धरि कहै । ए मामान्य गरोर होकर दान देता है एमा लोख तारीफ कर है, हमसेती वन्ता क्या लेवे करेगा । तो एमा हम दान देवे । जो इनसे दीया नहीं जाता हे आपने थाकरे बँठ चायगा । परगुणकी एमी ईर्ष्या धारिके देवे मो भी मछरदान ॥ ४ ॥ पाचमा कालातिक्रम अतीचार । मो जो माधुकी गोचरीका ममय दृया चाणिक मात्रकी गेगणा न करे । जव जागे यह माधुने आहार लेकर अर पीछी धानकी जाणका मगत भया । माधु भी अपनी खप माफर आहार की गेगणा करल्याया ओरकी खप नहीं तत्र गृ स्थने कुटिलता पणमती विचार्या आहार तो ले आये है अर कष्ट मप होयगी तो थोडी चायगी तत्र निचारक मोलावे । फिरते मगत स्वामीनीक दुहे । ऐसैम माधु आहार ल करिके अपने स्थानिके जावे है, तत्र वह श्रावक आटा फिकिके नडी विनती करे । स्वामीनी अगण पात्र धारीये, भेग मनोरथ मफल कीचीये, मुभं निम्नारिये, कष्ट शुद्ध आहार लीचीये, ज्यु मै भी परग्याण पाक, तत्र माधु कहै, महानुभाव हमारे ता आहारकी कष्ट मप नहीं, ज्यादा हमारे कौन कामका ऐमा कहिके आगे चलते होय तत्र वह कुटिलदाता क्या कहै । स्वामीजी मुजे दीयाविना खावणा नहीं तुम्ह रुद्ररुही धिरोगे नहीं तो मै भी खाउंगा नही, तत्र साधु अतरायके

भयमेती विचार्या, जाँगै पिण रुद्र बहुत लगै नही तब जायके किंचि
 त्मात्र आहार लेके आवै, तब उखनै विचार्या मेरा व्रत भी रखा, अरु रुद्र
 आहारकाभी गरच न भया अथवा माधुङ्ग स्थटिल भूमि जाता रेग्गी
 वृटीलताँ जाडा फिरिकै रुद्र, स्वामीजी धरूपधारे शुद्धमान आहार
 लेगौ तब माधु कहै, महाजुभाब अत्र तो हम जाहागपाणी कर चुकै, अत्र
 निहार भूमिङ्ग जाय है, तब वह मर्कटभाब दिग्यलानै, मेरा भाग्य नही,
 मेरे बहुत अतरायसा उदय है, देखा बहुत बेर ने गर्द, माधुङ्ग गोचरीका
 चपत जाता रखा हमारे घर अत्रे भयी । एमा पश्चाताप करै ए भी
 पाचमा अतीचार, अत्रा अण्डैणरी नियत मो पहिले आप जीमिके पीछे
 माधुङ्ग गोलानै, कालातिव्रम अत्रा, तो माधु कहै रुद्र अत्रे रुदापि अत्रे
 ना मारी रहेतो आहार माधुङ्ग देवा, माधुङ्ग वेसे आहारसा भी
 रुद्र हरे शोक नही, जाया खडी रहे भाडा देखा इनके तो यह भी
 अछा वह भी अछा यह विचार हमारे बहुत स्वर्च न भया ए पाचमा अतीचार
 ॥ ५ ॥ ए अतीचारमे पहिला तीन अत्र पाचमा, ए चार भयमेती हवै,
 वा अत्रानपणमेती भोग भावमे अरु चाथा द्वेषमेती होय । ए चोथा
 विचारप्रती मेली । इतने समस्ति मूल बारह प्रतकी विगतवार
 पूरा भवै ॥ १० ॥

अत्र समस्तिमूल बारहप्रतधारी अत्राङ्ग एरुमा चारिम १०४
 अतीचार की खबर राखणी । ए मत्र अतीचार जाणपणै रखै पै आदर
 नही एम राभै एरुमोचोरीम की विगतवार लिखिये है । तिहा प्रथम मम
 स्तिनै पाच अतीचार, तथा मत्र प्रतेके प्रत्येके प्रत्येके पाच पाच अती
 चार एमे बारह पचा माठ, अरु पनेर कर्मादानके, इतने मवे मिलिके
 एमा ८० भये अतीचार । तथा मलेगणारे पाच अतीचार इतने भये
 पन्चाशी ॥८५॥ तथा ज्ञानाचारके अरु दर्शनाचारके अरु चाग्निाचारके
 ए तनेर प्रत्येके प्रत्येके आठ आठ अतीचार जाणखा, ए भये ॥ १०६ ॥
 अरु तपाचारके बारह अतीचार ए भये एरुमा इस्तीश ॥१०७॥ अरु
 तीन विर्याचारके अतीचार मत्र मिलारिये तब १०४ एरुमो चोवीश
 अतीचार हवै । इन मत्रकी प्रतधारी वृद्ध करिके दर रखै अतीचार

लमात्र नती उति ॥२४॥ अस्मा चाराश अतिचारकी विगत लिखे है
 तिनमें गमवित्तर्क ५ तथा राश प्रार्थ ॥ ६० ॥ अस्मा उमादानर्क पत्र
 अस्मा अतिचारका तो म्बरूप प्रतकी विगतम लिखे गये है । "गारी
 चामालाम शतीवार रहे । उरु म्बरूप है । तिहा म्बरूपना के
 पात्र अतिचार रहे है तिहा प्रथम मलेगनाई योग भेद है ।
 २ । अस्मा द्रव्य मलेगनाई की भावमलेगना । तिहा द्रव्यमलेगना
 या ना माधु भाव अगमगता मनारथ है मो प्रथम मले
 गना तप कर जागमात्त विविमेती है, तिहा मलेगना तप तीन
 प्रकार २ । उत्कृष्ट मध्यम अस्मा अधन्य । तिहा उत्कृष्ट चार परगता,
 म यम राश मामका, अधन्य चार पत्रका, अतीवृती विगा मलेगना त
 अत प्रथम चार तप विचित्र तप है पीछे फेर चार तप विगयपत्
 रहि । विचित्र तप है पीछे दाय तप एकान्तर उपनाम है पारण
 आविल कर पात्र पत्रमाग नाना विरुष्ट तप कर, उठपती कमन कर ।
 पात्र आविल है । पात्र उठ मास अतिविष्ट तप है, अठममें तप
 कम कर नहा पारण आविल है । पीछे अस्मा निरतर आविल कर
 अस्मा राश तप उत्कृष्ट तप ण है । इतीतर मध्यम तथा अधन्य भी
 २ तप तपमत्या तमें मास तथा पात्र मत्या अ मलेगना तप अत
 मरीगत रमधातु मत्र भाग्यै । अस्मा चमात्राप अगमग करवा या
 न्य मरीर कर तत्र जनक द्रव्यमलेगना करीये । दृती भावमलेगना मो
 अतम्भती विषयस्पायनोक्पाय गात्र मत्ता द्रव्यादि दोष ह अति लीग
 है । अतल प्रवल कार्ग्य विग विषयस्पायादि उदीपन न ह्य विचार
 न पाम, इतल मत्तया कर अपनी चतना समता मत्र रहे मा भावमले
 गना कर्तार्य पात्रे गुम्पाम आवि तप वे गुरु उनकी परीक्षा कर । अस्मा
 जा राहाभ्यतर दान् मलेगना मर्द अथवा राशकीज मर्द । ऐमी परीक्षा
 कर तत्र गुरु जोड रीतीका धचन जोल, जिनक सुखते अचानत तुरत
 कपायोदय वे तत्र तिन साधु ह दोनू मलेगना अतरम बाह्य की भई
 मा माधु गुम्पचन सुणिके नम्रभाय ह्यकै बोल । श्री गुम्पामीनी की
 कम्पामेती क्या न ह्यै आपकी उपामेती व्यवहाररीति ता भई परतु

तत्कार्यकी बातका तो गुरुजी आपही जानें ऐसी रीतिमेती मर्दन वचन सुणिके गुम्न जाण्या इन माधू कृ ता दोनू मलेखना भई तत्र अणमणकी आता दई जागैसु अगमण क्रिया करारै तथा सोई अयोग्य माधु कृ भी मलेखना तप क्रिया है । तप पूरा करिके गुरु पाप आयकर अणमणकी आना मार्ग तत्र गुरु प्रसाक्ति रीतै विषम वचन कहै तत्र वे फल द्रव्यमलेखगायत है उनमेती कषाय उदीपन भया तत्र न विरल्प करै देखो सुख भुरक शरीर भया है मो दरत नही फिर ऐसी वचन प्रसाक्ति मेती पृष्ट है । ऐमा तिलैम क्रोध उदीपन भाव करिने अपनी अगुली एक तोटीरु गुम्मुह जाग टाल दिनी । देखो ऐसी तो मलेखना भई ह फिर कैसी चान्त हो । तत्र शिष्यका वचन गुरु विनयमेती मत्र सुणिके देखिके मिर धुणायक रहने लग हे साधो तुम्हारै तोहनज पहिलाही दीन है । तुम्हने दमारे लये तो फट भी न कर्या । जिम ग्यातर दोष भिटावणै कृ तप कीया गा मो दाप ता ज्युना ज्युही ह । ए दुर्बल शरीरता अनान कष्टमेती अनतीमार कीया होयगा, पिण फट जर्थ मर्या नही । एम शरीरक चीणपडग मती हमतो नही ग्यानते । अतरग शतिलता प्रगट भई नही सापायात्रि अग्नि तो उपगात न भई । विना भाव मलेखणा काई आगणिक होय मक्ति पावै नही । इम नाम्तै तुम क अणमणकी योग्यता नही है । जो मन्त्रि सौ चाहा ता स्थाय नोऽथाय विषय इन्द्रियके तेरीम, गान्ग इत्यादि दाप कृ भिटावै त्वु मोक्ष कृ तुम्हाग मनोरथ फल, ऐसी शुद्धिता कृ एमी परीक्षा करै । ए मलेखगातप मुख्य वृत्त पटित मरग निमित्त है । एम नाम्तै दानू मलेखणा कीवै पाच जतीचार व्रत तो जरावरु कहाय, ममाधि सेति पटित मरण कहीयै, तिहा पहिलो इह लागामनपयोगे अतीचार मो जा मलेखनादि धर्मप्रभावे फेर आय दश जाय कुले उचम उचम मनुष्यवर्णकी चाह रक्ख मा इहलागाममपयोगे जतीचार मो प्रथम ॥ १ दूजा परलागाममपयोगे जतीचार मो जो जणमगी परलोग परभवे देवद्रादि पदनी पावै मो दूजा अतीचार ॥२॥ तीना जाजीवियाभसपयोगे जतीचार मा जो अणमण लीवै रहत्रिवि

मत्कार स्तरनादि मुणी घणा लोक्रुता आगम उदना महोमन देवित्र
मनम जागै देय दिन अपिना जीरीय नो भला ऐमा त्रिकल्प उठ मो
नीना अतीचार ॥३॥ चोथा मग्गाममप्ययोग जा अगमण कीधे लुधादिक
परमह पीडया मनम विचारि द्विवे मरण मित्तारी हो तो भला, ए पीडा
मही न जायै, पार उत्तरीय, ऐमा त्रिकल्प ऊठे, चोथा अतीचार ॥४॥ पाचमा
त्रिषयासमप्ययोगे अतीचार मा अणमण कीधे अणमणना फल कामभोग प्रा
प्ति पाठै, मा कामभोगामप्ययोग अतीचार, पाचमा ॥५॥ ए सलेखणाके
पाचो अतीचार व्यरहाग्रमिद्र न अणसण निष्ठाई कहावै वस्तुगत तो सन
वतमं लगै जैम वन मत्र नियमदान पूजा पिनय वेयासच्च प्रत्यारयानादि
पया मग्गिं इहलाए सुनकी चाह ना रखणी, रखे ता प्रथम अतीचार लगै
॥१॥ तथा परलोकं दवगत्यादिकरी चाह ना रखनी, रखे तो दूजा अतीचार
लगै ॥२॥ तथा एमा मनुय मत्र पाया है । धर्मनियमकरणी जीवत्या
निनपूना महासत्र करत है, शास्त्र गुणत है, अच्छा ह, इम वाम्त बहूत
नीर ता भला । रखे आयु स्थिति निरुद्धी आय जाय ऐमा त्रिकल्प
न रखै । रखे ता तीना अतीचार लगै ॥३॥ वर्म कम्ते कोर् पुरिसचित
पापमका उत्य हवा, बहूत अमाता पापणें लगा तत्र मग्गारु चाह तो
जा मगीय वा दूवत इट्टीयै, पिण यही न विचारै जो मरणमेती कट्ट
रुम छुट नही, मयै अक भी अशुभकर्म जागका आगका त्याग है । कृत-
कर्म चया नास्ति एव जाणणा । उलटो मरणरी चाह रखत ता अशुभ
कर्मचयो नास्ति, पैग्मपापण होता है । नया अशुद्ध त्रिकल्पे अशुद्ध रघहूँ
इम वाम्त माधु मरणरी चाह न रखै । रखे तो चोथा अतीचार लगै
॥४॥ तथा धमफल तो निनेरा है और निर्जरा साध्य धरिंके जो जो धर्म
रुं जीवमार्गा आगधर रहारै । उहा कामभोगना फल साध्य रखिंके
धमरारि ह तत्र पाचमा अतीचार लगै ॥५॥ ऐमै सत्र वतमं सलेखणाके
पाचो अतीचार लगै इम वाम्त उपयोग ममागिके पाचू तत्रणै सेती साध-
कता म मै । इति सलेखणाके अतीचार स्वरूप * अथ ज्ञानाचारके आठ
अतीचारका स्वरूप कहै है । तिहा प्रथम अमालाध्ययन अतीचार । मो जो
पिनाकार मत्रमिदान परं गुण तिहा अतीचार लगै तो इतनी कालवेला

जागृणी । तथा विहानमें एक घड़ी रात्रिकी एक घड़ी दिनकी ए दोय घड़ीक मालवेला कहियै, ए मालवेलामें पठणा गुणणा सुणणा कइ भी न करै । ए मालकी वेला उग्रत उमही कालकी क्रिया पडिकरुमणादिक मुखमेती करै पिणु आर नया न पढै गुणै नही । ए कालकी उग्रत मनो-गत चपध्यान सुगै करै पे बचनोद्वार न पढै पढे तो जतीचार माधु आरक नेनुह माचणणा, तथा माधुह कालीया मिद्धात पहिली पोरमी वा चौथी पोरमी शेष दिन विना मूत्र मिद्धात पढै गही । रात्रिकी भी गृही आर दजी तीजी पहोरमें अर्थचितवन कर । तथा जमालमें मेषवृष्टी हूवै तथा तीन चोमासकी माहा पडिवाकी जडाई दिन अमज्झाट आधी उदशी पनरमी अर पडिवाए जडाई दिन तथा आमो, चंद्र सुद पाचमीमें वदि पडिवातक अमिज्झाई । तथा राह कोजमें महान मग्राम होता हूवै । तिहा तरु अमिज्झाई, तथा राजा ह्यपती बडा दशाधिपती भरण पाया उमके उग्रतपर नरा राचा न उठे तहातक उण देशम अमिज्झाई । इत्यादि अनेक मिद्धातकी अमिज्झाईका काल कहै उम कालमें श्रीमिद्धात, जो चिनप्रणीत मूत्र रुइ पडया गुण्या न जाय । तथा मो हाथमें पचत्री-जीरका कलवर पडया हूवै तिहातक मिद्धात भण्या न जाय । तथा महा हिमा म्लेच्छके रफरीडके के तेहर कालरात्रिप्रमुख महाहिमाका दिनमें भी मिद्धात पठणा नही । ए चत्र अमज्झाई कहियै इत्यादि आगममें बहुत प्रकार अमिज्झाई कही हैं । उममें मिद्धात पडणा सुणणा नही जरु ना पढै सुगै तो कालातिचार ज्ञानका लागै ॥१॥ दूजा विनय-हीनातिचार, मा जो गुरुका तथा पुस्तकका नानके उपकरण जो पाटी पोथी टरणी करली मापटा सापडी वही नमकाग्वाली तथा अठारक जातीकी लिपिका अक्षरसहित रागजप्रमुख उपकरणक पग लगाय । पायमेती दारै पुरु लगारै, धूरमेती अक्षर मिटारै अक्षरके उपर स्ती घालै, उपर वेमै, सोरै, फाड नागै, कोई द्रव्यके उपर अक्षर वे, तिकै पाम् राभे वके उही नीति लघुनीति करै । अर स्तान मथुन पजा करै पोलै । पुस्तक, जलाप, जलमें प्ररोहे धेचे दयादि आमातन करै आर गुरुकी तेरीश आशातना

विनयातीचार दूजा ॥३॥ तीजा

मातातिचार मा चा गुरु तथा पुस्तकादिप्रका बहुमान न करै, उनकी अद्वय नहीं रखै, बहुमान जो जैगे टालिद्रीफ़ निधानकी प्राप्तिभयमेती तब पैमा उद्यम पावै अथवा सामान्यकै घर आप राचा चलायकै आवै, तब वह कैमा ह्य पावै जचरिन ह्यै तैमे गुरुपुस्तकादिप्रका भेत् करै इन मेती अधिक उद्यम करै । तथा ज्ञानद्रव्य इन्द्रिय सुखमै बावै । ना कोई द्रव्य ग्याता है उमरु झडिकै उरैय, छी शक्ति शिचा न देवै । उघराट न करै, मनमै जाणै अपनै इवा है जो करेगा सो पावैगा एमै ठगाई पर जावै तथा ज्ञानप्रतर्क उपर द्रव्य राखै, ज्ञानप्रतर्क अर्पणनादबोलै ज्ञान प तत्र जतराय कर अती शक्ति ज्ञान पढता गुणता सुणतकी मा- ताज्य न कर । जानक गभीर भावमै श्रमदहणा करे, शास्त्रके अटपटै प्रसङ्ग मात्रा करै हमै कृपुक्ति लगवै । गुरुसिद्धातकी प्रत्यनीकता करै यतिनागा पाच ज्ञानकी श्रमदहणा करै, इत्यादि श्रमदहणा अतिचार ग्यारिसा ताजाश्रमबहुमान अतीचार ॥३॥ चाथा उपधानहीन अतीचार, सो ना श्रमक विना उपधान रक्षा गटावश्यकादि प्रिया करै, तथा माधु- यागकी तप प्रिया विना कथै मिद्धात पढे पढावै सुणवै सो तप उपधान- हीन अतीचार चाथा ॥ ४ ॥ पाचमा गुरुनिहहवण अतीचार, सो जो अल्पभुत अल्पविख्यात माधुवा श्रमके पाम पढया ह्यै । मूल उपकार ना उणरा, पीछे पठणैराला श्रपना अच्छा क्षयोपशम उद्यममेती शास्त्रमै रहत ग्ववरतर म्याणा चतुराई भन हवा । तब कोई प्राणी उमकी नि- पुणता चमत्कार ज्ञान देखि पूछ, भद्रकलोक बहुमान कर पूछै, अनी तुम्ह श्रुतमै माप्रधान मये फला बीच, ऐसी सकलविद्या कान गुरुनै पाम पढे तिनसा हम भी दशन करै जो इहा निद्यमान वे, तो तब वे गुरु तो जैम गरीय ज्ञानगुणमयुक्त एनालेपर पोमाकप्रमुख सर्व चारुरप्रमुख पटी सी- तर दुति उणकै नाममेती लानै, मेरा विद्यागुरु पढै पढित अमुकै उनका नाम लेपन करिकै श्रारका नाम लीया । जो उणकै नाममै हमारी बटाई न करगे ऐसा विचार तो वह गुरुलोभी महापापी, मूलगुरु बु छीपावै पाचमा निनहवण अतिचार ॥५॥ छट्टा कटसूत्र अतीचार, सो जो मृश्रना अक्षर खोटा उचरै, ऋश्य दीर्घकी ग्ववर न राखै, अक्षर मात्रा

हीन वा अधिककरुणं पदं, छदभग पदं, पदसपदामहित न कहे मो छत्र-
 ऋतातिचार उदा ॥६॥ सातमा अर्थकृत अतिचार सो जो अपनै अपनै
 अनान दोषसेती वा कुमति कटाग्रहरे उदयसेती अशुद्ध अर्थ करे, पिप
 रीत प्ररूपे मो सातमा अर्थकृत अतीचार, ॥७॥ आठमा उभयकृत अती-
 चार, मो जो मूर अर्थ दोनू अशुद्ध पद प्ररूपे मो जाठमा उभयकृत
 अतीचार ॥८॥ इति ज्ञानाचारके आठ अतीचारस्वरूप मर्णम ।

अथ दर्शनाचारके जाठ अतीचारके स्वरूप लिगै हे ।

तिहा प्रथम शका अतीचार सो जो जिनागमके मुच्चम अतीन्द्रिय
 गभीर भासुणिके अपना मदल्योपगमने योगमती अरु मिथ्यात्व
 प्रदेशोदय मेती शका धरे, जो एह बात कंग ठहरेगी कथु हायगी कट
 मनमे बैठनी नही हे क्या जाणिये किमी तर माच हे के जट हे ऐमा
 विकल्प ऊठे मो प्रथम अतीचार । अथ जिमके मदल्योपगम हे । ऐमा
 विकल्प ऊठे पे मिथ्यातका, बहुत प्रदेशोदय नही ह । समकृतिका
 टाग उचा हे, सो भी गभीर भाव सुखिते मे तो एकाएक आरे नही ।
 पिण वे समकृती यु पिचार जो बात मेरी बुद्धिमे नही आरती ह मो
 मेरे आत्मदोषमेती मुझे आरखना उदय रहत हे पिण ए बात माची
 हे जो ए मत्र जिनभापा हे । अरु श्री जिनेश्वरजी अमत्य भारी नही
 हे निमहेतु असत्य भाषणके तीनू दोष जो रागद्वेष अज्ञान सो तो क्षय
 गये अरु इनके महचारी हास्यभयादिक मो भी क्षय गये ता वे रीत
 गग परमेश्वर कौण कारण थूठा भाग्ये । पिना उदश रोई कार्यप्रवृत्त ह
 नही, अरु कृत्य कोई उदेश रखा नही हे । उनमेती जो केवल भागित
 मो मत्र मत्य हे, इनमे कोई सदेह हे नही ऐमी निधल बुद्धि हवे
 उनके समकृती निर्मलता रहती चले, अरु जिनके एमी नही उमक
 अतीचारके सत्रमेती मलीन होय जाय इति प्रथम अतीचार ॥१॥ दमरा
 आकाचा अतीचार सो जा दानशील तपादिक धर्मरगणी करिबे पुण्य-
 रूप फलही चाह रक्ये । अति आतुरता करे अथवा आकाचा मो पर
 मतामिलाप, अन्यदर्शनका धर्मकी उन्नतीभावा देगि उम धर्मकी चाह
 रखते ए भी धर्म-अच्छा हे करणे लायक हे । देखो देखो इनमे

१। पृथ्वी मरी अद्वा भी मलीन रहै है ऐसा जायै तो भी उनहु
 द्रवताक कारण जो मन्गु शास्त्रमेवन अरण इन्द्रती महापुरुष चरित्र
 मरण द्रवताक उन्मत्तादि भवन कर्मप्रवादिन या अध्यात्मशास्त्र पठन
 ज्ञान न करे। अथवा फाट जर्मगचि पाणीमेती परचो करे। अथवा
 मन्चा नीम जर्मगती गिरता लगे जो फलाणा आगे नहूत धर्ममार्गमें
 ड हना अथ ना दिन दिन मिथिलताके परिणाम निजर जादा अथ
 २। ममी आपमें शक्ति भी है। यहमिथि युक्ति दिसाटके उनहु मार्ग-
 माहा मिर न करे, गिरण न पावे ऐसी जाकत है तो उमहु उपगारसुद्धि
 रगिरे शुद्धापरा दूर्गातिपातादि विपाकदर्शन इत्यादि स्थिरीकरण न
 ३। मनम जाण, अपने ताट क्या गिगडी चेतना तो उमकी हमारे
 ताट क्या रग्गा मा पावेगा, य उदामी रगिक छती शक्त धर्ममेती
 डिग्या ह्य तिमर स्थिर धर्ममार्गमें फिरि न करे उमहु अस्थिरीकरण
 उदा अतीचार लगे ॥ ६ ॥ सातमा अनात्मल्य अतीचार मा जा जो
 साधमा प्राणी चिमकी एक श्रद्धा ह यर शास्त्रअरण देवदर्शन मामा
 फिरि पामहकरण इत्यादिक धर्मकरणी एरती कता न निर्गरे
 माय उदा अतीका मयध जा एक गुर्क उपदेजित प्रमुग्ध
 उनहु साधमी कहीयै, उनही छती शक्ति भक्ति न करे।
 उनहु फाट फुट मरुट जाय पडया है। जरु आपमें कष्ट मिटावैकी
 शक्ति ह ता भी उद्धार न करे, दु ग न मिटारै सो साधमी पर नहूत
 हित न वै उन रु देगिरे सो भी हर्षान न ह्ये वा मधमध्ये गुणरन्त
 परपरै माभा यग प्रतिष्ठा सुखि न जरीत उवजे। साधमीना समुदाय
 मिरे उहा कपाय रगिरे गिराव मानेमाहा उपार्चना रगरे साधमीमेती
 गत्रता गीनि भै उमपर अशुभ परिणाम राखे अथवा मर्जवीन सत्तार्म
 रगेपर है एरती चाति समानगुणपर्यायी वस्तुगति एरती स्वरूप है।
 उन राखै समान साधमी भये। ए शास्त्रके उपगारमेती जाण्या तो भी
 उनही रत्ता न करे सो अनात्मल्य दोष है, अथवा म्यनिष्ठामे अतरगति
 अपने तान नशनादि गुणपर्याय है सो निवय साधमी है सो गुरुकृपा
 मती जायै है। तो भी उम रु ज्ञान व्यान मयर समताग्मण मेती पावे

नगी, अथवा जैसे वाग तिग्रिहार अपने पाप बुझन कृ आदरमें भक्ति मेवालायक विधि उपचार करि पोये है । तैमें कोई वापिक पर्वादि धर्मगत पर आयें हतै माहमीपच्छलादि भक्ति छती शक्ति करै नहीं मो भी अनात्मन्य दोषरूप अतीचार । अथवा दण्डद्रव्य ज्ञानद्रव्य गुरुद्रव्य साधारण द्रव्य वापरै, वा कोई देवद्रव्य भक्षण करता हूँ । उस कृ भी छती शक्तिए शिवा न देवै । मनमें विचार आपण कृ क्या है । जो पायैगा सो दुर्गातिका देखैखाला होयगा । वा मघमें क्या जपनै कृ हीन छे और कोई तो बोलता नही । थरु हम डरैले क्यु किमी भाई बुदुयीमा पुरा मनायै । छती शक्तै दहगाप्रमुख धर्मस्थानकका द्रव्यकी खरन गयै, अथवा खडित निम्नित मैली अपवित्र धोतीमें पूजा करै वा पूजा करतै थोर कृ इमी रीतै इम तैप देखै नछ न कहै, अथवा पूजा करतै मुख कोप राधै तही, आसातना ३३ उचायकै पुजा न करै वा पुनन करतै त्रिं हाथमें गिरायै, धिनको फलशप्रमुख कलश तिम कृ धका प्रमुख लगायै । देहरेकी दश अशातना न साचयै है । सामायिक पोमहमें थापनाचार्य पडिलेहण करतै हाथमेंती भूमिमें गिरायै भक्ति रहमान न रयै । ए मरु मातमा अनात्मन्य अतीचार लगै ॥ ७ ॥ आठमा अप्रभावना अतीचार मो जो छती शक्तै धर्मकी उन्नताना का गण जा है महा हर्ष मेती मत्तर प्रकारकी पुजा एरुमो अठोतरी डकरीम प्रकारकी छोटी शक्ति व्यवहारै अष्टप्रकारकी पुजा प्रभावना मघभक्ति मथयात्रा तीर्थयात्रा मघ महित जाणया । त्रिं महोच्छय प्रतिष्ठा करापण तीर्थाद्वार कण, पातैचा उपदेश प्ररूपक नया प्रमाद करावणा ओर गुरु आचार्य भट्टारक प्रमुख आयै मपटावृक्त अयाग्नित दान देवै छती शक्ति कमी न रै मोनू क रतनू के न्यु डना करै । नगर प्रवेश उदार चित्तसे जो अपनी सामर्थ्य व तो चाहटाप्रमुख मोभा रचायै प्रतो लीप्रमुख विविध विभूषा बनायै, दान देवै, उदारतामेंती ए मरु शास नही उन्नतीकी रीति भाति है जे कारणे में योच्छय महोरमय रहमान दानकी उदारता इतनै पीछे लिगै सो मरु कोई ।

धर्मकी अनुमोना करिके प्रणय ऊगाज । मरुभ

अपने भी एमै कारणे परिणाम निर्मल हूँ, कोई लै ऐसा
 ज्ञान मारी उमरमें नारै एमै परिणाम समर जायै । शामनकी
 प्रभावना दत्त जीवहूँ उपमार्गी हूँ ऐमा जायै है अरु छती शक्ति है
 ता नी त मर है वा निश्चै प्रभावना अतरगतिमें जिहा जिहा पुष्टनिमित्त
 वा अशुभगुणान शास्त्रश्रवण माधुमदन निष्णसेती आत्मार्क गुणकी वृद्धि
 प्रवृत्त निजरा हूँ आत्मामें ज्ञान प्रकाश ऐमा सम जायै है प न
 क न वा प्रभावना दाप अतीचार आठमा ॥ ८ ॥

इति दर्शनाचार अतीचार स्वरूप ॥२॥

१। चाग्रिचाचार्क आठ अतीचारस्वरूप लिखे है । तिहा प्रथम
 अनुपयुक्तगमन अतीचार, मो जो मार्ग चालता मन वचनकाया एकत्र
 उपयोगारूप प्रणिधानयुक्तगमन हूँ तिहा साधुहूँ झुमरप्रमाण भूमि
 दृष्टिपडिल्लहण करतो जाय एतलै ईर्यामभिति युगति गमन वे, तिहा
 साधुहूँ मतामाल अरु आचरहूँ सामायिक पामह कीयै हूँ सो अनुप-
 योग चपलतायुक्त प्रवृत्तै मो प्रथम अतीचार चाग्रिच दोष लागै ॥१॥
 दूसरा अनूपयुक्त भाषी अतीचार, मा जो माधु मदा, आचरक मामायिक
 पामहमें दाप भाषा बोलै तिहा भाषाभेद च्यार है, तिहा प्रथम सत्य
 भाषा जा जैमा हूँ तैमाडै कहै, प कमनेश न कहै मो सत्यभाषा । दूसरी
 अमत्यभाषा जा रट्टे रट्ट कहै मो असत्यभाषा ॥ २ ॥ तीनी मिश्र-
 भाषा जो रट्ट झठी कट्ट माची जैमै आच नगरमें दशका जन्मभया
 मो कहै मो मिश्रभाषा ॥३॥ चौथी अनुभवभाषा सो माची भी नहिं
 वृद्धी भी नही, जा लोकव्यवहार बोलणा, जो गाम आया रात्रि पडी
 मिमीका नाम कहणा, नगतपाल लिठमीधर देवदत्त अमर इत्यादि
 व्यवहारभाषा चौथी ॥४॥ तिहा साधु सदाकाल अरु आचरक मामायिक
 पामहमें प्रथम अरु चौथी ए दोनू भाषा बोलै, सो प्रणिधानयुक्त
 उपमार्गी जयगायुक्त बोलै । इहा निना उपयोग अशुद्ध बोले सो
 बना अतीचार ॥ २ ॥ तीना अनुपयुक्त एण्णा अतीचार, सो
 जा पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त बयालीदोष वचाप भिन्ना लेवै, पाच दोष
 वचाप कर आहार करै मा चाग्रिचाच है उससेती निपरीतपर्ये आ-
 लैवै मो तीना अतीचार इहा एण्णा शुद्धिमें ओर भी वस्तु पात्र

मिज्या मथारक वमती प्रमुस जो चारित्र्य उपगारी सत्र चीन निटाप
 लं तो आचार, मदीप लैणा मो रही अतीचार लागै । ए भी आचार
 माधु सरिदा, गृह्यस्यु मायायिक पोमह लीधे अपनी दशा माफक पाले,
 उनम अनुपयुक्त प्रवर्त्त सो तीजा ॥३॥ चोथा अनुपयुक्त आदान मोचन
 अतीचार, मो जो साधु मदाकाल श्रावक सामाईक पोमहम जो जा चीन
 लैणी फेर छोडणी मो चीज पूराक्त प्रणिधानयुक्त उपयोगी दूता, द्रष्टि
 पडिलेह्यपूर्वक लये इमीतर छोडै मो आचार है, अरु जो अनुपयुक्त
 अविधिमेती जादान मोचन करै सो चोथा अतीचार कहियै ॥४॥ पाचमा
 अनुपयुक्त परिष्ठापन अतीचार भा जो साधु सरिदा अरु श्रावक मायायिक
 पोमहम लघु नीति बडी नीति मल रूप उचार पामरण मेलनह मि-
 धाग पारिठावणीयादि परिठरगै लायक वस्तु मा निरचीर मूमिके ग्या-
 नमम द्रष्टि पडिलेहणीपूर्वक पुजन पुमार्चना करिके परठवे मा आचार
 है । उन सेती विपरीति प्रणिधानरहित अनुपयोगी दूतो परठवे मा
 पाचमा अतीचार है । इहा दोय पेहली समिति मायायिकम तो जरय माच
 वणी है, नहि तो मदाकाल जैनधर्मह ए दोनूमा उपयोग रचना ए
 जैनधर्ममा मूलमार्ग है ॥५॥ छठा अनुपयुक्त मनप्रवर्त्तना अतीचार मो
 साधु सरिदाले अरु श्रावक मायायिकादि धर्मरगणी अरु सर सर्व कुमिकल्प
 छोडिके मृत्राय चितनप्रमुस आलनयुक्त उपयोगी अफो मनहविर रवरै
 मो मनगुप्ति आचार, इन मेती विपरीत जातध्यान सेता विरल्पमे मनगोटा
 वै मो अतीचार छठा ॥६॥ सातमा अनुपयुक्त अकारण वचनातिचार सो जो
 साधु सरिदाले, अरु श्रावक मायायिक पोमहम प्राय मानव रहे । अरु सोले
 तो भी उपयोगी पूराक्त प्रणिधानयुक्त, अवस्य कारणयोगे निनाद्यायुक्त
 मरुत जगिह हितकारी शुद्ध भाव्ये । सुनन भमगु एमा उचन रहे मो
 व मनगुप्ति आचार, इनमेती विपरीत निष्कारण वैमै तैम सोले मो अती
 चार सातमा ॥७॥ आठमा अनुपयुक्त निष्कारण यागचपलता अतीचार
 सा जो साधु सरिदा, श्रावक पोमह मायायिकम दन्डियह गुप्ति करि
 राखै । अरु अरुय कारणयोगे उपयोगी प्रणिधानयुक्त आज्ञाप्रमुख जग
 पाभेती हस्तपादादिक आहुचन प्रसारणा करिमा उठेबैठे । सो ८

आचार, अरु जो निष्कारण अनुपयुक्त अतिविधिवर्क जो हाथ पाव
 रानि योग्यवस्तुता कर मो अतीचार आठमा जाणगा ॥२॥ ए ज
 पर्य रकष, प आदरणा नही । इहा गुप्तिवर्म सो उत्तमर्ग है अरु सा
 इयादिक पाचु सो अपवादधर्म, ए आठों धर्मकी माता कहावे । से
 धमरणी है सो ए जाह्युक्त सो आचार, अरु उम विना अतीचार
 इति चारिताचारके अष्ट अतीचार स्वरूप कथा ॥३॥

अथ तपाचार अतीचार लिखे है ।

तिहा तपना मूललक्षण ए है जो श्री विनेश्वरजीन वाक् प्र
 तपप्ररूपणा हींभी मो तप परम निजराका कारण है, इच्छा जो नि
 करिके मनमें गिलानपणो नही, मन हारै नही । अगिलान कत
 रहित विधानुष्ठान गगनानुष्ठान रहित अन्योन्या अनुष्ठान रहित ए
 इहलोकें आनीपिना हेतु मानु पूजा हेत, परलोकें देवादि पढहेतै इत्य
 आसयरहित, प्राधमानाधिकप्रायानि रहित, उन्साहमाहित समताम
 चित्तकी प्रमदता भई पण केवल कर्मक्षय निमित्त करै उनक शुद्ध
 करीय, वे तपन वारह भेद सो लिखे है । तिहा प्रथम तप अणमण
 जो जो उपवासादिक विविध प्रकारके जो है सो करिके इमीतरं बन
 खाउगा एमा मनमें विरूप करै । इहा ममारमें आहार मज्ञादि दो
 उडा कलक है, मव आरम्भका मूल है, 'छद् कायका हूँ जब ओटा
 उन एक रोटा' एमा अनादि शेष विनयचन सुणीके मैं जाण्या पै
 रे औडणीको तु नाचार है । उन मोक्षार्थी जीव अपनी शक्ति योग्य
 मित काल कपलाहार विविधयोग त्याग रूप पचकवाग करै । ए
 धारणा परिमाणकाल तोडी छद् सायह अभयदान हूया, अरु रसने
 दिक् मार्गी भयै । मरुल लन्वी प्रमुख आत्मीन सपदा का बाजि
 एमा मरुल मनकामना पूरण ममर्थ तप करिके जागलै पछिल्ले दि
 धिता अनुमोदना करै सो तपफल व्यर्थ करै, जयवा मनग्लान न
 उपनाम उडा कठिन भया क्व स्वीयाथा, एमा पश्चाताप करै । ए
 तपमें अतीचार है । इति अणमण तप अतीचार स्वरूप ॥ १ ॥

श्रीरू अठईस करलप्रमाण आहार निरोगी शुद्ध काया तदन इनके
 कमपेश आहार जो हूयें मो कोई रोग श्रोपवादिक्क प्रभाव नैय हन
 ह्य जाय तो नाचारी है ओर प्रमाण ३२ का है। अर एक कलक प्रमा
 मुरगीका डडा वै तैता ग्रामका करल है। अपनै मुबकी कलक प्रमा
 सुखमेती इतणा ग्रास लैया। उनकू भी करल प्रमाण ३३ काय प्रमा
 आहार का बचीशमा भाग ह्य सो भी करल कहीयै। अर एक कलक प्रमा
 आहार जो करै सो पूर्ण आहारी कहायै वे पूर्ण आहारके उच्योदरी
 करिके सुधा थकै सतोष धरिके दोय करल वा च्यार करल प्रमा कलक प्रमा
 खारै उनकू उणोदरी कहीयै, तिहा उणोदरी तप करिके करल प्रमा
 खरै बडे करल गिणतीके ग्यतर खायै, वा मग्न करल प्रमा कलक प्रमा
 बहुत चीरनी उसके करल गिणतीके ओठे अर करिके करल प्रमा
 आवै तुरति तपि होयै। अथवा ज्यादा स्वास बहूत करिके करल प्रमा
 के विचारै आहारप्रमाण तो बचीश करलका है, अर करिके करल प्रमा
 करल खायै तो मरैभी उणोदरी तप भया। म। इन करिके करल प्रमा
 मै मादक तृप्ती न खाई गई तिमका नही अर ऐस करिके करल प्रमा
 अथान दोष मेती ममानि न राखै, मा करल प्रमा अर करल प्रमा
 कथो ॥२॥ तीजो वृत्तिसचेपतप अतीचार मा न करिके करल प्रमा
 मत्तप तप मो विविध प्रकारके अभिग्रह तै। अर करिके करल प्रमा
 नियम धरै, वा आहारकी चीज होय तिनकर मन्ना गन्धे मो
 वृत्तिसचेपतप कहीयै, वे तप करिके मातु वादे करिके करल प्रमा
 थपना थपना अभिग्रहकी भी वार्ता गृहस्थके करिके करल प्रमा
 अहो साधने कैमै कैमै अभिग्रह लीयै है मा करिके करल प्रमा
 अपनी बुद्धि सेती अयसर भयै धरै अभिग्रह करिके करल प्रमा
 परिमाणादि नियम धरतो घरमै सकत गिह्य करिके करल प्रमा
 ग्रथिल हो, हरि चीज लायके भोचन करिके करल प्रमा जो तुम्है तो स्ने
 तो वृत्तिसचेप सो द्रव्य अधिर ह्य जाय, अर करिके करल प्रमा
 हमरू जूदी जूदी चीज देखी नही, हमरू करिके करल प्रमा
 द्रव्य गण्या जाय इसरास्ते हलफल करिके करल प्रमा
 देज्यो ऐमी शिचा करिके करल प्रमा — वे रसोद करिके करल प्रमा

निपुणता मती लक्षण मिरत्र नरिा हाग सयुक्त व्यजनादिक आर मीठी
 चीज प्रमुर आगतु मिलायत मत्र चीज सुम्वाद वे सो पिरमी, सो खार्ब
 मनमै चाण मत्र द्रव्यपिमाग शुद्ध है जरमै शुद्ध रागू ह, पिण ऐमी मना
 परद्व प्रथमम् ता तत मा मदिन मया ऐमा कृतिरन्व मो वृत्ति मत्तेप
 अतीचार टा ॥ २ ॥ चाद्या ग्यत्याग तप अतीचार मो जो रग छहू निगप
 मा विगार तत जर रम गधर रहत विपार है, एमा वृक्षर त्याग
 हाया पाछ साड शरणाविना गुरु आज्ञाविना निनियाता कर खाये,
 य मत्र ग्रन्थ द्रव्यातर मयाग मिलाय रहत तरे अग्रिमरकार करिबै
 न उादा म्याद आरि बमाही गुण कर, ऐसी चीज करि खाये एतलै
 निडाका रसगदि भिटावणैह ए तप कथिया मो तो नही भया सो अती
 चार बोधा ॥ ४ ॥ पाचना काय किरेस तप अतीचार मो जो कायकि
 ताम तप माधु मुनी पर लोच करारि, उपमै आतापना रहै, शीत महै ।
 डाम म ऊर इतर प्रमुरकै परामह सह, विरुटा मने विर दृड ध्यान कर
 विरुटा मने मिज्दाय कर ए तप साधु ता हरति है अर आरक क
 मामाधिक पोमह वा जाप नरकागाली मती पचपरमेष्टीनीसा करे काया-
 र्त्ता सै निहा उती शक्त बस्त्रादि लपेट जागैमै करिबै मत्र शरीर
 आरुति करिबै त्रिया करे वा गदि जमने वैठिकै जापादिक कर सा
 काय जग तप अतीचार ॥ ५ ॥ छद्म मलीनता तप अतीचार मा जो
 माधु मलीनता तप मटा अपन अगोपाग मररी गरै, विना कारण
 हलाय नही अर भावकी सामाधिक पोमह भै मा पूजापादि अमर
 अपना अग सररी विनय गुणयुक्त गरै । एतलै पात्रप्रमरण अर एम
 ग्रहण गले हाथे देनो आगोपाग मोटरादि न करै एर शुद्ध उपयोगी
 यागापाग मररी जयगापरैक विनयगुणयुक्त प्रवर्तन करै सो मलीनता तप
 रहैयै । निहा एमा तप करिबै युवाक्त दषण लगारै मो मलीनता तप
 अतीचार रहैयै । ७ अतीचार छद्म । इति साक्षतप पदविधिरे पद अतीचार
 रह अर अभ्यतरतप छद्म प्रकारमै जर छहही अतीचार मो लिखै है,
 निना प्रथम प्रायश्चित्ततप अतीचार मा जो साधु वा आरक अपनै प्रतमै
 दूषण लगा जाणै तत्र ज्ञानी गुरुपाम आलायण लेवै, तिहा आलोयण दोष
 ी है, एक म्बलपविषयी, म्बलपफालीन कोई नियम एक व्रतादिन

अनीचार जाणै तुरत गुरुक पूछै उनका प्रायश्चित्त लेवै । दूजी वहू निपयी
 गहत कालीन उमरगत दूषणकी उनमै जो एकादि नियमकै दूषणकी
 तो जो हाल स्याणा हूँ उहा पूछ लै, अर जव उमरनी नडी बडी आ
 कोयण लेवेक चाहै तव शुद्ध गुरु ज्ञानवत क्रियावत दोनू गुणयुक्त
 हूँ उनके पाम आलोचण लेवै कटापि दोनू गुणयुक्त न मिलै तो गृ
 धृत ज्ञानवत शुद्ध भापीपासत्था प्रमुख वे उमकै पाम लै, ए उत्कष्ट
 क्रियावत हँ पै मिद्वान्तक रहस्य न जाणै तो उमकै पाम लेवै नही, क-
 टा ज्ञानवत पामत्था भी न मिलै तो भी ए गुणयुक्त या एकगुणयुक्त ज-
 हा वै तहा शुद्ध प्ररूपकनी खोजी करै थोर गात्र दशजाँव, गृ खोनकर-
 नै अपनै अनिकै क्षेत्र सेती मातसँ जोजन तरु गुम्कँ खोनके, कालमती
 नार नार परमतक हूँ । ऐमै ग्वोजत ग्वोजत क्तापि आउग्या पूर्ण ह्वा
 तव मूया तोभी जाराधक कहीयै । तथा खोजतमै नरु जहा गुणवत मिलै
 उम गुरकै पाम आलोचण लेवे साधुपामत्था भी वे, अरु जानवान वे
 तो उसकी नार परमतक न मिल्या, तव कदाह खवर पाइ जो एक
 साधु बहत अर क्रियावत हता सो वह माधु काई पापरुमकै उदय
 मै पतित भयै तव इहा मेती दरदेशातर जायकँ रहै, वेप छोडिँ गृहस्थ
 भया हँ उमर नाम पञ्चाकडो थानर कहीयै मो फलार्ण उस गावमँ हँ
 पेमा सुणिकै प्रायश्चित्ती उहा जाय, उस पञ्चाकडेक प्रतिबोध देवै । मो
 महानुभाव तुम्ह तो मोटी पदवी रत्नप्रयीकी पाय करिकै छोड दीनी
 मो भला नही, तुम्ह भी क्या करो, उदय महाप्रलान है, उनके जोर
 मेती तुम्हारै परिणाम मिथल पमाड दीनी सो होनाग्रह ह्वा ही चाहै,
 तिम मेती अचतो चेतो, फेर पगक्रम फोरो, अब शुभ कर्मकँ उत्यकी
 अमाता पीछै हटणैका ममय भया दीसँ है, तिसते हमारा भी तुम्ह मेती
 आय सयोग मिलापना भया हँ, तिम वास्तै तुम्हकँ तो उहा ज्ञान
 आधार हँ, देवतै मै क्यू भूलिमँ पड हो उम वास्ते किरि गवरदार हो ।
 चारित्ररत्न अगीकार करो आत्माह तागे, आगँ भी कोई पतित होयकँ
 किरि जाग्रत भयै, मत्र कर्म खपायकँ मुक्ति सुगहू भनमान भयै उम
 वास्तै चारित्र लेगे नील मत करो, ऐसा सदुपदेश सुणिकै उसके परि-

गाम समर । ता चारित्र लिखायक प्रायश्चित्त लेख उमरुं पाममे । गृ करत
 न नागी कमा तप रुढ । भाडसाहेब गुह्य सेती यह गनपाखर कुं रामम
 र्मे उजाय शर । यह चाग्नि निफलक र्मे ही झठा लीया कोन
 मुग्ग, ता अरु माफक निरुह नही ता उलटा महापावी अधोरी वे
 ण्य ता ता भयंर ह टाम लग च्चाई है । तब ण्मी हस्किन करी
 उग भाग्य गरी, तब पीठ पद्धाकडेरु जितामदिरमै लं जाय उमरु
 गागार्थिन तशय पीठ वदना करी आलोयण लेख, पै अज्ञानी पाम
 न्य ता गृ गुरुजी गोर्नी करिके भी आलोयण लेख मो जैसे घालक
 ण्पी मानीक आग अवनं टीलमी पान रुढ, तप रुढ राखे नही लाय
 नय, तेम रायकभी गुरुं आग चमी गीति ह्ये निमर्गत नि कपटी होय
 करि तीन गाय मन पचन सायरी कह देवे, कड जाणती जातमे द्विपा
 न नय । उपर आलायणा र्हीय, अरु कड द्विपायक कया तो तचदत्री
 ह्या तप उमरु गुर्दी हव नही, र्मी विप्रिपूर्व माधु कने गुम्समीप
 मर पाप प्रग क र्दिया गुम्न मव प्रभ लीया, पीठे गुरु आगमक
 वाता हे मा रिचार । पापकम च्यार च्यार तरं लग हे । आकृष्टि १
 तप २ कल ३ प्रमा ४ । एम चतुविध पापमे कान प्रायश्चित्त लाय
 कह, ण्मी ठां करिके यधानेग्य प्रायश्चित्त तप गुरु दव, मा शिष्य
 प्रमन्न हा करि लेख । जो गुरुनीने मेरे उपर वडी महिर करी । मरुदमेम
 उद्वार किया हमरु प्रडा गुर्वीया र्नीया, शुद्ध उपाय बताया । ए गुरुका
 उपगार उन निमरे, ऐमीतर हपित चित्तमेती गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप
 लेख । पीठ गुरु उपदिष्ट फालके भीतर जो तप दिया है सो तप लेया
 शुद्ध पूरा कर पहचार, मा प्रायश्चित्त तपाचार र्हीय । अर जो गुरुदत्त
 प्रणालीका आर्दिने अपनी मति कल्पनापूर्वक कर । अथवा प्रतिगत
 फालगती अधिके फाल त्रिनाकारण लगाने, अथवा कमपेश करे । अथ
 वा प्रतिगत रात्रवेठि मर्मा करे । पचम अण्डटना करे, अथवा शय
 चित्तमती करे, वा फिरे ते राही आश्रवमेवना करे सो प्रायश्चित्त तप
 अतीचार र्हीय ॥१॥ वसरत त्रिनय तप अतीचार मो जो माधु धान-
 १ अपनी अपनी र्शा माफक जागममे आचार्य उवज्जाये इत्यादि

गुणवत्ता विनय, जो उद्वेग नमन अभ्युत्थानादि उचित भक्ति क्रियास्व
 मां आगममर्ली माफक करे मां विनय तपचार कहीय, और जो आगमो
 क्तिये कमेश या विपरीत करे अथवा अण्डटता वा दममे करे मां विनय
 तप अतीचार कहीयै ॥ २ ॥ तीजा वेयावच्च तप अतीचार, मां माधु
 श्रावक कू डुलगण चैत्य सघ इत्यादि जिनकू जिनकू जैमा जैमा
 वेयावच्चकरणा आगममें कृष्ण है उनका वेयावच्च करे, तिहा
 वेयावच्च सो रोगादिक निम उपजै उनका जो प्रतिकार विविध
 ओषध अगमर्दन पथ्यभक्तादि योगमें तत्पर भक्तिपूर्वक करे सो
 वेयावच्च तप कहीयै। आचार्यादिरका भयमेती का या वेया
 वच्चकी वखत कोई कार्य उदेशकर टल जाय, वा वेयावच्चम
 खोटाइ करे, अरु जो भक्तिहीन अण्डटता करे वा दममे करे
 वा ना करणा ओर से करावे सो वेयावच्च तप अतीचार कहीयै ॥ ३ ॥
 चौथा सिद्धायतप अतीचार कहे। मां जो माधुश्रावक अपनी अपनी
 योग्यता माफक श्रुतज्ञानका अभ्यास करे सो मिद्धाय कहावे। यह सिद्धाय
 पांच प्रकारकी है। वाचना १ पृच्छना २ परारत्तना ३ अनुप्रेक्षा ४ धर्मकथा ५
 तिहा प्रथम वाचना, सो जो श्रुतका पढणा वा पढावणा वाचना मिद्धाय
 प्रथम ॥ १ ॥ दूजी पृच्छना मिद्धाय, मां जो पढतमें भेदेह उपनै
 उनका शिष्यकी पूछना वा गूने शिष्य कहेना मा पृच्छना मिद्धाय
 दूजी ॥ २ ॥ तीजी परारत्तना मिद्धाय, मां जो पर्वपाठित श्रुतका
 गुणना वा गूने शिष्य की परारत्तना सुखनी प्रेरणा करणी सो परा
 रत्तना सिद्धाय कहीयै ॥ ३ ॥ चार्थी अनुप्रेक्षा मिद्धाय, मां जो
 पठित श्रुतके अर्थका चिंतनणा वा परस्पर साधु श्रावक मिलिके चर्चा
 करणी वा गुरु स्याद्वादसेली पूर्वक युक्तिकर शिष्यको निमन्त्रेह करे सो
 अनुप्रेक्षा मिद्धाय चौथी ॥ ४ ॥ पाचमी धर्मकथा मिद्धाय, सो जो
 राचिन्त जीव कं भावकरुणा पूर्वक धर्मोपदेश कहे धर्म पमावे सो
 धर्मकथा सिद्धाय रहीयै ॥ ५ ॥ इणै पाचू प्रकारकी सिद्धाय शिष्य
 वा गुरु अपनी दशा माफक यथागम करे मां मिद्धाय तप कहीयै।
 अरु शिष्य विनय महित हर्षित हूतो गुरु आशय अटकल करतौ अनु
 कूलपर्यै आसनस्थ प्रशान्त इत्यादि निधिपूर्वक वायणा लेवे

भी प्रमत्त चित्त मेती उसकी योग्यता माफक प्रमाद तजी के अगिलापणी
 रायणा देवे सो वाचना मिज्जाय दोनू कू ॥१॥ तथा पृच्छना सिज्जाय शिष्य
 पिनयादिगुणयुक्त आसनस्थ गुरु देखी आसय अनुकूल होय के पूछे,
 गुरु भी भावदया धर्मके धर्मरागसेती बहु उद्विगा ररच करिके स्याद्वा
 दर्शली अनुमरता ऐसा उत्तर दवे जो शिष्यके चित्तमा सदेह तुरत भिड
 चाये सो मिज्जाय तप दोनू कू ॥२॥ तथा परार्तना, जो शिष्य तीत्र
 उपयोगी हता पूर्वपठित गुण गुरु भी तीत्र उपयोगी बना सुखे । भूलचूक
 रहि देवे मो दोनू ह परार्तना सिज्जायतप कहिये ॥ ३ ॥ तथा अर्थ
 र्नी चर्ना शिष्य महाध्यायी और भी निपुणता माधू मिलिने, विविध
 युक्त जैनशेली पूर्वक करे । तिहा कर्नी चर्चा करत युक्तिपूर्वक निर्णय
 न हवे अरु कर्नी होवे तत्र गुण भी आगमानुकूल उपयोगी होयकर
 विशद रीत चर्चाका निर्णय कर देवे सो दोनू ह पूर्वोक्त अनुप्रेक्षा मि
 ज्जाय रहिये ॥ ४ ॥ तथा धर्मोपदेश सिज्जाय तो दोनू कू पूर्वोक्त
 विधिपूर्वक उपहार उद्विभेती देवे तिहा जा जापह उपदेश देवे की योग्यता
 हुवे तो आगम शली पूर्वक उपदेश देवे अर आगम शलीके नयनिचेप प्रमा
 ण सप्तभगी प्रमुखमे तथाविधि क्षयोपशम न हवे तत्र जो बहुश्रुत
 उपदेश देवे सो हर्षित विम्भय स्मेरमुख हतोसुखे मो धर्मकथा सिज्जाय
 तप कहिये ॥ ५ ॥ ए पाचू सिज्जाय उक्त विधिसेती विपरीत करे
 र्भमेती करे वा सिररोज निर्वाह न्याये तप करे वा अभिमान धरि करे
 गाररी असूया मेती करे वा मिताव गडगड कर पहुचावे वा
 अपनी रर माफक करे, यश अर्थी हयने करे मो जो सिज्जायतप अती-
 चार कहिये ॥ ६ ॥ तथा पाचमा ध्यानतप अतीचार सो धर्मध्यानके
 च्यारो पद ध्यावणा है । वै धर्मध्यान ध्यातते जब परिपूर्ण अप्रमत्तता
 उत्पट्टाणै पहुँचे तत्र आठमा गुण ठाणा पावे तिहा शुक्लध्यानका प्रथम
 पाद ध्यावे यू करत आगे बारमा गुण ठाणैकू हवे तत्र दुमरा शुक्लध्यानका
 पायी ध्यावे वे ध्यावते बारमा गुण ठाणा पूरा होय गहै तत्र च्यारू धनघाती क्षय
 हय जावे, तत्र केवलज्ञान पावे तेरमा गुणठाणा लाभै, पीछे आयुस्थिति
 माफक तेरमे गुणठाणै पहुँचे तिहा सकल कर्म क्षय करिके मुक्तिसुख पावे ए
 माधुकी ध्यानकी पद्धति, श्रामकू तो धर्मध्यान ध्यातयेकी योग्यता नहीं

है। ज वाग्यै मूलघाती च्यार कपाग उन्धगत गुरु है इम वास्तै रै
 जनित्र अशरगाणि नार भावना एरनिन शुभ ज्ञान स्व ध्यायै। भावना
 कर्म राई उचम जीवकी उपयोग की निमन्नामती क्यरीनता ह्यै तिन-
 मती धर्मध्यानकी समाप्ति ह्यै, मा नु म्यान्व पठिता अरुणात्य
 आनामा मयै नही पिण्ण मूर्याद्वयत्तय नार घन्धटाणि मरुता अनुभव
 द्या नारै न्यु सुधाररु भावनातन्व शुद्रापयागम धर्मध्यानकी भमाप्ति
 मन्त्ररूप धर्मध्यानगरीता अनुभव ह्यै, मुनिभावरु आम्वाड मात्र
 पारै। पिरा ध्यानपन्की पूर्णता पाय नही ए जा ध्यान ध्यानयागम
 ध्यानतप कहीयै अरु जो ध्यानम आर प्रिस्वयाग चपलतादि करै
 मा ध्यानतप जतीचार कहीयै ॥५॥ छट्टा त्यागाय अतीचार। तिहा
 त्यागतप ना दोष भू है। एक द्रव्याग त्मग भावत्याग। तिहा मा
 नारु मा श्रावरु अपना अपनी दशा माफक आहार उपधि तथा नय
 सिधि परिग्ररूप इन्द्रियमुद्रा तथा अवस्था विगेषे दहना भी त्याग
 रै वागिररै मो द्रव्यमती न्याग कहीयै। जरु नो विपर तप्या अरु
 स्याय प्रोपमानादि उनरा जो त्याग रै मो भावत्याग कया। वै ऐमी
 तरै निनागम न्यागतप क्यारै है अरु जो छती शक्ति त्याग न
 रै अविदे रै वा तत्र प्रतीतार न करै वा पाचमै जखडटता करै
 मा निदान रै मा त्यागतप जतीचार कहीयै ॥६॥ इति तपातीचार।

अरु तीर्याचाररै तीन जतीचार है मो लिखै है। तिहा तीर्या-
 चार मो जीवक मन वचन स्या ए तीनु योगरा सामध्ये शक्तिविगेष
 मो तीर्यै करारै। तिहा साधु तथा श्रावरु अपना गुणठाणा माफक
 अपनी अपनी दशा माफक जेमा वीषाड्याम ह्यै तैमा तैमा फल पारै,
 न माटे गुणठाणा योगठाण मयमस्थानक भेद पडै सो वीर्यकी प्रचलता
 मन्तार्मती दण्डा पड्या होता है। तिहा प्रथम काययोगमेती मय
 र्गगोमैअपनै अगरा बलतीर्यै फोरणैमैरामी नही करैतथा मनोयोगमती
 उन्डाह भाक्ति उमग प्यारबहुत धरतो करै, जरु वचनयोगमती धर्म
 प्रशमा बहुमानमेती करै। उनति उपमा द देकर बहुत जीवक
 करै। अपने धर्म प्राप्ति कौ सराहै, जो धन्य हमारा

श्री चित्त-रङ्गी के मार्गशीर्षी रम गृहनि मिली अत्र हमरु भव दृग्गता
 भव नरी अथादि विवरण याग गति रम करणीमै रीर्योहाम
 पात्र ग्ग पावाचारस प्रागधरु घोटै कालमै अचय लीला पामे,
 एता अतिरु अणाम प्रायाहाम गृहृत ने, तो घडी करणी मेती
 उवाता कल पाम अर प्रम करणी मै जो छती शक्ति काययोग आलम
 र प्राया कल न पात्रे ना कोई भक्तिविना भयादि कारणे र
 ए सायता र अगादगी करै, ना लालची अनुष्ठानादि वाद्या
 मन र ना कायायाग रियतपातीचार । तथा वचन योगे उन्नाह-
 तम मित्याय स्तनादि रै नहि । मद् मद् भाषा सती गृह
 नटकर भणारी गिनै रै तथा थोर कोई रम कार्य करता हूँ
 उनर अगता कृपा रगारै जा एह धर्मराम हँ प उडा मुरकल हँ देखी
 कर जानाया । तुम्हमै पूग पडैगा नही इत्यादि कहिकै ममर्थका भी उरसा
 हमग कर ना घमसाये करनेर रै, खडनचन कहै, जो ए रमकीया करी,
 प उडी तम्ती पात्र, गृहृत कठिन राम हँ, रैगा मो जानैगा, हमरु
 बीती हँ ना हमारा मन जाणै रै कोई महाई भी न भया, कीगहीन
 ग्याया नही, अत्र नया करीयै, हम किमरु कहिकै अधिकारी भयै तन
 मन हमरु करणा पड्या थोर क्या कहियै, ए धर्मराम करतै म ए
 अगकी मिथिठ हो गडै हँ, मो अगताड टिनाणै नही आई नही । ए
 मो वचन कहिकै गृहृत का चित्त भग करै । इत्यादि टीनता वचन
 ग्या हा ना वचनयोग रीर्योचारतप अतीचार । तथा मनोयोग मीटातो
 रै ना विना उरमाह करै, ए काम की रैठि कर उतरेगा ए काम हाय
 न लत तो भला हाता, नाइरु ए राम उटाया वा ए काम कोई जानै
 तो मै छोट देउ कीर्मातरु छुटै तो भला, ना काममै महिनत उडी हो
 यगी, द्रव्य बहत लगेगा ॥ क्या करीयै, विचार्या विना ध्यान करै । अत्र
 परणी मातमै पडैगे नही, वा ए तप त्रियादिक कठिन भइ अत्र फेर
 अगकर आदरणा इत्यादिक रिकल्प करै मो मनोयोग रियतपातीचार
 करीयै । इति वीर्याचारके तीन अतीचार स्वरूप । ए सर्व साधु आरक
 धमरै मर मीला एकमा चारीश ॥१२४॥ अतीचार विवरण कहा है ।

इति श्री मन्मथमूल द्वादशवारत्रतविररण समाप्तम् ।

पैमी विगत माफक टोप मिटायके त्रत पाले मो परम कल्याणमाला वरे ।
 वतित्री पटित उद्यातमागर गाणि विरचिताया वारे त्रत टीप सपूर्णा ।

॥ दाहा ॥

गत अठारे ऊपरे, वीते उप छरीश

भगणिर शुटि पचमि गुट, पूरण भड जगीश ॥ १ ॥

सुरमरिताके तट वमे, पाडलिपुर शुभस्थान,

निहा सुदर्शन भाधुवर, पाया कवलचान ॥ २ ॥

ब्रह्मचारि शिर मेहग, धलिभद्र गुणशाम

निग कोण्या प्रतिवृक्षणी, निणपुर राग्यु नाम ॥ ३ ॥

तिथ्य पुर माह शिरगामि, मोमच अमिशन,

दाता भोक्ता शुभमति, चातुर्वचन परधान ॥ ४ ॥

तसु सुत भद्रक त्रतरुचि, धमे दृमनिमान,

हमचन्द्र नाम निपुण हाटक मम गुणवान ॥ ५ ॥

उर्मकथा मुणिने भड, त्रतरुचि तर कहे माह,

लिख दीजे त्रतनी विगत विस्तरमे दम चाह ॥ ६ ॥

ममकित यु त्रत वारणी, विगत पुनी अतिचार,

वृद्धपरपर शास्त्र बहु, लिगि कीनी विस्तार ॥ ७ ॥

आगमजलधि उपार हे, सुक्ष मति नाना तुच्छ,

को निवह भाडा नदी, पररे भडी पुट ॥ ८ ॥

आगे गृहश्रुतन लिगि, विगति वात विशेष,

वात्र लिगि भाषा लिगु, उनमे कान विगेष ॥ ९ ॥

ता भी तसु आमय अगम जो विन पाय अशुद्ध,

लिग्विड मिच्छा दुक्कड, माखी गुरुचन वृद्ध ॥ १० ॥

अल्पमती आतान ह, जाणु न बहुत रहम्य,

कृपा करी मोपरि कृती, करजो शुद्ध अत्रय ॥ ११ ॥

विगत नून राग्री, लिप्यां यथामति योग,
 वाग्मि विद्विष जम्भ्याम करि, सरजो तसु परिभोग ॥१२॥
 दा प्रभा जन्तवा, जो पुग्गल परियट्ट,
 माधी पञ्चमा गये जनम मरण मघट्ट ॥ १३ ॥
 परमगिण् परसा ह, तसु जय करण उपाय
 रिगियन मात्र भद्र लयो, तौभी न चतो काय ॥ १४ ॥
 न मर ता एह तुम रहुरि न जाँ हत्य,
 ॥ दोतो एतमे चतुर ! निसुणी श्रुत परमत्य ॥ १५ ॥
 दिदिन गरि मिगमणि, नागरप्रदित पाय;
 ॥ पुण्यमागर खरिद्र ने, तपगळपति सुखदाय ॥ १६ ॥
 तसु पाणा मिर वाग्ता वारता विपय क्पाय,
 श्रुतप्रागे उपगारी व्ह, श्री ज्ञान सागर उत्रनाय ॥ १७ ॥
 तामु विप्य पूरव तणा तीरथ भटख काज,
 श्रिय प्रयाण शुभ दिन घडी शुद्ध शत्रुने सु माज ॥ १८ ॥
 तीरथ परमत अपिया, पटणा नयर सुठाय
 परमानेंद भया वदता, शठ मुनीसर पाय ॥ १९ ॥
 दिन केताडर विहा गदि, लिगयो सुप्रत विस्तार,
 वज्रोत्कीर्णमणिमूत परि, रहु श्रुतेक उपगार ॥ २० ॥
 इह विधि जो प्रत धारणे, वारणे विपयकपाय ।
 विलम ज्ञान उद्योगमय, आनन्दधन सुखदाय ॥ २१ ॥



